गृहलक्ष्मी

BHARTI PRESS
CALCUTTA

स्वर्गवासी नाट्याचार्य बाबू गिरिशचन्द्र घोष कृत

वा

आदर्श गृहिणी

अनुवादक

श्रीयुत पण्डित वासुदेव मिश्र

("भारतमित्र" के संयुक्त सम्पादक)

प्रथम संस्करण

संवत् १९८०

मूल्य १॥)
सजिल्द २)

निवेदन

यह नाटक स्वर्गवासी गिरिशचन्द्र घोषकी अन्तिम कृति है। मृत्युके कुछ महीने पहले उन्होंने इसे लिखना प्रारम्भ किया था; चार अङ्क लिखनेके बाद उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और वे इसे पूरा न कर सके। उनके देहान्तके उपरान्त उनके फुफेरे भाई श्रीयुक्त देवेन्द्रनाथ बसुने पाँचवाँ अङ्क लिखकर इसे पूरा किया। अभिनय होनेपर इसकी खूब प्रशंसा हुई। इस नाटकके कई संस्करण हो चुके है।

यह नाटक सामाजिक है। चरित्र-चित्रणमे स्वाभाविकता है जो गिरिश बाबूको लेखनीकी विशिष्टता है। किस प्रकार धूर्त मायावी अपना मायाजाल फैलाकर स्वार्थसाधन करते है, किस प्रकार मनुष्य संगदोषसे हिताहितज्ञानशून्य हो जाता है, धन-लिप्सा किस प्रकार मनुष्यको राक्षस बना देती है, ईर्ष्या-द्वेष और कलहसे हरा-भरा घर किस प्रकार उजड़ जाता है,यह इस नाटकमें बड़ी खूबीसे दिखाया गया है। साथ ही स्नेह, सरलता, उदारता, क्षमाशीलता, धीरता और शान्तिका निर्मल मनोरम चित्र भी है। प्रत्येक चरित्र लेखकके लोक-चरित्रके गम्भीर ज्ञानका द्योतक है। नाटक बड़ा ही शिक्षाप्रद है।

इस नाटककी भाषा ठेठ बोल-चालकी बँगला है। अनुवाद

भी यथासम्भव बोल-चालकी भाषामें ही करनेका प्रयत्न किया गया है। मालूम नहीं, इसमें कहाँतक सफलता हुई है।

प्रूफ-संशोधनमें कितनी ही भूलें रह गयी हैं। संशोधकजीने एक जगह संशोधन क्या किया है, अर्थका अनर्थ कर डाला है। १०८ वें पृष्ठपर २१-२२ वीं पंक्तियोंमें जहाँ होना चाहिये था, "माँ जीती रहतीं तो इतना स्नेह करतीं कि नहीं सन्देह है," वहाँ कर दिया गया है—"माँ जीती रहतीं तो इतना स्नेह करतीं कि जिसका ठिकाना नहीं।" पाठक कृपाकर इस भद्दी भूलको सुधार लें। इसके सिवा पाठक १६० वें पृष्ठपर १३वीं पंक्तिमें "नीरद भैयासे बदला लूं" के स्थानपर "नीरद भैयाको ठीक करूँ", २२३ वें पृष्ठपर २२ वीं पंक्तिमें "तू कुलमें" के स्थानपर "तू नीच कुलमें", २५२ वें पृष्ठपर १६ वीं पंक्तिमें "वह मेरा" के स्थानपर "वह तेरा", तथा ८७ वें पृष्ठपर पहली पंक्तिमें "दिमाग खराब हो गया" के स्थानपर "माथा गरम हो गया" पढ़ें।

अन्तमें हिन्दीके लब्धप्रतिष्ठ लेखक और कवि पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदीको अनेक धन्यवाद हैं, जिन्होंने इस नाटकके गीतोंका सुन्दर भावानुवाद कर देनेकी कृपा की है।

कलकत्ता,
शारदीय नवरात्र
सं० १९८० वि०।

वासुदेव मिश्र।

चरित्र

(पुरुष)

उपेन्द्रनाथ	धनाढ्य व्यक्ति
शैलेन्द्रनाथ	उपेन्द्रका भाई
नीरद	उपेन्द्रका पुत्र
मन्मथ	उपेन्द्रकी सालीका लड़का
वैद्यनाथ	उपेन्द्रका मित्र
निताई	उपेन्द्रका मित्र (हाईकोर्टका वकील)
हीरू घोषाल	उपेन्द्रका पड़ोसी
भैरवा, श्यामा	उपेन्द्रके नौकर
शिवू	एटर्नी
नकुलानन्द	अवधूत
शरत्	उच्छृङ्खल युवक
सतीश, प्रमथ, विहारी	शरत के मित्र

डाक्टर, उपेन्द्र बाबूके घरका जमादार और दो दरवान, पुलिस इन्सपेक्टर, दारोगा, कानस्टेबल, रजिस्ट्रार और उसके दफ्तरके अमले, एक भला मानस, पावनेदार, अदालतका वेलिफ, चपरासी वगैरह ।

(स्त्री)
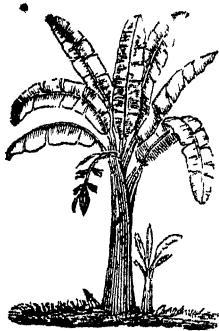
विरजा	उपेन्द्रकी विधवा भावज
तरङ्गिणी	उपेन्द्रकी स्त्री
सरोजिनी	शैलेन्द्रकी स्त्री
मणि	कीर्त्तनवाली
फूली	मणिकी लड़की
कुमुदिनी	वेश्या

कुमुदिनीकी माँ, वेश्या आदि

संयोगस्थल—कलकत्ता ।

चित्र-सूची

भारती पुस्तकमाला

स्थायी ग्राहकोंके लिये नियम

१—प्रत्येक व्यक्ति ॥) आने प्रवेश-शुल्क जमाकर इस मालाका स्थायी ग्राहक बन सकता है।

२—स्थायी ग्राहकोंको मालाकी प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक विना डाक-खर्च मिल सकेगी।

३—पूर्व प्रकाशित पुस्तकोंको लेने न लेनेका पूर्ण अधिकार स्थायी ग्राहकोंको होगा, पर नव प्रकाशित पुस्तकोंको उन्हें अवश्य लेना होगा।

४—पुस्तक प्रकाशित होते ही उसकी सूचना स्थायी ग्राहकोंके पास भेज दी जाती है। इसके बाद पुस्तक वी० पी० द्वारा सेवामें भेजी जाती है। जो ग्राहक वी० पी० नहीं छुड़ाते, उनका नाम स्थायी ग्राहकोंकी श्रेणीसे काट दिया जाता है।

५—यदि उन्होंने वी० पी० न छुड़ानेका कोई यथेष्ट कारण बतलाया और वी० पी० खर्च, दोनों बारका, देना स्वीकार किया, तो उनका नाम ग्राहक-श्रेणीमें पुनः लिख लिया जाता है।

मालाकी विशेषता

१—सभी विषयोंपर सुयोग्य लेखकों द्वारा पुस्तकें लिखाई जाती हैं।

२—वर्त्तमान समयके उपयोगी विषयोंपर अधिक ध्यान दिया जाता है।

३—मौलिक पुस्तकें ही प्रकाशित करनेकी अधिक चेष्टा की जाती है।

४—पुस्तकोंको सुलभ और सर्वोपयोगी बनानेके लिये कमसे कम मूल्य रखनेका प्रयत्न किया जाता है।

५—गम्भीर और रुचिकर विषय ही मालाको सुशोभित करते हैं।

६—स्थायी साहित्यके प्रकाशनका ही उद्योग किया जाता है।

ग्राहकोंको सुभीता

स्वर्गवासी नाट्याचार्य
बाबू गिरिशचन्द्र घोष

(संक्षिप्त जीवनी)

कलकत्ता, बागबाजार, बसुपाड़ेके एक प्रतिष्ठित कायस्थ-वंशमें गिरिशचन्द्रका जन्म हुआ था। इनके पिता एक प्रसिद्ध बुक-कीपर थे। गिरिशचन्द्र पिता-माताके अत्यन्त प्रिय थे। पाठशालाकी पढ़ाई समाप्त करनेपर सात वर्षकी उम्रमें ये अंग्रेजी स्कूलमें भर्त्ती किये गये। जब आठ वर्षके हुए, इनके बड़े भाईका देहान्त हो गया। इसके तीन वर्ष बाद इनकी माताकी भी मृत्यु हो गयी। जब गिरिशचन्द्र चौदह वर्षके थे, पिता भी परलोकगामी हुए। चौदह वर्षकी अवस्थामें ही गिरिशचन्द्र अभिभावक-शून्य हो गये। सिरपर रह गयी एक बड़ी बहन। उसके ये अत्यन्त प्रिय थे। अब इनका नियंत्रण करनेवाला कोई नहीं रहा। इस प्रकार अभिभावक-हीन होनेपर एन्ट्रेन्स तक पढ़कर सत्रह वर्षकी अवस्थामे ही इन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा। उस समय ये अपने मित्रोंकी प्रेरणासे घरपर ही अध्ययन करने लगे। पुस्तकोंको ही इन्होंने अपना साथी बना लिया। प्रायः चार वर्ष तक इन्होंने बड़ी एकाग्रता और परिश्रमसे अध्ययन किया। "कलकत्ता पब्लिक

लाइब्रेरी"के ये सदस्य हो गये थे, उससे इन्होंने खूब लाभ उठाया। इस अध्ययनसे अंग्रेजी साहित्यमें इनकी विशेष गति हो गयी। यह अध्ययन-क्रम इनका अन्ततक बना रहा।

इन्हें लड़कपनसे ही कविता और गाना सुननेका शौक था। जहाँ-कहीं यात्रा या कवि-संग्राम होता, बालक गिरिशचन्द्र वहाँ पहुच जाते और ध्यान लगा कर सब सुनते। यहीसे गिरिशचन्द्रके हृदयमे काव्य-रसके विकासका उपक्रम हुआ, कवि होनेकी वासना अङ्कुरित हुई। एक जगह सुप्रसिद्ध कवि ईश्वरचन्द्र गुप्तका बडे समारोहसे जनता द्वारा स्वागत होते देख, बालक गिरिशचन्द्रके हृदयमे कवि होनेकी वासना अत्यन्त प्रबल हो उठी। ये कविवर ईश्वरचन्द्रके 'प्रभाकर' पत्रके ग्राहक हो गये और उन्हींके आदर्शपर कविता बनाने लगे। ये कविता बना कर अपने मित्रोंको सुनाते और बाद फाड़ डालते थे। एक सभामे वंगीय-साहित्य-सम्मेलन के सभापति प्रसिद्ध नाटककार नाट्याचार्य अमृतलाल बसुने कहा था, "गिरिशचन्द्र बाबूने जो कविताएं और गीत बनाकर नष्ट कर डाले, उन्हें यदि हमलोग बचाये रखते तो हमलोग कभीके कवि हो गये होते।" घरपर अध्ययन करते समय ही गिरिशचन्द्र घोष प्रसिद्ध अंगरेज़-कवियोंकी कविताओंका अनुवाद करने लगे थे।

२० वर्षकी अवस्थामे गिरिश बाबू ऐटकिन्सन टिलटन कम्पनीके आफिसमें एप्रेन्टिस हुए। कुछ दिनों बाद अरजेल्सी सिलिजी कम्पनीके आफिसमें सहकारी कैशियर नियुक्त हुए।

उसके बाद और भी कई आफिसोंमें इन्होंने बुक-कीपरका काम किया। हिसाब-किताबके काममें गिरिश बाबू विशेष दक्ष थे।

२३ वर्षकी अवस्थामे गिरिश बाबूने अपने कई मित्रोंके सहयोगसे एक शौकिया यात्रा-मण्डली स्थापित की। उन दिनों पाइकपाड़ेके प्रसिद्ध ज़मीन्दार घरानेमें रत्नावली, शर्मिष्ठा आदि नाटकोंके अभिनय हुआ करते थे। इन अभिनयोंके टिकट बड़ी कठिनाईसे मिलते थे। जो किसी प्रकार टिकट पा जाते, वे अपनेको सौभाग्यशाली समझते। युवक गिरिशचन्द्रको यहाँका अभिनय देखनेकी उतनी लालसा नहीं थी, जितनी वैसी नाटक-मण्डली बनानेकी। अपनी इच्छाको कार्यान्वित करनेका ये अवसर ढूंढ़ने लगे। उक्त यात्रा-दलके संगठनसे इनकी इच्छा-पूर्त्तिका उपाय हुआ। गिरिश बाबू स्वर्गीय नगेन्द्रनाथ बनर्जी, श्री बा० धर्मदास सूर आदि मित्रोंकी सहयोगितासे बाग बाजारमें, बाबू अरुणचन्द्र हालदारके घर "सधवार एकादशी" नाटक खेलनेका आयोजन करने लगे। इस मण्डलीके शिक्षक और प्रधान गिरिश बाबू ही बनाये गये। जिस समय मण्डली अभिनयकी तैयारी कर रही थी, उसी समय सुप्रसिद्ध अभिनेता नटकुलशेखर अर्द्धेन्दु-शेखर मुस्तफी इस मण्डलीमें सम्मिलित हुए।

सन् १८६६ के अक्तूबर महीनेमें बाग बाजारके प्राणकृष्ण हालदारके घर "सधवार एकादशी" नाटकका पहला अभिनय हुआ। इस नाटकमें गिरिश बाबूने "नीमचाँद"का पार्ट किया था। नीमचाँदका पार्ट ऐसा-वैसा पार्ट नहीं है, तरह-तरहकी अंगरेज़ी

कविताओंकी आवृत्ति करनेका अभ्यास होना चाहिये। इसलिये उक्त-पार्ट साधारण अभिनेता द्वारा किया जाना असम्भव समझा जाता था; पर गिरिश बाबूने रंग-मञ्चपर उन अंगरेजी कविताओंकी आवृत्ति जिस खूबीसे की, उससे दर्शकोंके आनन्द और साथ ही आश्चर्यकी सीमा न रही।

"सधवार एकादशी"के सात अभिनय हुए, जिनमें चौथा विशेष उल्लेख योग्य है। दीवान रामप्रसाद मित्रके भवनमे यह अभिनय हुआ था। नगरके गण्य-मान्य विद्वान् लोग उपस्थित थे। ग्रन्थ-कर्त्ता स्वनामधन्य राय दीनबन्धु मित्र भी निमंत्रित होकर पधारे थे। उपस्थित सज्जनोने अभिनयकी खूब प्रशंसा की। स्वयं नाटककार दीनबन्धु बाबू गिरिशचन्द्रकी नाट्य-कला-कुशलता देख मुग्ध हो गये। बोले—"तुम्हारे विना यह अभिनय नहीं हो सकता, "नीमचाँद" मानो तुम्हारे ही लिये लिखा गया था।"

कलकत्ता हाईकोर्टके भूतपूर्व जज श्रीयुत शारदाचरण मित्रने अभिनय देखकर वंकिमचन्द्रके 'वंगदर्शन'मे लिखा था—"नीमचाँदका अभिनय देख, मैं आनन्दमें निमग्न हो गया था। * * * उस रातके नीमचाँदको मैं कभी नहीं भूलनेका। अभिनय-निपुणताके लिये गिरिशपर मेरी बड़ी श्रद्धा हुई। शीघ्र ही गिरिशसे मेरा परिचय हुआ। गिरिश बाबू अब मेरे श्रद्धेय मित्र है।"

"सधवार एकादशीमे" इस प्रकार सफलता होने पर उक्त मण्डली दीनबन्धु बाबूके "लीलावती" नाटकके अभिनयकी तैयारी करने लगी। ऐसे ही समय मण्डलीने सुना कि, सुप्र-

सिद्ध औपन्यासिक वंकिमचन्द्र, और "साधारणी" पत्रिकाके सम्पादक आचार्य अक्षयचन्द्र सरकारके तत्वावधानमें चूंचड़ेमें कुछ काट-छाँटकर "लीलावती" नाटक खेला गया है। गिरिश बाबूने कहा कि, "हम लोग बिना कुछ कांट-छाँट और परिवर्त्तन किये 'लीलावती'का अभिनय करेंगे। यही नहीं, अभिनयमें भी हमे बाजी मारनी होगी।" बस, धूम-धामसे 'रिहर्सल' होनेके बाद श्यामबाजारमें श्रीयुत राजेन्द्रनाथ पालके मकानमें स्थायी रंगमञ्च बना। लीलावतीं नाटकका प्रथम अभिनय बड़े समारोहसे हुआ। उस रातको बहुतसे गण्यमान्य सज्जनोंके अतिरिक्त स्वयं ग्रन्थकार दीनबन्धु बाबू भी उपस्थित थे। गिरिश बाबूने ललितका पार्ट किया था। दीनबन्धु बाबू अभिनय देखकर इतने मुग्ध हुए कि, अभिनय शेष होनेपर बड़ी व्यग्रतासे स्टेजके अन्दर जाकर बोले, "वंकिमको लिखूंगा कि, तुम मात हो गये"। गिरिश बाबूसे बोले—"मेरी कविता इस तरह पढ़ी जा सकती है, यह मैं नहीं जानता था। Take this compliment at least." कहते हैं, दीनबन्धु बाबूकी लम्बी कविताओंकी आवृत्ति जिस ढंगसे गिरिश बाबूने की थी, वह दूसरेके लिये असम्भव थी।

इस प्रकार 'सधवार एकादशी' और लीलावतीका अभिनय कर उक्त मण्डलीने खूब ख्याति प्राप्त की। बाद दर्शकोंकी इतनी भीड़ होने लगी कि, बहुतोंको स्थानाभावके कारण निराश हो कर लौट जाना पड़ता। इससे "फ्री टिकट" वितरणकी व्यवस्था की गयी। पर टिकटकी इतनी माँग होने लगी कि, मण्डलीको नियम बनाना

पड़ा कि, जिस-तिसको टिकट नहीं दिया जायगा, जो लोग अभि-
नय समझ सकते है, उन्हींको टिकट दिया जायगा। इसपर भी
बहुतेरे अपनी उपयुक्तताका प्रमाण-पत्र लेकर पहुचने लगे! इधर
दूने उत्साहसे मंडली दीनबन्धु बाबूके प्रसिद्ध नाटक 'नीलदर्पण'-
का 'रिहर्सल' करने लगी। रिहर्सल समाप्त होनेपर दर्शकोंकी
उत्सुकता देखकर मण्डलीने "नेशनल थियेटर" नाम रख कर टिकट
बेचनेका प्रस्ताव किया। इस प्रस्तावपर मण्डलीके अभिनय-
शिक्षक गिरिश बाबूने अपनी असम्मति प्रकट की। कहा कि,
"हमारे पास अभी ऐसे सीन, पोशाक तथा दूसरी चीजे नहीं है कि,
हम नेशनल थियेटर नाम रखकर टिकट बेच कर सर्वसाधारणमे
प्रकट हो सके।" पर मण्डलीवालोंने अपने शिक्षा-गुरुकी बात
नहीं मानी। इसपर स्वाधीन-चेता गिरिश बाबूने तुरत मण्डलीसे
सम्बन्ध त्याग दिया। इस मण्डलीने जोड़ासाँको, मधुसूदन
सान्यालके मकानमे (जहाँ आजकल घड़ीवाला मकान है) १८७१
ई० की ७ वीं दिसम्बरको 'नीलदर्पण' पहले पहल खेला। इसके
पहलेसे ही गिरिश बाबू जान एटकिन्सन कम्पनीके आफिसमे
७५) वेतनपर सहकारी बुक-कीपरका काम कर रहे थे। कई
नाटकोंका अभिनय करने बाद मण्डलीने माइकेल मधुसूदन दत्तके
'कृष्णकुमारी' नाटकको अभिनयके लिये चुना। इसमे भीमसिंहका
पार्ट करनेके लिये गिरिश बाबूकी आवश्यकता हुई। अन्तको मण्ड-
लीवालोंने गिरिश बाबूको जा पकड़ा। अपने बाल्य बन्धुओंके अनु-
रोधकी ये उपेक्षा न कर सके और अवैतनिक (Amateur) रूपसे

मण्डलीमें सम्मिलित हुए। इस प्रकार ये आफिस और थियेटर, दोनों का काम चलाने लगे। गिरिश बाबूके अपना नाम हैंडबिलमें देनेमें राजी न होने पर इस प्रकार लिखा गया, "भीम सिंह—A distinguished Amateur" (अर्थात् भीमसिंहका अभिनय एक प्रसिद्ध शौकिया अभिनेता करेंगे)। 'कृष्णाकुमारी' अभिनयमे रानी भवानीके प्रपौत्र महाराजा चन्द्रनाथने स्वयं अपनी पोशाक पहनाकर गिरिशचन्द्रको "भीम सिंह" सजाया था। यह सम्मान कोई साधारण नहीं था। नेशनल थियेटरमे खूब आमदनी होने लगी। सुप्रबन्धके लिये गिरिश बाबू, "अमृतबाजार पत्रिका" के सुप्रसिद्ध सम्पादक स्वनामधन्य शिशिरकुमार घोष और श्रीयुत देवेन्द्रनाथ बनर्जी डाइरेक्टर नियुक्त हुए। सुव्यवस्था होनेपर भी सदस्योंके परस्पर विरोधके कारण दो दल हो गये। दोनों दल स्वतन्त्र-रूपसे भिन्न-भिन्न स्थानोंमे अभिनय करने लगे।

कुछ ही दिनों बाद दोनो मण्डलियाँ मिल गयी। बड़ासा पक्का स्टेज भी बन गया, जिसका नाम "ग्रेट नेशनल थियेटर" रखा गया। गिरिश बाबू पहले इस मण्डलीमें नहीं थे ; पर बादको मण्डलीवालोंके विशेष अनुरोध करनेपर ये शौकिया तौरपर बीच-बीचमे अभिनय करने लगे। इस समय इन्होंने बंकिम बाबूकी "मृणालिनी" को नाटकाकारमे परिवर्त्तित किया और माउसी, चेरिटेबल डिस्पेन्सरी, हाग ऐण्ड बुल आदि कई छोटे छोटे प्रहसन, अभिनयके लिये, लिखे।

इसी समय होमियोपैथिक चिकित्साकी ओर इनका झुकाव

हुआ। प्रसिद्ध चिकित्सकोंके ग्रन्थोंका अध्ययन कर अड़ोसी-पड़ोसी और दीन-दरिद्रोंकी बिना मूल्य चिकित्सा करने लगे। इसमें इन्हें खूब यश प्राप्त हुआ। बीचमें इन्होंने चिकित्सा बन्द कर दी थी। पर मृत्युके चार-पाँच साल पहले इन्होंने फिर चिकित्सा प्रारम्भ कर दी और अन्ततक करते रहे। बिना मूल्य औषधि देते थे। दरिद्र असमर्थोंके पथ्यकी भी व्यवस्था कर देते थे। इनकी चिकित्सासे असंख्य मनुष्योंने लाभ उठाया।

आफिसके बड़े साहब मि० ऐटकिन्सन गिरिश बाबूको बहुत चाहते थे। उनके विलायत चले जाने पर छोटे साहबसे कहा-सुनी हो जानेसे गिरिश बाबूने वहाँका काम छोड़ दिया और "अमृत बाज़ार पत्रिका"के सम्पादक शिशिरकुमार घोष आदि देश-भक्तो द्वारा स्थापित इण्डियन लीगमें हेड-क्लर्कके पदपर नियुक्त हुए। उस समय कलकत्तेमें ब्रिटिश इण्डियन एसोशियेशन प्रभावशाली राजनीतिक संख्या थी। वह जमीदारों और बड़े आदमियोंकी थी और उन्हींके हिताहितका उसे खयाल रहता था। छोटे लाट सर रिचर्ड टेम्पलके स्वायत्त-शासन-प्रथा प्रवर्तित करनेपर एसोशियेशनने उसके विरुद्ध आन्दोलन किया। उस समय लीगने मध्यम श्रेणीके प्रतिनिधिरूपसे प्रशंसनीय कार्य्य किया था। इस बीचमें ग्रेट नेशनल थियेटरके मालिक मण्डलीसे अलग हो गये और उन्होंने थियेटर मण्डलीवालोंको किरायेपर दे दिया। गिरिश बाबू अध्यक्ष बनाये गये। इस समय इन्होंने मेघनादवध, पलाशीर युद्ध, विषवृक्ष, दुर्गेशनन्दिनी आदि प्रसिद्ध काव्यों और उपन्यासोंको

नाटकाकारमें परिवर्तित किया तथा आगमनी, अकालबोधन, दोल-लीला आदि संगीत नाटकोंकी रचना की। 'मेघनादमें' इनका मेघनाद और राम, 'पलाशीर युद्धमे' क्लाइव, 'विषवृक्षमें' नगेन्द्र-नाथ, 'दुर्गेशनन्दिनीमे' जगत् सिंह, 'मृणालिनीमे' पशुपतिका पार्ट देखकर लोग मुग्ध हो गये थे। मेघनाद और राम, ये दो पर-स्पर बिरोधी पार्ट एक व्यक्ति द्वारा समान रूपसे उत्कृष्ट होना अभिनय-कुशलताकी पराकाष्ठा है। बँगलाके सुप्रसिद्ध लेखक और आलोचक पं० इन्द्रनाथ बनर्जी गिरिश बाबूके नाट्य-कौशलको देख-कर मुग्ध हो गये थे और उन्होंने "साधारणी" पत्रिकामे लिखा था, "गिरिशकी अपेक्षा किसी देशमे 'गैरिक' अधिक क्षमताशाली था, यह विश्वास नही होता।"

उन्ही दिनो इनकी स्त्रीका देहान्त हो गया। ये इस शोकसे ऐसे विह्वल हो गये कि, सब कामोंसे उदासीन हो गये। इस उदासीनतासे इनकी कई रचनाएँ और पुस्तके नष्ट हो गयीं। कुछ दिनो बाद ये फ्राइबार्जार कम्पनीके बुक-कीपर होकर भागलपुर चले गये। वहाँ इन्होने कई कविताएँ लिखी, जिनमे "हल्दीघाटीका :युद्ध" कविता इतनी सुन्दर हुई थी कि, आचार्य अक्षयचन्द्रने अपनी पत्रिकामे उसे उद्धृत कर लिखा था—"ऐसी गम्भीर-शोकपूर्ण कविता वंगभाषामे विरल हैं।"

भागलपुरसे लौटकर ये पार्कर कम्पनीके आफिसमे १५०) वेतनपर बुक-कीपर हुए। इसके कुछ दिन बाद ग्रेट नेशनल थियेटर के मालिक प्रतापचन्द जौहरी हुए। इनके विशेष अनुरोधपर

गिरिश बाबू थियेटरके मैनेजर हो गये। कम्पनीकी नौकरी इन्होंने छोड़ दी। नेशनल थियेटरमे यही पहले पहल नौकरी की। यहाँ इनके रचे मायातरु, मोहिनी-प्रतिमा, अलादीन, आनन्द रहो, रावणवध, सीता-वनवास, राम-वनवास, पाण्डवोंका अज्ञात वास, अभिमन्यु वध, सीताहरण, सीताविवाह, लक्ष्मण-वर्जन, मलिनमाला, भोटमगल, ब्रजबिहार आदि नाटको और संगीत-नाटकोके अभिनय हुए। रावणवध गिरिश बाबूकी पहली रचना है। यही गिरिश बाबूने सुप्रसिद्ध रमेशचन्द्र दत्तके प्रसिद्ध उपन्यास "माधवीकंकणको" नाटक रूप दिया और इसमे इन्होंने क्रमशः भिन्न भिन्न सात पार्टकर अपने अभिनय-कौशलकी पराकाष्ठा दिखायी। कुछ दिनों बाद अभिनेताओ और अभिनेत्रियोकी वेतन-वृद्धिके सम्बन्धमे जौहरीजीसे मत-विरोध हो जानेसे गिरिश बाबू नेशनल थियेटरसे अलग हो गये।

इसके बाद गिरिश बाबूने बाबू अमृत लाल बसु,* बाबू अमृतलाल

---

* प्राचीन नाट्यरथियोंमें ये ही जीवित हैं। इन्होंने कितने ही उत्तम नाटक और प्रहसन लिखे है। इनके प्रहसन समाजमें हलचल मचा देते थे। हास्यरसका अभिनय करनेमें ये अद्वितीय है। हमने इन्हे गिरिश बाबूके प्रसिद्ध सामाजिक नाटकमें क्रूरताकी मूर्त्ति 'रमेशका' पार्ट करते भी देखा है। इनका अभिनय इतना सुन्दर और स्वाभाविक होता है, जो देखते ही बनता है। साहित्यिकसमाजमें ये विशेष सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते हैं। बंगीय साहित्य सम्मेलनकी साहित्य-शाखाके ये सभापति हो चुके हैं। ये बहु-अधीत विद्वान् हैं। इनका ग्रन्थ संग्रह अमूल्य है।

मित्र * प्रभृति शिष्योंको सम्मिलित कर एक नयी मण्डली संगठित की और कलकत्ते के एक मारवाड़ी धनी सेठ गुरुमुख रायसे १८८३ में, ६८ न० बीडन स्ट्रीटमे, जहाँ आजकल मनमोहन थियेटर हैं, एक नाट्यशाला स्थापित करवायी। इस नाट्यशालाका नाम स्टार थियेटर रखा गया। इस थियेटरमे पहले पहल गिरिश बाबूके रचे दक्षयज्ञ, नल-दमयन्ती, ध्रुवचरित्र, आदि नाटकोंके अभिनय हुए। इस समय गिरिश बाबूने अपने बुद्धि-बलसे नाट्यशालाका विशेष उत्कर्ष साधन किया। आपने कई नयी उद्भावनाएं कीं, जैसे दक्षयज्ञमे दश महाविद्याओंका आविर्भाव, नलदमयन्तीमें कमल खिलकर अप्सराओका प्रकट होना आदि। कुछ ही दिनोंमे सेठ गुरुमुख रायको समाजके भयसे थियेटरसे सम्बन्ध त्याग देना पड़ा। गिरिश बाबूके परामर्शसे बाबू अमृतलाल बोस, बाबू अमृत लाल मित्र आदिने सेठ गुरुमुखरायसे थियेटर खरीद लिया। क्रमशः गिरिश-रचित श्रीवत्स-चिन्ता, कमले कामिनी, वृषकेतु, चैतन्य-लीला, निमाई सन्यास, बुद्धदेव, विल्वमङ्गल, रूपसनातन आदि धार्मिक नाटकोंके अभिनयसे स्टार थियेटर बड़ा लोकप्रिय हो गया। लोग नाट्य-शालाको आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। इन नाटकोने, विशेषकर चैतन्य-लीला, निमाई संन्यास, बुद्धदेव, बिल्वमंगल आदिने, भक्तिरसकी मन्दाकिनी बहा दी थी।

---

* ये उच्च श्रेणीके ट्रेजेडियन थे। गभीर-भावव्यञ्जक अभिनय करनेमें अद्वितीय थे। गिरिश बाबूके पुत्र श्रीसुरेन्द्रनाथ घोष—जो आजकल बंगालमें सर्वोत्तम अभिनेता माने जाते हैं—इन्हीं अमृतलाल मित्रके शिष्य हैं।

गिरिश बाबूने चैतन्य-लीलाकी रचना बड़ी शुभ घड़ीमे की थी। इस समय इनके जीवनमे महान् परिवर्तन हुआ। युवावस्था-मे हिन्दूधर्मपर श्रद्धा न रहनेके कारण ये प्रायः आदि ब्रह्म-समाज की उपासनामे सम्मिलित हुआ करते थे। एक दिन ब्रह्मसमाजके उत्सवपर जिन वक्ताओके व्याख्यान हुए, उनके व्याख्यानोकी चर्चा हो रही थी। केशव बाबूने पूछा—"बेचाराम बाबू कैसा बाले ?" एक व्यक्तिने उत्तर दिया—"बहुत अच्छा बोले"। अनन्तर केशव बाबूने पूर्व बंगालके प्रचारकको लक्ष्य कर पूछा—"वह बाँगाल * कैसा बोला ?" गिरिश बाबू उस दिन केशव बाबूके घरपर ही थे। केशव बाबू जैसे धर्मोपदेष्टाके मुँहसे उपेक्षाके साथ 'बाँगाल' जैसा हीनता-व्यञ्जक शब्द सुनकर गिरिश बाबू बड़े खिन्न हुए! उन्होने मन ही मन सोचा कि, यह कैसा भ्रातृ-भाव है! यह समय धर्म-क्रान्तिका था। सनातनधर्मपर खूब अविश्वास फैल रहा था। नित नये-नये मतोंकी उत्पत्ति हो रही थी। सत्यासत्यका निर्णय न कर सकनेके कारण युवक गिरिशचन्द्र नास्तिक हो गये। गिरिश बाबूने यह सिद्धान्त कर लिया कि, यदि ईश्वर है और मानव-जीवनकी अत्यन्त महत्त्वकी चीज धर्म है, तो जिस प्रकार जीवन-

* पश्चिम बगालके लोग पूर्व बगालवालोंको अपनेसे हीन समझ कर उपेक्षा-भावसे 'बांगाल' शब्दसे सम्बोधित करते हैं। यह प्रयोग हीनता- है। इसी प्रकार बगाली लोग उत्तर भारतके लोगोंको भी "मेडो" 'छातूखोर" आदिसे सम्बोधित किया करते हैं। 'बगाली' को 'बङ्गलिया' कहना जैसा हीनता-व्यंजक है, वैसे ही पूर्व बङ्गालवालोंको 'बांगाल' कहना।

धारणके लिये अत्यन्त आवश्यक जल, वायु और प्रकाश यथेष्ट है, उससे भी अधिक सुलभ धर्म होता। "धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां" न होता। परन्तु इस नास्तिक अवस्थामे भी, पितापर अविचल भक्ति रहनेके कारण, जिस दिन गङ्गा-स्नान करते, पिताके नाम तर्पण करते। सोचते—"पानी दूँ, क्या जाने सचमुच पिताको पहुंचे।" इन्हीं दिनो श्रीश्रीरामकृष्ण परमहंसदेव स्टार थियेटरमें चैतन्यलीलाका अभिनय देखने पधारे और उन्होंने गिरिशचन्द्रको पदाश्रय दिया। गिरिश बाबू समझे कि, सचमुच धर्म अति सुलभ वस्तु है; नहीं तो धर्म लेकर उनके लिये थियेटरमे कौन उपस्थित होता? श्रीपरमहंसदेवने उनके सब सन्देहोकी निवृत्ति कर दी। फिर तो गिरिश बाबू परम धार्मिक हो गये। इनके विश्वासकी अब सीमा नहीं रही। गिरिश बाबू परमहंसजीके प्रधान शिष्योंमें थे।

चैतन्य-लीलाके अभिनयके बादसे ही लोग गिरिश बाबूको भक्ति-दृष्टिसे देखने लगे थे। बाद निमाई संन्यास, बुद्धदेव और बिल्वमंगलके अभिनयोसे उनकी वह भक्ति और भी दृढ़ हो गयी। निताई संन्यासका अभिनय देख, श्रीरामकृष्ण परमहंसदेवने विह्वलभावसे गिरिश बाबूका आलिङ्गन किया था। बुद्धदेव-चरितका अभिनय देख, सर एड्विन आरनैल्डने नाट्यकलाकी उन्नतिके हेतु गिरिश बाबूके उद्योगको बड़ी प्रशंसा की थी। इसी अभिनयको देखकर एक प्रतिष्ठित जमीन्दार राय बहादुर नन्दलाल बसुको जीवहिंसासे इतनी विरक्ति हुई कि, उनके घर दुर्गापूजापर जो पशुबलि होती

थी, वह बन्द कर दी गयी। "विल्वमंगल" पढ़कर विश्वविख्यात स्वामी विवेकानन्दने कहा था, "ऐसी उच्च कोटिका ग्रन्थ मैंने कभी नहीं पढ़ा।"

गिरिश बाबूने समाजको लक्ष्यकर पहले पहल 'बेल्लिक बाजार', प्रहसनकी रचना की। इसमे शिक्षा और श्लेष यथेष्ट मात्रामे रहनेपर भी व्यक्तिगत आक्रमण नही है। व्यक्ति-विशेषको लक्ष्यकर श्लेष करना इनकी रुचिके विरुद्ध था। इनका कोई भी प्रहसन इस दोषसे दुष्ट नहीं है।

कुछ दिनों बाद कोलूटोलेके प्रतिष्ठित जमीन्दार गोपाललाल शीलने उक्त नाट्यशाला खरीदकर नयी मण्डली संगठित कर उसका नाम "एमरेल्ड थियेटर" रखा। गिरिश बाबूके नेतृत्वमे स्टार नाटक-मण्डलीने नयी नाट्यशाला निर्माण करनेके लिये हाथी बागानमे जमीन खरीदी। नाट्यशाला बन रही था, ऐसे समय गोपाललालने गिरिश बाबूसे अपने एमरेल्ड थियेटरका मैनेजर बननेका प्रस्ताव किया और ३५०) रुपये मासिक वेतन और २० हजार बोनस देना चाहा। गिरिश बाबूने सोचा कि, गोपाल बाबू २० हजार बोनस दे रहे है; इस धनसे स्टार थियेटरके प्रिय शिष्योंका अर्थाभाव दूर होगा और नयी नाट्यशाला भी बन जायगी। यदि गोपाल बाबूकी बात न मानी, तो उनका कोप-भाजन होना पड़ेगा। उधर गोपाल बाबू कह रहे थे कि, गिरिश बाबू २० हजार रुपये लेकर एमरेल्ड थियेटरके मैनेजर हो गये तो अच्छा, नहीं तो वही रकम खर्चकर स्टार थियेटरके सब अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंको फोड़ लेता। इस

प्रकार संकटमें पड़कर गिरिश बाबू २० हजार बोनस लेकर ३५०) मासिक वेतनपर गोपाल बाबूके एमरेल्ड थियेटरके मैनेजर हुए। शिष्य-वत्सल गिरिश बाबूने इन बीस हजार रुपयोंमेसे १६ हजार रूपये निःस्वार्थभावसे शिष्योंको दे दिये और इस प्रकार उनकी नाट्यशाला बननेमे सहायता दी। इन्होंने उनके मालिकोंसे कहा, "तुम भलेमानसोके लड़के हो, भिन्न भिन्न मालिकोकी ऐंड़ी-बैंड़ी सुननेके बाद ईश्वरकी कृपासे अब तुम लोग स्वाधीन हुए। मेरा तुम लोगोंसे अनुरोध है कि, भलेमानसोंके जो लड़के तुम्हारे आश्रयमें आवें, वे अपमानित न होने पावे।"

एमरेल्ड थियेटरमे रहते हुए गिरिश बाबूने 'पूर्णचन्द्र' और 'बिषाद' नामक दो नाटकोंकी रचना की तथा इनका धूम-धामसे अभिनय हुआ। पूर्णचन्द्रका अभिनय देखकर "रईस और रैयत" नामक अङ्गरेजी पत्रके प्रतिभाशाली सम्पादक डाकृर शम्भुचरण मुकर्जीने लिखा था, "एक ही पूर्णचन्द्रने गोपाल बाबूके बीस हजार रुपये वसूल कर दिये।" दो वर्ष बाद गोपाल बाबूका शौक़ पूरा हो गया और उन्होंने बाबू मोतीलाल सूर आदि कई अभिनेताओंको अपना थियेटर भाड़ेपर दे दिया। यहींसे गोपाल बाबूसे गिरिश बाबूका सम्बन्ध टूट गया। ये फिर स्टार थियेटरमें आकर उसके मैनेजर हुए।

इस समय इनकी प्रवृत्ति बिज्ञान-शिक्षाकी ओर हुई। बस, ये सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डाकृर महेन्द्रलाल सरकारकी विज्ञान-सभा (*Science Association*) के सदस्य बनकर लेक्चरोंमें उप-

स्थित होने लगे। लेक्चरवाले दिन नियत समयसे तीन चार घण्टे पहले ही वहाँ पहुंच जाते और लेक्चरमें उपयोग आने वाले यंत्रादि और गैस बनानेकी क्रिया देखनेके लिये शीशी तक साफ करनेका काम करते। कुछ दिनो तक नियमित रूपसे लेक्चरमे उपस्थित होने और बहुतसे वैज्ञानिक ग्रन्थोके अध्ययनसे विज्ञान-शास्त्रमे इनकी गति हो गयी। गिरिश बाबूका उत्साह और प्रतिभा देखकर डाक्टर सरकार इनसे विशेष स्नेह करने लगे। वैज्ञानिक विषयोंपर मासिक पत्रोमें इन्होंने कई लेख भी लिखे। अस्तु। इस बार स्टार थियेटरमे आकर इन्होंने पहले "प्रफुल्ल"की रचना की। इस नाटककी बड़ी प्रशंसा हुई। स्टेट्समैनमे लगातार तीन दिनोंतक इसकी समालोचना होती रही। इसके बाद इन्होने हारानिधि, चण्ड और महापूजा नाटक लिखे। इस समय कुछ ही दिनोके अन्दर इनकी दो कन्याएँ और दूसरी स्त्रीकी मृत्यु हो जानेसे ये नियमित रूपसे थियेटर नही जा सकते थे। इसी समय नवकुमार राहा नामक एक व्यक्ति 'स्टार थियेटर'का आनरेरी सेक्रेटरी था। उसकी भेद-नीतिके प्रभावमे आकर थियेटरके मालिकोंने गिरिश बाबूको कार्य-च्युतिका पत्र दे दिया। इस समय गिरिश बाबू अपने एक पीड़ित पुत्रको लेकर मधुपुर गये हुए थे। वहांसे लौटनेपर इनका वह लड़का भी मर गया!

इसके कुछ ही दिनों बाद प्रसन्नकुमार ठाकुरके दौहित्र नगेन्द्र भूषण मुकर्जीने गिरिश बाबूको साथ लेकर १८९२ ईस्वीमें "मिनर्वा थियेटर" नामक नयी नाट्यशाला स्थापित की। यहाँ

गिरिश बाबूने शेक्सपीयरके महानाटक 'मैकबेथ' का बंगला भाषान्तर कर अभिनय प्रारम्भ किया। बहुतसे शिक्षितोकी धारणा थी कि, इस नाटककी डाइन (Witch) की भाषाका बंगानुवाद असम्भव है। इसी कुतूहलके वश ये इसके अनुवादमें प्रवृत्त हुए। इन्होने मैकवेथका इतना सुन्दर अनुवाद किया कि, विद्वन्मण्डलीमें ये अगरेजी साहित्यमे पारंगत समझे जाने लगे।

मैकवेथ नाटकके प्रत्येक पात्रको विशेषतः लेडी मैकवेथका पार्ट करनेवाली अभिनेत्रीको इन्होंने ऐसी शिक्षा दी थी, जिससे इनकी अद्भुत शिक्षा-प्रणाली और नाट्य-कौशलकी क्या देशी, क्या विदेशी सबने प्रशंसा की। इङ्गलिशमैनने लिखा था कि, "A Bengalee Thane of Gawder is a lively suggestion of incongruity, but the reality is an admirable reproductions of all the conventions of an English stage" अर्थात् बङ्गाली मैकबेथ एक दिल्लगीकी बात है, पर जो हुआ है, वह इङ्गलिश स्टेजके अभिनय-कौशलका सुन्दर अनुकरण है। हाईकोर्टके जज ऋषिकल्प सर गुरुदास बनर्जी मैकबेथका अभिनय देखनेके लिये पहले पहल नाट्यशालामे गये थे। "इण्डियन नेशनके" सम्पादक, मेट्रोपोलिटन कालेजके प्रिन्सिपल, अङ्गरेजीके प्रकाण्ड विद्वान् एन० घोष वैरिस्टरने यह मत दिया था—"शेक्सपीयरके मैकवेथ नाटकका फ्रेंच भाषामे सुन्दर अनुवाद हुआ है, पर गिरिश बाबूका बङ्गला अनुवाद उससे अच्छा है।" क्लासिक थियेटरमे इस मैकवेथका अभिनय देखकर हाई-

कोर्टके स्थानापन्न चीफ़ जस्टिस सर चन्द्रमाधव घोष, सर गुरु-दास ब्रनर्जी, सर के० जी० गुप्त और धुरन्धर बैरिस्टर पी० एल० रायने एक मत होकर इस अनुवादकी बड़ी प्रशंसा की थी। इस अभिनयके सब सीन गिरिश बाबूने विख्यात चित्रकार विलियर्डसे बनवाये थे और मिस्टर पिन नामक एक अङ्गरेजको पेंटर नियुक्त किया था। इस प्रकार गिरिश बाबूने मैकबेथके अभिनयको सर्वाङ्ग-सुन्दर करनेमें कोई बात उठा नहीं रखी थी और शिक्षितसमाजमें अभिनयकी खूब प्रशंसा भी हुई थी। परन्तु विदेशी नाटक होनेके कारण साधारण दर्शकोंने इसे पसन्द न किया। इसलिये आय कम हो जानेसे मैकबेथका अभिनय बन्द हो गया। इसके साथ ही साथ गिरिश बाबूको शेक्सपीयरके नाटकोंके अनुवाद करनेका विचार भी त्याग देना पड़ा। मैकबेथ-अनुवादकको अपने अल्प परिश्रमसे लिखे हुए "आबू हुसेन" नामक साङ्गीत नाटकके अभिनयमे आदिसे अन्ततक बार-बार करतलध्वनि होते देख जनताकी रुचिपर खेद हुआ!

इसके बाद गिरिश बाबूने "मुकुल-मुञ्जरा" "आबू हुसैन" जना आदि नाटक लिखे। इनके अभिनयसे खूब आय होने लगी। इसके बाद क्रमशः मिनर्वाके लिये सप्तमीते विसर्जन, बड़ दिनेर बख़शीस, स्वप्नेर फूल, करमेती बाई, सभ्यतार पाण्डा, फणिरमणि, पाँच कने आदि नाटक रचे। इस समय गिरिश बाबूने भिन्न भिन्न नाटकोंके अभिनयमे कितनेही आश्चर्यजनक दृश्योंकी योजना कर चित्र-शिल्पको उन्नतिकी पराकाष्ठा दिखायी थी। क्रमशः थियेटरके

स्वामीके अपव्ययसे नाट्यशालाका अस्तित्व सङ्कटमें देख, इन्होंने आय-व्ययकी व्यवस्था अपने हाथमें रखनी चाही। इसपर थियेटरके स्वामीने इन्हें जवाब दे दिया।

यह समाचार पाते ही स्टार थियेटरके अधिकारी गिरिश बाबूके घर पहुंचे और बड़े आदरके साथ उन्होंने इन्हें अपने थियेटरका नाट्याचार्य बनाया। इस बार गिरिश बाबूने स्टार थियेटरके लिये काला पहाड़,पारस्य प्रसून,हीरक जुबिली,मायावसान आदि नाटक लिखे। इसके बाद स्टार थियेटरसे फिर इनका सम्बन्ध टूट गया और फिर मोटी तनख्वाहपर क्लासिक थियेटरमें नाटककार हुए। यहाँ इन्होंने दिलदार और पाण्डव-गौरव नाटकोंकी रचना की। क्लासिक थियेटरके स्वामीसे खटक जानेपर ये मिनर्वा थियेटरके मैनेजर हुए। यहाँ इन्होंने बङ्किमचन्द्रके सीताराम उपन्यासको नाटक रूप दिया और मणिहरण तथा नन्ददुलाल नामक दो साङ्गीत नाटकोंकी रचना की। इसके बाद क्लासिक थियेटरके स्वामी फिर इन्हें अपने थियेटरमे ले आये और इस बार इन्होंने मनेर मत्तन, अश्रुधारा, शान्ति, अभिशाप, भ्रान्ति आइना, सत्नाम आदि नाटक लिखे और बंकिम बाबूके कपालकुण्डला तथा मृणालिनी उपन्यासोको दूसरी बार नाटकाकारमें परिवर्तित किया। कई वर्षतक धूमधामसे चलनेपर भी कई कारणोंसे क्लासिक थियेटरमें बड़ी अव्यवस्था हो गयी। इससे गिरिश बाबूको उससे सम्बन्ध त्यागना पड़ा। मिनर्वा थियेटरके नवीन स्वामीने उन्हें बड़े आदर-सम्मानसे अपने थियेटरका मैनेजर नियुक्त किया।

मिनर्वामें आकर इन्होंने क्रमशः हरगौरी, बलिदान, सिराजुद्दौला, कसर, मीरकासिम, नाटकोंकी रचना की। हाईकोर्टके सुप्रसिद्ध जज श्रीयुत शारदाचरण मित्रके अनुरोधसे इन्होंने बलिदान नाटक लिखा था। बङ्गाली समाजमे दहेज प्रथाके कारण मध्यम श्रेणीके लोगोके लिये कन्याका विवाह किस प्रकार असम्भव हो गया है और इसका कैसा भयङ्कर परिणाम हो रहा है, ग्रन्थकारने अपनी असाधारण प्रतिभासे इसीका ज्वलन्त चित्र इसमे दिखाया है। सिराजुद्दौला और मीर कासिम नाटक गिरिश बाबूके शेष जीवनके अमूल्य रत्न है। इनमें साहित्य, इतिहास और नाट्यका बड़ा ही सुन्दर सम्मिलन है। सिराजुद्दौला पढ़कर पलासीर युद्ध, कुरुक्षेत्र आदि सुप्रसिद्ध काव्योके प्रणेता महाकवि नवीनचन्द्र सेनने रंगूनसे गिरिश बाबूको लिखा था—"२० वर्षकी अवस्थामे मैंने पलासीर युद्ध लिखना आरम्भ किया था। ६० वर्षकी अवस्थामे तुमने सिराजुद्दौला लिखा ; यह सुनकर मैने उसे मँगाकर पढ़ा। तुम मुझसे अधिक शक्तिशाली और मुझसे अधिक भाग्यवान् हो। मैंने जब "पलासीर युद्ध" लिखा था, उस समय सिराजुद्दौलाके शत्रुओ द्वारा चित्रित चित्र हो हमलोगोंका एक मात्र अवलम्बन था। भगवान् तुम्हे दीर्घजीवीकर वङ्ग-साहित्यका मुख और भी उज्ज्वल करे।"

नाटककी रचना की। यह इनका कीर्तिस्तम्भ है। यह स्तम्भ स्वदेश प्रेमके सोनेसे निर्मित है।

इसके बाद गिरिश बाबूने 'कोहेनूर' थियेटरके लिये छत्रपति शिवाजी और अशोककी रचना की। ये दोनों नाटक नाट्य-साहित्यके उज्ज्वल रत्न है।

इसके बाद गिरिश बाबूने मिनर्वाके लिये शङ्कराचार्य्य, शास्ति-की शान्ति, तपोवल वा विश्वामित्र आदि नाटक लिखे। ये तीनों नाटक इनके शेष जीवनकी रचनाएँ है। तपोबलके सम्बन्धमें श्रीशरच्चन्द्र घोषाल एम०ए०, बी० एल०, सरस्वतीने लिखा है कि, "चरित्र-चित्रणके साथ नाटकीय आख्यानकी गति, नाट्यामोदके साथ धर्मकी इतनी सरल व्याख्या और वैज्ञानिक तत्त्वका उद्भेद—वैज्ञानिक सत्यके साथ पौराणिक घटनाका इतना सुन्दर सामञ्जस्य अन्य किसी बँगला नाटकमे प्रदर्शित नही हुआ है।"

गिरिश बाबू बडे तेजस्वी पुरूष थे। ये कपटसे घृणा करते थे। ये नक्षत्री ऐसे थे कि, जिस थियेटरमे ये रहते, उसी थियेटरमें जनताकी भीड़ होती और वही सर्व श्रेष्ठ समझा जाता। विदेशि-योमे इनके कितने ही अनुरागी थे। चटगॉवके कमिश्नर मि० स्काइन गिरिश बाबूके गुणसे इतने मुग्ध थे कि, उन्होंने लाट-दर-बारमें गिरिश बाबूको सी० आई० ई० की उपाधि देनेकी सिफारिश की थी। पर वाराङ्गनाओंका नाट्य-शालासे सम्बन्ध रहनेके कारण स्काइन साहबका प्रस्ताव समर्थित नहीं हुआ। इसपर साहब बहादुर बहुत खिन्न हुए थे।

गिरिश बाबूकी यह संक्षिप्त जीवनी है। गिरिश बाबूने साहित्य, समाज और देशकी जो सेवा की, वह अमूल्य है। इनके धार्मिक नाटकोंने समाजमे धर्मभावका प्रचार किया, सामाजिक नाटकोंने समाजका ध्यान सामाजिक पापोंकी ओर आकृष्ट किया, प्रहसनोंने भण्डोंकी खबर ली तथा ऐतिहासिक नाटकोंने स्वदेशी आन्दोलनके युगमे देशभक्ति और देशके लिये मरनेकी शिक्षा दी। इस प्रकार लोक-शिक्षाका कार्य्य कर ६४ वर्षकी अवस्थामे गिरिश बाबू परलोकवासी हुए।

सिराजुद्दौला, मीर कासिम और छत्रपति शिवाजी नाटकोंके अभिनय सरकारने बन्द करवा दिये थे।

BHARTI PRESS
CALCUTTA

गृहलक्ष्मी

पहला अङ्क

पहला दृश्य

उपन्द्रके घरका भीतरी हिस्सा।

उपेन्द्र और तरङ्गिणी।

उपेन्द्र—अबकी दसहरेका बखेड़ा मुझसे न होगा—शैलेन और नीरद तो हैं।

तरङ्गिणी—जीजी, इधर आना।

नेपथ्यमे विरजा—आती हूं। अरी क्षमा, महाराजजीसे कह दे कि आटा गूंध-गांध कर रखे—और चीजे धीमी आंच पर

चढ़ा दें। छोटे बाबू आते ही होंगे। छोटी बहू पर छोड़-छाड़ कर कहीं सोने न चले जायँ।

(विरजाका प्रवेश।)

विरजा—क्या है, मझली बहू?

तरङ्गिणी—सुनती हो जी, इस बार दसहरेके खर्च-वर्चका भार नीरद पर है—बड़े मियाँ सो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्ला। हर साल दसहरेपर मुंह मीठा होता था, इस बार वह भी होता नहीं दिखाई देता।

विरजा—ठहर बहन, मैं भण्डारघरकी ताली न जाने कहां गिरा आयी हू।

(विरजाका प्रस्थान।)

नेपथ्यमे विरजा—कहां थी?

नेपथ्यमे दाई—अजी, मुझे घी निकालनेको दी थी न?

नेपथ्यमे विरजा— सुध भी ठिकाने नही रहती।

(विरजाका पुनः प्रवेश।)

विरजा—हां, क्या कह रही थी?

तरङ्गिणी—ठहरो, पहले दुनिया भर घूम लो, तब तो बैठकर बातें सुनोगी।

विरजा—नही री, सब कामसे फुरसत मिल गयी है, अब देहपर दो चार लोटे डाल, माला फेरकर सोऊंगी।

पेन्द्र—अब रातको नहाओगी?

विरजा—मुझे आदत है। (तरङ्गिणीसे) ले,कह,क्या कह रही थी?

तरङ्गिणी—ये कहते क्या है, जानती हो जीजी, अबकी छोटे जने और नीरदपर गृहस्थीका भार देकर निश्चिन्त हो गये। इनसे कुछ कहो तो कहते है—"जाओ, नीरदके पास जाओ।" छोटे जनेकी आंखोंमे तो फिर भी शील है, पर नीरदसे कुछ मांगने जाओ तो वह खाने दौड़ता है। पर अभी इन्होंने गृहस्थीसे बिलकुल मुंह नहीं मोड़ा है। छोटी बहू और नीरदकी बहूके दसहरेके गहने बनवानेका भार इन्होंने अपने ऊपर ले लिया है।

विरजा—हां, यह तो मै कुछ दिनोसे सुन रही हूं, नीरद ही सब कुछ करता धरता है, पर बात यह है कि अभी दोनों लडके ही है। वे सब क्या सँभाल सकेंगे?

उपेन्द्र—सब व्यवस्था कर दी है। घरका खर्च-वर्च मुनीमजी चलावेंगे और वे दोनो हिसाब-किताब देखेंगे। मैं भी उनपर सब कुछ छोड़छाड कर कुछ निश्चिन्त नहीं हो गया हूं। मैं बराबर बैठा थोड़े ही रहूंगा, जमीन-जायदाद कहां और क्या है, यह उन्हें भी तो जान लेना चाहिये।

विरजा—सुनती हूं, खर्चबर्चके बारेमें चाचा-भतीजेमे चखचख हुआ करती है।

तरङ्गिणी—नीरद तो समझबूझ कर चलना चाहता है, पर छोटे जने पूरे उड़ाऊ हैं।

उपेन्द्र—यह बात तुमसे किसने कही ?

विरजा—मन्मथ कहता है—बड़ी माँ, मौसाजीसे कहो कि नीरद भैया और छोटे मौसाजीमे बनेगी नही ।

—हां हा, उन दोनोमे खर्चवर्चके बारेमे कहासुनी हुई थी । पर मन्मथको यह बात कैसे मालूम हुई? वह तो कमरेमे बैठा पढ़ रहा था ।

विरजा—मन्मथको कैसे मालूम हुई ? तुम्हारे घरकी ऐसी कोई बात नही है, जो उससे छिपी हो । नौकर-चाकर क्या खाते है, वह भी उससे छिपा नहीं है । (तरङ्गिणीसे) इधर तो अपने भांजेको अल्हड़सा घूमते देखती हो, पर वह सब कुछ जानता है- सब कुछ कर सकता है । सुनती हूं, पढ़नेलिखनेमे कोई लड़का उसकी बराबरी नही कर सकता । स्त्रियोंके काम-धन्धे भी वह जानता है । मेरे पास बैठकर मेरा ही कितना काम कर देता है । उसने जो बगीचा लगाया है, वहांसे वह फूलोके गुच्छे बना लाता है और छोटी बहू तथा नीरदकी बहूको दे देता है । तुम्हारे पास इस डरसे नही ले जाता कि कहीं तुम बिगड़ने न लग जाओ । आज जो तुमने छेनेकी * तरकारी खायी थी, वह उसकी ही बनायी हुई थी । वह एक चूल्हा खरीद लाया

---

* फाड़ा हुआ दूध, जिसका पानी निचोड़कर निकाल दिया जाता है । बंगालमें इससे तरह-तरहकी मिठाइयाँ बनती है । इसकी तरकारी भी बनती है, जो बड़ी स्वादिष्ट होती है ।—अनुवादक ।

है, बीच बीचमे मुझसे चावल-दाल लेकर रसोई बनाता है।

उपेन्द्र—तुम्हे गुच्छा लाकर नहीं देता ?

विरजा—(हंस कर) एक दिन लाया था। मैंने बिगड़ कर कहा, तूने ठाकुरजीके चढ़ानेके फूल बरबाद किये। वह गुच्छा वह बहूको दे आया।

तरङ्गिणी—वह ठाकुरजीके चढ़ानेके फूल इस तरह क्यो बरबाद करता है ?

उपेन्द्र—हूं—मौसीपना बघारा जा रहा है !

विरजा—सोई तो। वह खराब थोड़े ही करता है। तुम्हारी बहनके मरनेपर पांच वर्षका लड़का घर आया था। उस दिनसे कभी उसने मचलकर कहा कि यह चीज खाऊंगा ? बगीचेसे भरभर डाली फूल आते हैं, उसने आप पेड़ लगाये हैं, उन्हीके दो-चार फूलोंसे वह गुच्छे बनाता है। वही बरबाद करता है। सुनती हूं, बीच-बीचमे तुम उसे डांटती हो। वह तुम्हारा भांजा थोड़े ही है—वह तो मेरा भांजा है ! बडे भागसे ऐसे लड़के होते हैं !

उपेन्द्र—सचमुच हजारों लड़कोंमे ऐसा कोई बिरला ही दिखाई देता है। भैया जीते रहते तो अबतक उसका ठौर-ठिकाना कर दिया होता।

(नीरदका प्रवेश।)

नीरद—बाबूजी, हिसाब-किताब तो मै देखता हूं, पर खर्चका जिम्मेदार मैं नहीं होऊंगा।

उपेन्द्र—क्यों ?

नीरद—मैं कहाँ तक बात छिपाये रखूँ ? छोटे चाचाने दस-बारह हजार रुपयेकी चेक काटी है। कहा है कि भैयासे मत कहना। बहीमे जमा-खर्च भी नही करने दिया। कल मुझपर क्यों बिगड़े थे ? इसी लिये कि वे फिर पाँच हजारकी चेक काटना चाहते थे, पर मैंने चेक-बही दी ही नहीं।

उपेन्द्र—जा, जा, अभी जा।

नीरद—आप कोई बन्दोवस्त कर दें,रोजकी किचकिच अच्छी नही।

उपेन्द्र—अच्छा, अच्छा, हो जायगा।

(नीरदका प्रस्थान।)

तरङ्गिणी—तुम्हारे डरसे मैं बोली नही। छोटे जनेका चालचलन बिगड़ गया है। नीरद मुझसे कहता था, पर मुझे विश्वास नहीं होता था। पर अब देखती हूं, वह रातको एक एक दो दो बजे घर आता है। छोटी बहू उसे सँभाल लेती है, इसीसे महाराजजीसे कहती है, "तुम जाओ, मैं खाना परोस दूँगी।" महाराजजीका कोई दोष नहीं है। उसे अंड-बंड बातें करते भी सुना है, शायद वह कोई नशा पीता है।

विरजा—यह बात दाब क्यो रखी बहन ?

तरङ्गिणी—क्या करूँ, कहकर दोषी कौन बने ?

उपेन्द्र—इसमें दोषकी कौनसी बात है? जब तुम्हें मालूम हो गया था, तब मुझसे कहना चाहिये था।

तरङ्गिणी—क्या कहती, तुम क्या जानते नही हो या देखते नहो?

उपेन्द्र—नहीं, देखा नही, देख पाता तो तुम्हारी तरह चुप नहीं रहता। दोषी होनेके डरसे तुमने मुझसे कहा नहीं—हद्द हो गयी!

तरङ्गिणी—मेरी तो सभी बातें ऐसी ही होती है।

उपेन्द्र—होती होंगी।

विरजा—ये बुरी बात क्या कह रहे है? ये दोनो भाई एक आत्मा है। ससुरजी मरे, उन्हे मरे छः महीने भी नही बीतने पाये कि, सासजी आठ महीनेका लड़का छोड़ चल बसी। मैं एक दिन झिड़क बैठी थी, बस फिर क्या था, मेरी पूरी गत बना छोड़ी थी।

उपेन्द्र- अभी जो सुन रहा हू, अगर यह बात सच है और यह सच ही मालूम होती है, नही तो उसे इतने रुपयोकी क्या जरूरत पडी है। भाभी, जानती तो हो, किस तरह भूखे-प्यासे मामला-मुकदमा लड़कर जमीन-जायदाद पायी—क्या इसी लिये? भैया गोनियो और बूढ़े मल्लिकके हाथसे जायदाद निकाल कर छोड़ गये—वे पुण्यात्मा थे, भोगनेको मुझे छोड़ गये। भाभी, तुमसे मैंने कहा नहीं, इस बीच दो बार चुपके-चुपके हैण्डनोटके रुपये चुका चुका दूँ। मैं समझा था, भार पड़ने पर सुधर जायगा,

यहाँ तक नौबत पहुचेगी, यह नही सोचा था। क्या सचमुच वह शराब पीने लग गया ?

तरङ्गिणी—झूठ सच मै नही जानती। वह खाने बैठा था, मै मिठाई देने गयी थी ; तब उसके मुँहसे महक आ रही थी।

उपेन्द्र—तुमने यह सब देखा और मुझसे कुछ न कहा ! धन्य हो !

तरङ्गिणी—न कहना ही अच्छा है, कितनी ही बार तो कहकर दोषी हो चुकी हूं।

उपेन्द्र—अगर तुम्हारा नीरद होता, तो क्या चुप रहती ? (विरजासे) झूठी हाय-हायमे पड़ा हू—वह घर नही बनाये रख सकेगा। जब घरमे शराब घुसी है तब कुशल नहीं है इस रोगकी औषधि नही है। उसके जो मनमे आवे करे। मैं यहाँसे कही चला जाता हूं। बहुत सिर खपा चुका।

विरजा—गरम मत हो, ठंडे हो, नही तो सब बात बिगड जायगी। मझली बहू, तुझसे क्या कहूं, उसे दूध पिलानेसे मुझ जैसी बाँझके भी दूध आया। हाय ! वह इस तरह बिगड़ चला ! यह मेरे फूटे भागका ही दोष है,और किसीका नहो। ससुरजी दूसरोंपर विश्वास कर जायदाद खो बैठे थे, वह तो अच्छा ही था। दोनों भाई मजूरी कर पेट भरते। यह क्या हुआ—आखिर इस घरमे शराब घुसी !

नेपथ्यमे शैलेन्द्र—मुझे किसीकी परवा नही। हिसाब-किताबसे जकड़बन्द होकर मेरा काम नही चलनेका।

(शैलेन्द्रका प्रवेश)

उपेन्द्र—नीरद ! नीरद !

नेपथ्यमें नीरद—जी हाँ ।

शैलेन्द्र—नीरदको बुला रहे है ? मै उसकी परवा नही करता ।

विरजा—चल चल, सोने चल ।

शैलेन्द्र—कौन—भाभी ! प्रणाम । तुम्हीं कहो, पाँच सौ रुपये महीनेमे मेरा खर्च कैसे चल सकता है ? कमसे-कम एक गार्डन पार्टीमे तीन सौ रुपये चाहिये । मान लो—

विरजा—ले चल चल ।

शैलेन्द्र—चलता हूँ, न्यायकी कहो ।

उपेन्द्र—नीरद !

(शैलेन्द्रको पकड कर विरजाका प्रस्थान)

नीरद—जी हाँ, कहिये, मै आ गया ।

उपेन्द्र—क्या तुम्हारा भी महीना बढ़ाना होगा ?

नीरद—बही देखिये, दो महीनेकी मेरी तनखाह जमा है ।

उपेन्द्र—चल, बाहर चल, मुनीमजीको बुलवा भेज ।

तरं०—अजी, अभी रातको ही ?

उपेन्द्र—ठहरो भी ।

(उपेन्द्र और नीरदका प्रस्थान

(विरजाका पुन प्रवेश)

विरजा—मँझले जने कहाँ गये ?

तरं०—मुनीमजीको बुलवाने आदमी भेजकर बाप-बेटा बही देखने

गये। आज मुझे डाँट पड़ रही है कि मैंने कहा क्यो नहीं। कहती तो दोषी बनती। सोचते, भाईकी चुगली खा रही है। उन्होंने जो कहा कि रुक्कोंके रुपये भरने पड़े, सो वे रुक्के किसके लिखे हुए है? नीरदने पता लगाया है, रुक्कोपर रुपये लेकर बाबू साहबने अपने यार-दोस्तोंको उधार दिये है। नीरद कहने गया तो उसने क्या कहा, जानती हो? तुम अपने चरखेमे तेल डालो, मैं क्या करता हूँ, इससे तुम्हे क्या मतलब? फिर कहनेसे मतलब ही क्या है चुप रहना ही अच्छा है। जीजी, तुम जानती नहीं हो, अब तक न जाने कितना कुछ हो गया है। तुमने कहा कि मै क्यों नहीं मुँहसे फूटी, तो कहकर बुरा कौन बनता? कहती तो झटसे कह बैठते, चुगली खा रही है।

विरजा—तूने चुपके-चुपके मुझसे क्यों नहीं कहा?

नरं०—आखिर मेरे ही सिर ठीकरा फूटता।

विरजा—ले चल, खाने चल।

नरं०—नहीं जीजी, आज मुझसे खाया न जायगा।

विरजा—अच्छा, खाइयो मत, सवेरेसे काम करती-करती थक गयी हूँ, चलकर मुझे खिला। मन्मथने मुझसे कहा था, बड़ी माँ, जोड़ी-गाड़ी पर छोटे मौसाजीके पास कितने ही चौपटचरण आ रहे हैं। मैने डाँट कर कहा—"तुझे इससे क्या? तू इन बातोमे मत पड़।"

(सरोजिनीका प्रवेश)

सरोजिनी—जीजी, जीजी, वे उलटी कर रहे है। न जाने क्या निकल रहा है! शायद अँतड़ी गल-गलकर निकल रही है।

विरजा—दुर मूरख !

(विरजा और सरोजिनीका प्रस्थान)

तरं०—नीरद ठीक कहता है, भाईका चरित्र वे आप ही देखें।

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

शैलेन्द्रका कमरा।

शैलेन्द्र और सरोजिनी।

शैलेन्द्र—भैया कल कुछ बोले थे ?

सरो०—मैंने तो कुछ सुना नहीं।

शैलेन्द्र—बड़ी भाभी कुछ बोली थीं ?

सरो०—बडी जीजी रोती हुई बोलीं— चार भूतोने मिलकर उसे बिगाड़ दिया।

शैलेन्द्र—तुमने भी मन ही मन मुझे कितना कुछ कोसा होगा ?

सरो०—मै तुम्हें कोसूँगी ?

शैलेन्द्र—जान पड़ता है, तुम सारी रात सोयी नहीं

सरो०—नहीं सोयी थी।

शैलेन्द्र—तो क्या रो-रोकर आँखें सुजा लीं ?

सरो०—अब तुम वैसा मत करना। जब तुम उलटी करने लगे तब ऐसा मालूम होता था कि तुम्हारा दम घुट जायगा।

शैलेन्द्र—अच्छा, मैं रोज रातको देर करके आता हूँ, मुँहसे शराबकी बू भी आती होगी, मुंझसे तुमने कुछ पूछा क्यो नहीं ?

सरो०—पूछती क्या ?

शैलेन्द्र—मैं चौपट हो गया।

सरो०—तुम्हारी बला हो।

शैलेन्द्र—सुनो, कुमुदिनी नामकी वेश्या थियेटरमे नाचती थी। शरत् नामका जो आदमी मेरे पास आता था, उसीने उसे रख छोड़ा था। वही हम कई जनोंको एक दिन उसके यहाँ गाना सुनाने ले गया।

सरो०—सुनकर क्या होगा ? अब तुम मत पीना।

शैलेन्द्र—सुनो, सुननेसे तुम्हें मालूम होगा कि मैंने बेड़ी पहन ली है।

सरो०—सो कैसे ?

शैलेन्द्र—एक आध दिन मै यो ही गाना सुनने गया। शरत् साथ रहता था। एक दिन हीरू मुझसे बोला,—"छोटे बाबू, सुना है, तुम लोग रोज गाना सुनने जाया करते हो, मुझे तो एक दिन भी साथ नहीं ले गये ?"

सरो०—सुना है, हीरू अच्छा आदमी नहीं है।

शैलेन्द्र—सुनो भी तो, मैं हीरूको लेकर वहाँ गया। सोचा कि शरत् यार-दोस्तोंको लेकर आता होगा, आनेमे देर होती देख, मैंने उसे लिवा लाने हीरूको भेजा, पर वह लौट कर नहीं आया। बात-ही-बातमे रात हो गयी। मैं वहाँसे उठना ही चाहता था कि इतनेमे शरत् अकेला वहाँ आ पहुँचा। मुझे देखते ही उसकी त्योरी चढ़ गयी, उसने मेरी बातका जवाब तक नहीं दिया।

सरो०—क्यों—उससे क्या कहासुनी हुई थी?

शैलेन्द्र—नहीं। शरत् कुछ देर बैठकर ही कुमुद्को बुलाकर बाहर चला गया। मै कुछ समझ न सका। दस मिनटके बाद मैंने कुमुद्को यह कहते सुना,—"तुम्हारे लिये क्या मैं अपने यार-दोस्तोंको बैठाऊँ नहीं? यह नहीं हो सकता। इस पर तुम नही रहना चाहते तो जाओ—चले जाओ। मुझे तुम्हारी इतनी चाह नही।" इसपर शरत् बोला,—"अच्छा ऐसा ही होगा। मामला क्या हैं यह जाननेको उठा ही था कि इतनेमे कुमुद्ने लौटकर मेरा हाथ पकड़ कर मुझे बैठा लिया।

सरो०—क्यों—उनमे ऐसा क्यो हुआ?

शैलेन्द्र—कहता हूँ, सुनो भी तो, कुमुद बोली—देखो जी, मेरा क्या कसूर है? तुमसे मेरी जान-पहचान नहीं थी, वही तुम्हें साथ लाया और मुझसे तुम्हारी जान-पहचान करायी। तुम आये, तुम्हें आदरसे बैठाया। बस यही

मेरा कसूर है। वह तुमपर सन्देह कर मुझे जवाब देकर चला गया।" मैंने पूछा—"उसने मुझपर सन्देह किया है?" कुमुद बोली—"हाँ, नहीं तो फिर दोस्ती ही कैसी? उसने समझ रखा था कि, एक सौ रुपये महीने पर मुझे मोल ले लिया है, महीना बन्द होनेसे मै भूखो मर जाऊँगी। सच तो यह है कि वह यारदोस्तोकी बड़ाई सुन नहीं सकता। क्या कहूँ, एक दिन कहीं मै तुम्हारी बात चला बैठी थी, बस, उसकी त्यौरी चढ़ गयी और लगा बोली-ठोली मारने। इस निगोड़े पेट और एक आध कपड़ेके लिये मै किसीकी लाल आँखें नहीं सह सकती। एक सौ रुपये ही तो! ये तो तुम्हारी जूतियाँ सीधी करनेसे भी मिल जायँगे।

सरो०—क्यों जी, वह सौ रुपये महीना देता था?

शैलेन्द्र—वह बहुत क्या देता था? वह गाना जानती है—नाचना जानती है—मजलिसकी शोभा है।

सरो०—फिर क्या हुआ?

शैलेन्द्र—मेरा जी भी शरत्‌से खट्टा हो गया। मैंने कुमुदसे कहा—अब तुम शरत्‌को आने मत देना, तुम्हारा खर्चा-बर्चा मै चलाऊँगा। बस, उसके यहाँ जाना-आना शुरू हो गया। सङ्गी-साथियोंके कहने-सुननेसे शराब भी उड़ने लगी। कल बगीचेमें एक आध प्याला ज्यादा पी गया था, उसीसे वह नौबत हुई थी।

सरो०—तो क्या बेड़ी पहन ली?

शैलेन्द्र—समझी नहीं, मेरे कारण उसकी जीविका चली गयी।

सरो०—अच्छा तो तुम उसे कुछ थोक रकम दे दो, अब वहाँ जाओ मत।

शैलेन्द्र—यह बात मैंने उससे कही थी। वह बोली—"तुम न आओगे तो मैं जहर खा लूँगी।" उसकी बेकली देख मेरा मन भी उसकी ओर कुछ खिंच गया है।

सरो०—खैर, तो उसके यहाँ बीचबीचमें एक आध बार हो आया करना पर शराब मत पीना।

शैलेन्द्र—यही तो मुश्किल है। वहाँ जानेसे यार-दोस्तोंकी खातिर शराब पीनी ही पड़ती है, थोड़ीसे फिर ज्यादा हो जाती है।

सरो०—अच्छा तो तुम उसे चुपकेसे यहाँ ले आओ।

शैलेन्द्र—यह भी कहीं हो सकता है?

सरो०—क्यों न होगा? मैं किसीसे न कहूंगी, अपने कमरेका दर-वाज़ा बन्द कर दूँगी, कोई हमारे कमरेमें न आ सकेगा।

शैलेन्द्र—अच्छा तो क्या तुम समझती हो कि मैं वहाँ न जाऊँगा तो सचमुच ही वह जान दे डालेगी? इन कुछ दिनोंमें ही वह मुझे इतना चाहने लगी?

सरो०—इसमें अचम्भेकी कौनसी बात है? तुम्हें जो देखेगी वही चाहेगी।

शैलेन्द्र—यहाँ लानेसे तुम्हें डाह न होगी?

सरो०—डाह क्यों होने लगी? तुम अगर और भी दस पाँच ब्याह कर लो तोभी तुम पराये थोड़े ही हो जाओगे?

शैलेन्द्र—वह भी तुमसे मिलना चाहती है।

सरो०—अच्छी बात है, तुम उसे ले आना।

शैलेन्द्र—तुम और एक काम कर सकती हो?

सरो०—क्यो नही कर सकती?

शैलेन्द्र—मैं एक और आफतमे पड़ा हूं, बैकसे हजार पन्द्रह सौ रुपये निकाल लिये है। पर सब मैने आप नही खर्च किये, एक मित्रपर आफत आयी थी, अगर मै न बचाता तो वह कैद हो जाता, उसीको बचानेमे बहुतसा खर्च हुआ और कुमुदके पास ढङ्गका कोई गहना नहीं था, उसे कई गहने बनवा दिये। इसके सिवा यार-दोस्तोको बाग-बगीचे ले जानेमे कुछ खर्च हुआ।

सरो०—भला, यह ऐसी कौनसी आफत है? जेठजी क्या रुपया न देंगे?

शैलेन्द्र—देंगे क्यो नहीं? सोचता हूं, कहीं नीरदकी बातोमे आकर मुझे जुदा न कर दे। मुझे कहते डर लगता है, तुम बड़ी भाभीसे कह कर अगर कोई बन्दोवस्त करा सको तो बड़ा अच्छा हो। और कहना कि पाँच सौसे मेरा काम नही चलता। हजार रुपया महीना कर दें और दसहरे पर अगर चार हजार दे तो मेरा काम चल सकता है।

सरो०—कह सुन कर मैं करा दे सकती हूं। तुम जाओ, नहाओ धोओ, सोचफिकर मत करो। तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, तुम और जो चाहो सो करो, शराब मत पीओ।

शैलेन्द्र—देखो, मैं शराब खुशीसे नहीं पीता, मुझे अच्छी भी नहीं लगती और यह भी देख रही हो कि वह मुझे बरदाश्त भी नहीं होती। जब चार दोस्त पीछे पड़ जाते है तब इनकार करते नहीं बनता।

सरो०—भला ऐसा शील किस कामका ? तुम उन लोगोंसे कहना, ऐसी जोर-जबरदस्ती करोगे तो मैं तुम लोगोंका साथ छोड़ दूँगा। तुम उस सत्यानाशी चीजको मत छूना। जाओ, तुम नहाधोकर, कुछ खापीकर आराम करो।

शैलेन्द्र—अच्छा, कुमुदके यहाँ आनेसे तुम बुरा तो न मानोगी ?

सरो०—नहीं, तुम्हारे पैर छूकर कहती हू,. नहीं। वह तुम्हे चाहती है, उसे बहनकी तरह चाहूंगी।

शैलेन्द्र—भैयाको कैसे मुँह दिखाऊँगा, सोच रहा हूं।

सरो०—तुम सोचफिकर मत करो। उनके अन्दर आनेपर तुम उनसे कहना कि अब मै ऐसा काम न करूँगा, फिर वे कुछ न बोलेंगे।

शैलेन्द्र—तुम भी जाकर नहाओ धोओ। तुम जरूर रातको जागी हो।

(शैलेन्द्रका प्रस्थान)

सरो०—मन्मथ तो झूठ नहीं कहता, वे कलमुंहे ही सारी बुराईकी जड़ है।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

उपेन्द्रके मकानका बाहरी हिस्सा ।

नीरद, हीरू और मन्मथ ।

हीरू०—छी छी, छोटे बाबूकी जबानमे लगाम नहीं रही। जो मुँहमे आया बक दिया। रण्डीके घर जाकर लुच्चोंके सामने मँझले बाबूको जो मनमे आया कह डाला! राम राम! सुनकर कानोपर हाथ धरने पड़ते हैं। कहते क्या है, मँझले बाबू झाँसा देकर उनकी जायदाद हड़पना चाहते है।

मन्मथ—क्यो हीरू बाबू, यह बात आपने किससे सुनी?

हीरू—अरे यह तो मैंने अपने कानों सुनी।

मन्मथ—तो क्या आप वहाँ जाया करते है?

हीरू—अरे नहीं नहीं, छोटे बाबूसे तो तुम्हारा वास्ता नहीं पड़ा है। मुझे क्या मालूम था, बोले "चलो हीरू, जरा घूम फिर आवें।" वे मुझे वहाँ ले जायँगे, यह कौन जानता था?

मन्मथ—इसके बाद शायद आपको घरमें बन्द कर रक्खा, बाहर नहीं आने दिया?

हीरू—घरमें बन्द करनेके समान ही था, मेरा दुपट्टा छीन लिया फिर मैं क्या कर सकता था?

मन्मथ—लाचार होकर श्रीमान्‌को बैठ जाना पड़ा। मैने सुना है, आपको पटककर शराब भी पिलायी गयी थी?

नीरद्—अरे चुप भी रहो मन्मथ, क्या कहते है, सुनो भी तो। (हीरूसे) चाचाजीने बाबूजीको खूब खरी-खोटी सुनायी होगी? क्या बोले थे?

हीरू—उन बातोंको जाने दो—सुनकर क्या करोगे?

मन्मथ—अब इन्हे फिरसे जवानपर शान धरनी होगी, नहीं तो वह साफ नहीं होगी।

नीरद्—अच्छा तो आप बाबूजीसे सब कहियेगा। वे मुझपर ही बिगड़ते है। उन लोगोंका रुपया है, वे जैसे चाहें खर्च करें, मैं अब उनकी बातोंमें न पड़ूँगा। आज मैं हिसाब-किताब समझाकर किनारे हो जाऊँगा।

(वैद्यनाथका प्रवेश)

वैद्य—क्यो हीरू, क्या हालचाल है? किसका लड़का मरा, कौन जेल गया, कौन राँड़ हुई, किसका सत्यानाश हुआ—तुम तो घूमघूम कर लोगोकी भलाई ही देखा करते हो?

हीरू—ये बडे मौजी है, मुझे देखते ही हँसी दिल्लगी करने लगते है।

(खीझकर नीरदका चल खड़े होना)

वैद्य०—नीरद, अन्दर जा रहे हो, अपने बाबूजीसे कहना कि मै आया हूं।

(नीरदका प्रस्थान)

हीरू—आजकल दिखाई नहीं पड़ते, कहाँ रहते हो?

वैद्य—तुम्हीं बताओ, कैसे दिखाई दूँ। इस घरमे घुसनेकी कही गुञ्जाइश है? घुसनेसे लोग जल मरते हैं।

मन्मथ—जल क्यों मरते है?

वैद्य—हीरूबाबूसे पूछो न? ये बरदाश्त कर सकते है। हम लोगोंसे ऐसा नहीं होता। हीरू, तुम लोगोकी खूब बरदाश्त कर सकते हो। सुनता हूं, तुम सांझ सवेरे दोनो वक्त यहां आया करते हो।

मन्मथ—यह इनकी कृपा है। छोटे बाबूके साथ गाड़ीपर आया जाया करते है।

वैद्य—हैं! तुम्हें इन कामोके लिये समय कब मिलता है? और परोपकार करने कब निकलते हो?

हीरू—बैठो बैठो—जरा तम्बाकू तो पी लो।

वैद्य—बैठूँ क्या, पहले यह तो बताओ, भाई भाईमें ठनेगी? क्या रङ्ग-ढङ्ग दिखाई देता है?

हीरू—ऐसा होना क्या अच्छा है?

वैद्य—अच्छा नहीं? घर बरबाद हो जायगा, हमलोग जिस तरह बाजार हाटसे चीज वस्त लाया करते हैं उसी तरह ये लोग भी लाया करेंगे; देखकर छाती ठण्ढी होगी।

मन्मथ—नहीं साहब, ये वैसे नहीं है। ये आपसमे मेल कराने आये हैं। इसीसे कहते थे, छोटे बाबूने मँझले मौसाजीको खरीखोटी सुनायी हैं।

हीरू—दोष गुण बताना चाहिये नहीं तो झगड़ा मिटेगा कैसे ? मैं कुछ दूसरेसे तो कहने गया ही नहीं।

वैद्य०—कह तो रहे थे ! चौराहे पर खड़े होकर हाथ मटका मटका कर किससे सब बातें कर रहे थे ? नहीं तो मुझे कैसे मालूम होता कि दोनों भाइयोमे खटक गयी है।

हीरू—वह इनका पुरोहित था जो सब हाल कह रहा था। मैंने तो उसे डॉट दिया था।

वैद्य—उसे क्या पड़ी थी कि कहता। तुम्हारे कहनेपर उसने कहा था कि मै गरीब ब्राह्मण हूं, पूजा पाठ कर पेट भरता हूं, मुझे लड़ाई झगड़ेकी क्या खबर ?

हीरू—अच्छा बैठो, मै तुमसे पार नही पा सकता। लो मैं चला।

वैद्य०—चले क्यो ? छोटे बाबूने क्या कहा, वह तो उपेन्द्रसे कह जाओ। छोटे बाबूके जो मनमें आ रहा था कह रहे थे, तुम बरदाश्त नही कर सके, इसीसे वहाँसे उठ आये,—क्यो, यही बात है न ?

मन्मथ—ये जाते नहीं है, आपके चले जानेपर ये मौसाजीके पास पहुंचेंगे। मैं मौसाजीसे कह दूंगा—क्या कहते है हीरू बाबू ?

हीरू—मुझे क्या ? दोनो भाइयोंमे मेल रहे तो अच्छा ही है।

वैद्य—क्यों दोनों भाइयोंको लड़ाकर तुम्हारा पेट भर गया ? हाँ, तुमसे एक सलाह लेनी है। किस कामकी दलालीमें सुभीता है ? मेरा विचार है, पेनशन लेकर कोई काम करूँ। रूईकी दलालीमें सुभीता है या हैण्डनोटकी दलालीमें

या मामले मुकदमेकी दलालीमे। तुम तजर्बेकार आदमी हो, तीनो ही कामकी दलाली तो कर रहे हो।

हीरू—लो, बैठो बैठो, तुम्हारी तरह मुझे बातें बनानी नहीं आती।

(नकुलानन्द अवधूतका प्रवेश)

अव—(हीरूको पकड़कर) कहाँ जाते हो, सुनो तुमपर आफत आयी है। उस दिन साँझको तुम बड़तल्लेसे चले जा रहे थे, तुम्हे भुतहा चण्डाल लग गया।

हीरू—क्यो अवधूत, आज कितनी चिलमे उड़ी?

अव—अरे भूत, बैठ, तू मुझसे नही बच सकता, मै तुझे दो फूकमे उड़ा दूँगा।

वैद्य—तुम उड़ा न सकोगे, इन्हे सौरीका भूत लगा है।

अव—हो सकता है, तो वह भूतोका बाप है।

हीरू—लो, छोड़ो—छोड़ो, मुझे काम है।

वैद्य—छोड़ दो अवधूत, इन्हे अभी बहुत काम है। ये अभी बिमलीकी लड़कीकी दलाली करने जायंगे।

हीरू—देखो, ऐसी हँसी दिल्लगी मुझे पसन्द नही है।

अव—नहीं नहीं, आज यह बुद्धू सुनारका सिर तोड़ेगा।

हीरू—जान पड़ता है, आज गाँजेने तुमपर खूब रंग जमाया है।

अव—चण्डाल भूत है न, जबरदस्त है। पगहा होता तो देख लेता, चण्डाल भूत कैसा है, तुम्हे धरनसे लटका देता।

मन्मथ—अवधूतजी, मैं लिये आता हूं।

हीरू—नही बाबा, यह तमाशा नहीं है। इस गँजेड़ीका क्या ठिकाना है यह अभी मुझे बाँध सकता है।

अव—हूं—हूं—अरे भूत (मुँह पर फूंक मारना)

हीरू—देखो तो सही, पाजीने थूकसे मेरा मुँह भर दिया।

अव—बस, बचा बच गया।

मन्मथ—नही अवधूतजी, अभी इनपरसे भूत नही उतरा।

अव—तो झटपट दो लुटिया गोमूत ले आओ, इसे नहला दूँ।

(उपेन्द्रका प्रवेश।)

उपेन्द्र—वैद्यनाथ, अभी जीते हो ?

वैद्य—मर जाऊँगा तो तुम दोनों भाइयोंकी लड़ाई-भिड़ाई कौन देखेगा ?

उपेन्द्र—मन्मथ, देखो तो, शैलेन कहाँ है ?

हीरू—वे तो कबके बाहर चले गये।

उपेन्द्र—हूं ! अभी सवेरे पैर पकड़कर माफी माँगी थी, बोला, अब मै बाहर न जाऊंगा।

अव—चुड़ैल खींच ले गयी—चुड़ैल।

वैद्य—अच्छा अवधूत, चुड़ैल कैसे लगी ?

अव—इसी भुतहे चण्डालने लगा दी।

वैद्य—ठीक कहते हो अवधूत।

उपेन्द्र—भुतहा चण्डाल कौन है ?

वैद्य—और कौन—यही हीरू ?

हीरू—देखो तो मंझले बाबू, यह गंजेड़ी कहता है, मुझे भुतहा चण्डाल लगा है, मुझे पगहेसे बाँधना चाहता है, मुझ पर गोमूत डालना चाहता है और वैद्यनाथ बाबू इसे उकसा रहे है।

उपेन्द्र—छोड़ दो अवधूत, छोड़ दो।

अव—जा रे भूत, आज तू बच गया, पर मै तेरा मूंड़ मुड़ाये बिना न मानूंगा।

(हीरूका प्रस्थान)

उपेन्द्र—क्या हुआ वैद्यनाथ ?

वैद्य—यह ठीक कहता है, उसे चण्डाल भूत लगा है।

उपेन्द्र—क्यो अवधूत, तुम चुड़ैलसे उसका पीछा छुड़ा सकते हो ?

अव—बड़ी जबरदस्त चुड़ैल है। कामरूप कामाक्षासे डाइन बुलानी पड़ेगी।

वैद्य—क्या तुम झाड़ फूंक नही करते ?

अव—नही, वह बड़ी जबरदस्त है, वह मेरे ही सिर पर सवार हो जायगी।

उपेन्द्र—मन्मथ तुम जाओ।

मन्मथ—चलिये अवधूतजी।

उपेन्द्र—इन्हे रहने दो।

(मन्मथका प्रस्थान)

उपेन्द्र—अवधूत, तो क्या तुम उस चुड़ैलको नहीं छुड़ा सकते ?

अव—वह इस पार तो नहीं छोड़ती। गङ्गापार जन्तर मन्तर करना पड़ता है तब कहीं छोड़ती है।

उपेन्द्र—(वैद्यनाथसे) कुछ सुना ?

वैद्य—सुन चुका ।

उपेन्द्र—बताओ अब क्या करूं ?

वैद्य—लगाम खीचनेसे तो लौटेगा नही , जरा ढीली रहने देनी होगी ।

उपेन्द्र—इसीसे मै कुछ बोला नही । मैने सोचा कि थोडा घूम फिर ले । पर उसे जो शराबका चस्का लग गया है—अब खैर नही ! इसी बीचमे उसने पचीस हजार रुपये उड़ा डाले ।

वैद्य—डबल डबल्यू—(Woman and wine) * ऐसी वैसी चीज नही है ।

अव—हाँ, ये अस्मानपर चढ़ा कर मारती है ।

वैद्य—तुम चुड़ैलको छुड़ा नही सकते ? तुम कैसे अवधूत हो जी ?

अव—उस चुड़ैलको चुड़ैल ही छुड़ा सकती है । भूतप्रेत तो मन्तरसे भाग जाते है ।

उपेन्द्र—क्या किया जाय ? पॉच सौ रुपये महीना लेता है, फिर भी पूरा नहीं पड़ता । उसका ऐसा कौनसा खर्च है ?

वैद्य—खर्चकी भली पूछी ? खर्च करनेमे क्या कुछ देर लगती है ? अपनी जायदाद मेरे हवाले करके देख लो कि दो तीन महीनेके अन्दर ही सब फूंक ताप कर दिवालिया होकर जेल जाता हूं या नही ? रातको दो चार जनोको बुलाकर

* वेश्या और शराब ।

माल चावना या पण्डितोंसे गपशप कर उन्हे रुपया सवा रुपया देना दूसरी बात है। एक नामी रण्डीको नीलाममे बोली बोलकर लेनेमे एक ही रातमें दस हजार रुपये लग जाते है। है हिम्मत? तो कहो—हीरू जैसे एक दो दल्ले ठीक किये देता हूं।

उपेन्द्र—अच्छा तो तुम एक चुड़ैल ठीक करो।

अव—आठो गॉठ कुम्मैत कोई चुड़ैल मिले तब तो। इस चुड़ैलसे पीछा वैसी चुड़ैल छुड़ा सकती है और किसीकी ताकत नही है।

वैद्य—यह नशेकी झोंकमे कहता है ठीक। सुना है कि, तुम्हारे हाथमे बहुतसी परियॉ हैं, वे क्या कुछ नहीं कर सकती?

अव—अरे बापरे! परियॉ अपने झुण्डमे ले उड़ेंगी—ईडन गार्डनकी सैर करावेंगी।

उपेन्द्र—देखो कभी सोचता हूं कि उसे जुदा कर दूं, फिर सोचता हूं, आज अलग कर दूंगा तो कल ही भिखारी हो जायगा।

अव—उस चुड़ैलको न खिलानेसे भी काम न बनेगा, सिर पर चढ़ बैठेगी। हॉ, धतूरेकी जड़ या दुपहरिया बेलका बीज मिलता—पर नही—रोगीको गङ्गापर पहुंचाये बिना और कोई उपाय नही है। वह गङ्गा पार कर सकेगी? पुल तो है।

उपेन्द्र—देखो, यह बात बुरी नही कहता, उसे कही बाहर घुमाने ले जाऊं?

वैद्य—वह जायगा ?

अव—वह थोड़े ही जाना चाहेगा—उसे कुप्पेमें भरकर ले जाना होगा।

उपेन्द्र—वह चुड़ैल कौन है, पता लग सके तो कुछ खर्चा भी करूं।

वैद्य—क्यो अवधूत, वह किस पेड़की चुड़ैल है, पता लगा सकते हो ?

अव—यह मेरा काम नही है, वह भुतहा चण्डाल कर सकता है। उस चुडैलके यहाँ एक तिनपहरिया भूत रहता है, वही उसे नचाता है। उसे अगर भेंटपूजासे वशमे कर सको तो वह राह पर आ भी सकती है।

वैद्य—अवधूत, देखता हूं तुम तो सभी बातें जानते हो।

अव—जानता क्यों नहीं—पिछले जनममें जब मैं राजकुमार था तब ऐसी ही चुड़ैलके फेरमें पड़ गया था, देखता कि आधीरात होते ही वह भूत आकर सीटी बजाता और वह झटपट "बाबा बाबा" कहकर दौड़ जाती।

वैद्य—देखो, इसका दिमाग तो खराब हैं पर कहता है पतेकी। इन वेश्याओंके एक एक यार भी हुआ करते हैं। उस सालेको कुछ देकर वशमे कर सको तो काम बन भी सकता है।

अव—उं हूं—उसे गंगा पार पहुंचाना होगा—गंगा पार।

वैद्य—अब मै चला।

उपेन्द्र—जाते कहाँ हो—चलो आज साथ ही खायँ।

वैद्य—नहीं, मैं खा चुका हूं। (प्रस्थान)

उपेन्द्र—चलो अवधूत, तुम राजकुमार होनेसे पहले क्या थे, कह चलो। मै तुम्हारी बाते सुनता चलता हूं।

अव—उस जनममे उल्लू था। जिसकी छतपर जा बैठता उसके घरका मटियामेट हो जाता। नहीं नहीं, यह राजकुमार होनेके बादके जनमकी बात है।

उपेन्द्र—अवधूत, तुम्हे त्वरितानन्द * भेजा था, मिला न?

अव—हाँ, हाँ, दो सेर गोलानन्द † भी था।

(दोनोंका प्रस्थान)

चौथा दृश्य

कुमुदिनीका कमरा।

सतीश, बिहारी, प्रमथ और कुमुदिनी।

सतीश—अभी तक बाबू आये नही?

कुमुद—आज नहीं आवेंगे। मुझे घर पर जानेका हुक्म हुआ है।

सतीश—जाओगी?

कुमुद—अजी राम कहो। मैंने शरत्को बुलवा भेजा है, वह आवेगा।

प्रमथ—ऐसा काम न करो, भण्डा फूट जायगा। उस दिन आधी

---

* गांजा। † बगला मिठाई—रसगुल्ला।

रातको वह अपनी चाभी लेने आ ही पहुंचा था—जानती तो हो !

कुमुद—मैं क्या बिना सोचे समझे शरत्‌को बुलाती हूं ? सदर दरवाजा बन्द रहता है, उसके आनेकी आहट पाते ही मै शरत्‌को किरायेदारके घर भेज देती हूं ।

प्रमथ—मेरे कुछ गहने बिकवा दो, इसमे तुम्हारा ही तो लाभ है ।

कुमुद—मैंने अपनी तरफसे क्या कोई बात उठा रक्खी है ? मैंने यह कहकर उसे बढ़ावा दिया था कि "शरत्‌की नयी राँड़ मुझे अपना हीरेका झूमर दिखा गयी ।" वह बोला "क्या करूँ, रुपये हाथ नही लगते, भाईसे खटपट चल रही है ।"

प्रमथ—चला करे, इसमे तुम्हारा क्या ? रुपयेकी क्या कमी है ? रुक्का लिख दे, कितने ही महाजन रुपये देनेको तैयार बैठे है । यह मौका हाथसे जाने न दो, कुछ हथिया लो, समझीं ? मणि कीर्त्तनवाली अपनी लड़की फूलीको उससे भिड़ाना चाहती है । वह माँका कहना नहीं मानती, किसी मर्दको अपने पास फटकने नहीं देती, नही तो बाबू कभीका तुम्हारे हाथसे निकल गया होता ।

कुमुद—मुझे इसकी परवा नही । अब मै मन मार कर नही रह सकती । रोजकी किचकिच—यार दोस्तोंके आने पर उनसे दो बात नहीं कर सकती, तुम लोग मुंह ताकते रहते हो ।

बिहारी—इतनी उतावली क्यो होती हो ? उससे जो कुछ ऐंठते

बने ऐंठ लो। फिर आजकल तो वह रोज ही रातको दस बजेके बाद चला जाता है, तुम्हें रुकावट किस बातकी है?

कुमुद—अब वह दस बजे नही जाता। एक एक दो दो बजे तक डटा रहता है, शरत् आ आकर लौट जाता है और मुझ पर लाल पीला होता है।

बिहारी—तुमसे कहते नही बनता कि तुमने ही तो शिकार फंसा-कर मुझे दिया है, उससे कुछ ऐंठ तो लूं।

सतीश—सुना है, बाबू शराब छोड़नेवाले है?

बिहारी—ऐसे बहुत देखे है! कुमुद बीबीके गिलास देते ही बस शराब छूट जायगी!

कुमुद—नही नहीं, छोड़ना चाहता है तो छोड़ दे। शराब पीते ही वह लड़ने झगड़ने लगता है।

प्रमथ—शराब छोड़ देगा? तब तो तुम उससे और कुछ ले चुकी? शराबकी बदौलत ही तुम्हारी चल रही है, नहीं तो खाली साबुन और कङ्घीपट्टीसे तुम्हारा काम चलता?

कुमुद—बस जाने दे, मानो वह तो साक्षात् कामदेव ही है! चुप रह, शायद वह आ रहा है। बस आते ही बड़बड़ाने लगेगा।

(शैलेन्द्रका प्रवेश)

सतीश—आइये, आइये, इतने लेट (Late) कैसे? बीबी साहबा कहती है, हाजरी काटूंगी।

शैलेन्द्र—तुम्हारे लिये गाड़ी भेजी थी, गयी क्यों नही?

कुमुद—तुम्हारी जैसी मेरी अकल नहीं है—कहाँ जाती? (दोस्तोंसे) देखो जी, मैं इनकी बैठकमे जाती और इनके भाई-भतीजे दरबानसे मुझे गर्दनिया दिलवाते!

शैलेन्द्र—क्या कहा? मुझे भाई-भतीजेकी परवा नही है।

कुमुद—नही तो क्या? डरके मारे प्राण सूखते है और कहते है, मुझे परवा नही है? अगर यही बात है तो जब कोई चीज खरीदनेको कहती हूं तब क्यो कहते हो—मंझले भैया रुपये नही देते। झूठी डींग मारनेमे कुछ लगता थोड़े ही है।

(हीरू घोषाल और शिवू वकीलका प्रवेश)

हीरू—आप विश्वास नही करते, लीजिये, सुनिये शिवू बाबूसे।

शिवू—क्यो बी साहबा, मिजाज तो अच्छा है न?

कुमुद—आपकी मेहरबानी है।

शिवू—हम नाचीजोकी मेहरबानी ही क्या? मेहरबानी तो उसकी चाहिये जिसने तुम्हे रखा है।

हीरू—बस कीजिये—अब कामकी बात हो। मै इन्हे पकड़ लाया हूं, ये अपने मोअक्किलको बैठा कर मेरे साथ चले आये है।

शिवू—जायदाद मिल ही गयी तो क्या रहे तो भाईके हाथमे? यह भी सुना है कि निताई बाबूने कोई दस्तावेज तैयार किया है?

शैलेन्द्र—कैसा दस्तावेज?

शिवू—जो हो, हमलोगोको दिखाये विना कही आँख मूंदकर सही न कर बैठना।

हीरू—साहब इतनी बातोकी क्या जरूरत? इनकी जायदाद इन्हे दिलवा दीजिये न?

शैलेन्द्र—भैया तो कह रहे है।

हीरू—वह कोरा जबानी जमा-खर्च है। छोटे बाबू बिचारे सीधे-सादे आदमी ठहरे इसीसे सच मान बैठे है। वे इतनी बड़ी जायदाद उलट पलट कर रहे है—उनकी तो पाँचों उँगलियाँ घीमे है!

शैलेन्द्र—नही नही, वे तो कह रहे है, मै ही आगापीछा कर रहा हूं। बड़े झञ्झटका काम है, मेरे किये बन्दोबस्त न हो सकेगा।

शिवू—बन्दोबस्त ऐसा कौन सा है? बँधी गत है। आपसे न हो सके तो एक मैनेजर रख लीजिये पेन्शनयापता डिपटी मैजिस्ट्रेट बहुतसे पड़े है। और यह भी सुना है कि दो तीन लाख रुपये बैंकमे डाल रखे है। वह रकम, सच पूछिये तो, जमीनमें गाड़ रखनेके समान ही है। आपको कुछ करना धरना न होगा, आप वह रकम निकाल लीजिये, मैं छत्तीस रुपये सैकडे ब्याज पर लगाये देता हू। बस उसके ब्याजसे आपका आधा हाथखर्च चल जायगा।

शैलेन्द्र—इतने ब्याज पर रुपये लगानेसे मूलसे हाथ धोना पडता

है। भैयाके पास दलाल आया था, इसी लिये उन्होंने उसे साफ जवाब दे दिया।

शिवू—असामी देखकर देने पर रकम डूबनेका खतरा नहीं रहता। किससे रकम वसूल होगी और किससे नहीं, यह मैं समझ लूंगा, आप बैंकसे रुपये तो निकालिये।

शैलेन्द्र—भैया घरू बँटवारा करना चाहते है, आपकी क्या राय है?

शिवू—मेरी राय नहीं है। ऐसा कीजियेगा तो धोखा खाइयेगा।

हीरू—धोखा देनेके लिये ही तो घरमें बैठकर बँटवारा करना चाहते है।

शैलेन्द्र—नही, नहीं, मँझले भैया वैसे नही है।

शिवू—इसीसे अपनी बड़ी भाभीको अपने वशमे कर रखा है। आपके बड़े भाईके मरनेके बादसे आपकी बड़ी भाभीके लाइफ इण्टरेस्टकी आमदनी जमा होती तो उससे एक जायदाद खरीदी जा सकती थी। उनकी बाँतोमे न आइयेगा, घरमे बँटवारा करनेपर राजी मत होइयेगा। अगर राजी ही हों तो किसी वकीलको कागजपत्र दिखा लीजियेगा।

हीरू—आप ही वकील है, आपको छोड़कर और किसे खोजने जायँगे?

शिवू—खैर, इस लिये काम न रुकेगा। पर हाँ, देखना, कही सही कर हाथ न कटा बैठना, पँचनामेपर समझ-बूझकर दस्तखत करना।

शैलेन्द्र—आपको दिखाकर ही उस पर सही करूँगा।

शिवू—अच्छी बात है। मैं जाता हूं, क्लायण्ट (मोअक्किल) बैठा आया हूं।

(प्रस्थान।)

बिहारी—तुमलोगोंका मामला मुकद्मा तो हो चुका, अब हमलोगोकी कचहरी बैठे।

शैलेन्द्र—भाई तुमलोग बैठो, मै जाता हूं। (कुमुदिनीसे) चलो, तैयार हो।

कुमुद—नहीं, मैं गर्दनिया खाने नहीं जाऊँगी।

सतीश—वाह! तुम तो यार अजीब आदमी हो! आप भी चले, साथ ही बीबीको भी ले चले! फिर हम लोग किसे बैठा कर कचहरी करेंगे?

हीरू—कुमुद जाती क्यों नहीं?—बाबू किसी कामसे ही जाते होंगे।

कुमुद—काम क्या खाक है? सिर पर भूत सवार हुआ है। मैं नहीं जाऊँगी।

शैलेन्द्र—तुम्हे चलना होगा।

कुमुद—मै चली, तुम बका करो।

(कुमुदिनीका प्रस्थान।)

शैलेन्द्र—कहाँ जाती हो?

(पीछे पीछे शैलेन्द्रका प्रस्थान।)

हीरू—देखो, उसे समझाकर भेज दो, दिल्लगी रहेगी।

सतीश—उसने आज शरतको बुलवा भेजा है, वह न जायगी।

हीरू—चलो चलो, समझा बुझाकर भेज दूँ। आज जानेसे रङ्गत आवेगी।

प्रमथ—ठहरो यार, जरा तम्बाकू पी लें।

(हीरू घोषालका प्रस्थान।)

हीरू—हुक्का लिये ही आओ न।

बिहारी—हिरुआ उन्हें भिखारी बनाये बिना न मानेगा!

सतीश—हमलोगोंके ही भिखारी होनेमें क्या कुछ बाकी है? एक दो डिग्री जारी होते ही रहनेका घर भी गया ही समझो?

बिहारी—तुम सँभलकर चलते तो यह नौबत क्यो आती?

सतीश—अच्छा, देखता हूं न तुम कब तक सँभल कर चलते हो? देखो, एक बात सोचता हूं, हमलोगोंका जो होना था वह तो हो गया; यह हमारे साथ क्यों मूँड़ मुड़ावे? अगर यह कुछ दिन बना रहा तो हमारे दिन मजेमें कट जायँगे।

बिहारी—अरे हमारा क्या बिगड़ता है? शहरमें छैलोंका अकाल है? बहुतसे छैले मिलेंगे।

सतीश—बिचारा सीधा-सादा आदमी है।

प्रमथ—हमारा क्या बनता बिगड़ता है! सोचा था, झूमड़ उसके गले मढूंगा, खैर, कल देखा जायगा।

(सबका प्रस्थान।)

पाँचवाँ दृश्य

गङ्गाका किनारा।

फूली।

गीत—कान्हड़ा।

दीनबन्धु दीननाथ दीनन हितकारी।
करुनामय अति उदार, लेत भक्तजन उबार,
सुनि तुम उनकी पुकार, तीन तापहारी।
जन्म मरन दुःख घोर, काम क्रोध मोह जोर,
रैन दिवस साँझ भोर, छायी अँधियारी।
यह भवसागर अपार, सूझत नही वार पार,
केवल तव पद अधार, सुनिये गिरधारी!

(मणि कीर्त्तनवालीका प्रवेश।)

मणि—हूं—यहाँ आकर मन्मथका बनाया गीत गाया जा रहा है। देख, अब भी समझ जा, जिद मत कर। आज जो तू किसीको घरमें नहीं आने देती,तो क्या तुझे कोई राजकुमार आकर ब्याह ले जायगा! अहा! मानों सावित्रीने आकर जनम लिया है, जनम भर सती-सतवन्ती बनी रहेगी!

फूली—अच्छा, अच्छा, तू जा—

मणि—अच्छा, तू ऐसा क्यो करती है? तुझे मल्लिकोंके घर कीर्त्तन कराने ले गयी थी। हीरू घोषाल कहता था, उस घरानेका एक लड़का तूझे एक मुश्त चार हजार रुपये और दो सौ रुपये महीना देना चाहता है। कई दिनोंसे वह हमारे घरके सामने जोड़ी पर चक्कर काट रहा है।

फूली—माँ, तू गङ्गा किनारे क्या कह रही है? तू कीर्त्तन करती है, कृष्णनाम लेती है और अपनी जायी लड़कीसे ऐसी बातें कह रही है! तू ही तो लोगोंमे बैठकर गाती है कि व्यभिचारिणीका उद्धार नहीं है-और तू ही गङ्गा-किनारे खड़ी होकर यह सब बातें कह रही है? जा, मैं घर घर गाकर भीख माँग खाऊँगी। तू अगर फिर ऐसी बातें कहेगी तो मै तेरे घर नहीं रहूंगी।

मणि—अरी समझ गयी समझ, मेरी भी कभी यह उमर थी, मन्मथसे लगन लगी है, उससे ब्याह करेगी?

फूली—मेरा ऐसा भाग कहाँ? जिसने बड़ी तपस्या की होगी वही उन्हे वरेगी। मेरा जन्म ही ऐसे कुलमें है कि मैं उनका पैर भी नहीं धो सकती।

मणि—अच्छा, तुझे मल्लिक घरानेका लडका पसन्द नही है तो और भी तो कितने ही चक्कर काट रहे है, उनमेसे ही किसीको घरमे जगह दे और मन्मथको भी बुला सकती है, मैं कुछ नहीं बोलूंगी।

फूली—माँ, तू फिर अगर ऐसी बात कहेगी तो मै गङ्गाजीमे डूब मरूँगी।

मणि—तो रह इसी गङ्गा किनारे, मेरे घरमें मत घुसियो।

फूली—माँ, ऐसी असीस दो कि गङ्गा मैया मुझे स्थान दें।

मणि—हाँ, हाँ, ऐसा ढोंग मै भी जानती हूं। मुझे सिखलानेकी जरूरत नहीं। मेरा कहना मान तो घर चल, नहीं तो यही रह और भीख माँग कर खा—मै तुझे घरमे नही घुसने दूँगी।

(प्रस्थान।)

फूली—(गङ्गाजीसे) माँ, इस पृथ्वीपर क्या मुझे कही जगह न मिलेगी? नहीं मिले तो तू ही जगह दीजियो।

(एक बुड़ियाको साथ लिये मन्मथका प्रवेश।)

मन्मथ—कौन फूली! देख, यह बुढ़िया गाड़ीके नीचे दब गयी थी, दाहिना हाथ बिलकुल कट गया है। इसे अस्पताल ले चलना होगा। तू इसे लेकर पेड़के नीचे बैठ, मै गाड़ी लिये आता हूं।

(सबका प्रस्थान।)

छठा दृश्य

सरोजिनीका कमरा।

सरोजिनी और शैलेन्द्र।

सरो—तुम फिर आज शराब पी कर आये?

शैलेन्द्र—जरा सी पी है, आओ यार—

(पुरुषवेशी कुमुदिनीका प्रवेश।)

देखो, कैसा मेरा यार है, इससे मुहब्बत सीखो, नहीं तो खाली रोने धोनेसे मै घर थोड़े ही रहनेका हूं। हमलोग आशिक मिजाज हैं, इश्क मुहब्बत चाहिये—समझी?

सरो—हे भगवान! यह कौन है जी?

शैलेन्द्र—नजर उठा कर देखो कौन है, तुम्हे खा थोड़े ही डालेगा! देखो तो कैसा छैल छबीला है। जॅचता है?

सरो—घरके अन्दर किसे ले आये?

कुमुद—क्यो जान, मै तुम्हारी नजरोमे जॅचा नही? तुम्हारा मालिक घर नहीं रहता, मैं दिनरात तुम्हें छातीसे लगाये रक्खूंगा।

सरो—यह क्या? यह तो पास आ रहा है!

(घूॅघट काढ कर एक बगल होना।)

कुमुद—घूँघट क्यो काढ़ लिया जान? घूँघट खोल हँस कर दो बातें तो करो।

(कुमुदिनीका नृत्यगीत।)

पीलू।

अद्भुत नारिकी मुस्कान।
सुधा-गरल यामें हैं दोनों याको बहुत प्रमान।
जीयत बचत है कोऊ जासों तजत कोउ है प्रान।
जो जानत हम समझत नारिन सो है निपट नदान
लागी नज़र नारिमों जाकी सो फिर करै कहा न?

कुमुद—प्यारी, पैर पकड़ता हूं, मान मत करो, घूँघट खोलो, एक बोसा दो।

(आलिङ्गन करनेको बढ़ना।)

सरो—(हटकर) जीजी—जीजी, जल्दी आना। खबरदार छोकरे, पास मत आना। (चिल्लाकर) ओ जीजी—जीजी—

शैलेन्द्र—चुप रह, यह कुमुद है, तुम्हीने तो लिवा लानेको कहा था? औरत है दिखाई नहीं देता?

नेपथ्यमें विरजा—क्या है री—क्या है री—

सरो—तुम इसे ले जाओ, वे आ रही हैं।

(विरजा और तरङ्गिणीका प्रवेश।)

शैलेन्द्र—(आप ही आप) सारा मजा किरकिरा कर दिया!

विरजा—अरे यह कौन है? कौन है रे तू? अरी क्षमा, मँझले

बाबूसे जाकर कह तो। झाडूसे तेरा मुंह बिगाड़ दूँगी जानता है ?

शैलेन्द्र—भाभी, कहे देता हूं जबान सँभाल कर बातें करो।

कुमुद—बड़ी झाडू मारनेवाली! देखती हूं न कैसे झाडू मारती है? मैं इस घरमे थूकने भी नहीं आती। पैर पकड़ कर लाया तब आयी हूं।

विरजा—यह कौन है! यह तो कोई औरत है ?

शैलेन्द्र—औरत नहीं तो क्या मर्द है ? और अगर मै अपने यार दोस्तोंको ही अपनी स्त्रीसे मुलाकात कराने लाऊँ तो इसमें किसीका क्या?

विरजा—अरे सत्यानासी लड़के, इस खानगीको तू मर्द बना करके अन्दर ले आया? तेरी अकल मारी गयी? शर्म-हया बिलकुल नही रही? बिलकुल ही बिगड़ गया ?

कुमुद—क्या कहा मै खानगी हूं? शैल, बस हो चुका। मुझे नीचा दिखाने लाया है? इस मुंहझौंसीसे मुझे गालियाँ दिलवा रहा है ?

तरङ्गिणी—अरे बाप रे!—इसकी ढिठाई तो देखो !

विरजा—क्षमा, झाडू मार कर इस राँडको निकाल दे।

कुमुद—देखती हूं न कौन झाडू मारता है। कालूकी माँसे कह कर झाडूका मजा चखाये देती हू। शैल, घरमे ला कर तूने मुझे नीचा दिखाया! हाय! मेरे भाग्यमे यह बदा था ! (सिर धुननेका भाव।)

शैलेन्द्र—(रोककर) ठहर—ठहर, तेरे पैर पड़ता हूं, ठहर जा, मैं इस गालीगलौजका मजा चखाये देता हूं। (विरजा और तरङ्गिणीसे) मेरे कमरेसे तुम सब निकल जाओ। महल्ले महल्ले घूमती है, गङ्गा नहाने जाती है, इन्हे बड़ी शर्म हया है !

तरङ्गिणी—छोटे जने, जीजीको क्या कह रहे हो ?

शैलेन्द्र—चलो, हटो, अपनी बुजुर्गी रहने दो। मणि कीर्त्तनवाली-की लड़की फुलीको ला कर मौज उड़ायी जाती है, तब कोई चूं तक नहीं करता। घरके अन्दर दस जनोंके सामने वह नाचती गाती है तब सबकी जवान बन्द रहती है !

विरजा—अरे सत्यानासी, जो मनमे आता है, बक रहा है। चल दूर हो चुडैल।

कुमुद—देखती हूं न कौन दूर होता—मै विना देखे नही जाने की। मै किसीकी लौंडी नही हूं। उसके हाथ जोडने पर यहां आयी हूं।

विरजा—(शैलेन्द्रसे) यह सब तू खड़ा खड़ा सुन रहा है, मुंह पर तमाचा नहीं लगाता ?

शैलेन्द्र—खबरदार !—भली आदमी हो तो यहाँसे निकल जाओ, नहीं तो हाथ पकड़कर निकाल दूंगा।

विरजा—हा भगवान, यह भी भागमे लिखा था !

(उपेन्द्रका प्रवेश।)

उपेन्द्र—यह क्या हो रहा है ?

शैलेन्द्र—कुछ नहीं, आप यहाँ क्यों आये ?

विरजा—बाबू साहब घरमें खानगी लाये है और हम सबको निकाले देते है ।

उपन्द्र—शैलेन, आखिर यहाँतक नौबत पहुँची ? मुझे न मानो पर जिसने दूध पिलाकर तुम्हें पाला पोसा है, उससे कह रहे हो—निकल जाओ ! क्या तुम सब भूल गये ? अपना कुल, मान, मर्यादा, भाईका स्नेह, माँके समान भावज—सबको भूल गये ? तुम्हारा इतना अधःपात हुआ ? गये गुजरोंमे भी ऐसा कोई न होगा जो माँके समान बड़ी भावजसे कहे कि निकल जाओ—बड़े भाईको इस ढिठाईसे जवाब दे—साध्वी स्त्रीसे कुलटाको मिलाने लावे ! छी छी तुमसे और क्या कहूं—मरनेको जी चाहता है ।

शैलेन—(अस्पष्ट स्वरसे) फिर जो घरमे आ सकती है, वह परदादी होगी !

(कुमदिनी और उसके पीछे पीछे शैलेन्द्रका प्रस्थान ।)

नेपथ्यमे कुमुदिनी—खबरदार ! मुझे छूना मत,—अब मेरे घर आया तो जूते खायगा ।

नेपथ्यमे शैलेन्द्र—ठहर, ठहर, कसूर हुआ, माफ करो—

उपेन्द्र—भाभी, भाग फूट गये ! अब हम लोग इस घरमें क्यो रहें ? वही यहाँ रहे, चलो हम लोग कही चल दें ।

भगवान मुझे मौत भी नहीं देता। भैया, क्या यही देखनेको मेरे हाथ इसे सौंप गये थे? सारी इज्जत धूलमे मिल गयी—पुरखोकी कीर्त्ति मिट गयी, धिक्कार है मेरे जीवनको।

विरजा— तुम क्या कह रहे हो? मैं अधीर नही हुई और तुम इतने अधीर हो गये? तुम किससे कह रहे हो? किससे रूठ रहे हो? वह बिगड़ गया, जाने दो। वह अलग होकर जो खुशी आवे सो करे। वह बरबाद हो गया, इससे ठाकुरसेवा, दान-पुण्य बन्द कर दोगे? घरसे चले जाओगे? क्यो—क्या हुआ है? उसे डूबने दो—वह अपने करमका फल भोगे. तुम कल चार जनोको बुलाकर कोई बन्दोबस्त करो।

उपेन्द्र—बन्दोबस्त क्या करना है? अब मै बरदाश्त नही कर सकता। घर धूलमे मिल जाय, बड़ोका नाम मिट जाय, जायदाद मिटियामेट हो जाय, रुपये-पैसे ऐरे गैरे खा जायॅ—अब मै उसका मुंह न देखूँगा। जो भागमे बदा है सो होगा।

विरजा—मॅझली बहू, इन्हें भीतर ले जा।

उपेन्द्र—ओह! इतनी ढिठाई! किसीकी परवा नही।

तरङ्गिणी—झूठ मूठ क्यो सिर खपा रहे हो? रातको नीद न आवेगी—चलो सोओ।

उपेन्द्र—सो चुका। (तरङ्गिणी और उपेन्द्रका प्रस्थान।)

सरोजिनी—जीजी, मेरी क्या दशा होगी ?

विरजा—तुमलोग अलग कर दोगी, तो मुझे कहाँ ठिकाना है ?

विरजा—छोटी बहू, किसे अलग करूँगी ? जिस दिन मेरे प्राण निकलेंगे उस दिन भी शैल मेरे प्राणोंसे जुदा होगा या नहीं सन्देह है। तू क्या समझती है कि मै शैलेनपर गुस्से हुई हूं ? उसने नशेकी झोंकमे निकल जानेको कहा, अगर सचमुच ही वह मुझे गर्दनिया देता तोभी क्या मैं उसे मनसे हटा सकती थी ? तू नहीं जानती, मैंने उसे कैसे पाला पोसा है। भगवान, तूने यह क्या किया ! जो मेरा शैलेन मेरे खिलाये बिना खा नहीं सकता था—भाईके बिगड़ने पर मेरी आँचलमे मुंह छिपा कर रोता था, वही मेरा शैलेन ऐसा क्यो हो गया ?

सरोजिनी—जीजी, उनका कोई कसूर नही है, मैंने ही बिना सोचे समझे उनसे उसे लिवा लानेको कहा था। रोज घरसे चले जाते है, मैंने समझा था कि उसे लाने पर वे घरमे रहेगे। जीजी, मुझे माफ करो। यहाँ तक नौबत पहुंचेगी यह मैं नही जानती थी। मर्द समझ कर मैं चला उठी थी।

बिरजा—बेटी, इसमे तेरा क्या दोष है ? तू लक्ष्मी है, तूने अच्छा ही किया। रो मत।

सरोजिनी—जीजी, क्या होगा ?

बिरजा—भगवानको क्या यही मञ्जूर है ? वह सुधर जायगा—सोच मत कर, चल, मेरे कमरेमे चल।

दूसरा अङ्क

पहला दृश्य

उपेन्द्रके मकानका बाहरी हिस्सा।

उपेन्द्र, निताई, शैलेन्द्र और नीरद।

शैलेन्द्र—निताई बाबू, आप भैयासे कहिये वे मुझे क्षमा करें, मै बड़ा हो गया तो क्या, बुद्धिमे बड़ा नही हुआ। लड़कपनमे मै जैसा नासमझ और शैतान था, अब भी वैसा ही हूं। लड़कपनमे उन्हे न जाने कितनी कहनी अनकहनी कही होगी, तव तो उन्होने क्षमा किया, अबक्यो मुझे जुदा करना चाहते है? काम काज तो मुझे सिखाया नही, जायदाद मिलने पर उसे मै कैसे रख सकूंगा?

निताई अच्छी बात है। जायदादका बन्दोबस्त अगर तुम नहीं कर सकते तो भाई पर उसका भार छोड़ दो और तुम उनके साथ रह कर धीरे धीरे सब काम सीखो। तुम लोग जुदा नही होते, किसका कितना हिस्सा है यह जान लेनेमें बुराई नही है। शैलेन, मै तुमलोगोका हितू हूं, तुम्हारे भलेकी कह रहा हूं, तुमलोग जिस तरह एक साथ रहते हो उसी तरह रहोगे।

शैलेन—बँटवारा हुए बिना नहीं चल सकता ?

उपेन्द्र—नहीं, तुम्हारा कितना हिस्सा है, यह तुम समझ लो। तुम खर्च करते हो तो मै रोकता हूं; तुम समझते नहीं, पर तुम्हारे ही भलेके लिये रोकता हूं। चार जनोके कान भरनेपर शायद तुम समझते होगे कि इसमें मेरा कुछ लाभ है।

शैलेन्द्र—नही भैया, मै कभी ऐसा नहीं समझता। खर्चके लिये पैसा नहीं मिलनेपर लड़कपनमे जिस तरह रोता धोता और झगड़ता था, उसी तरह अब भी झगड़ता हूं। हॉ, बेहोशीमे मैंने क्या कह डाला, यह मुझे याद नही है। मैं बिगड़ गया, मुझे सुधार लो, नहीं तो मेरा सत्यानास हो जायगा। मुझे भले बुरेकी पहचान नही है, जायदाद हाथ लगते ही दो दिनमे ही सब हड़प जायगे।

उपेन्द्र—तुम्हे जानकारी हो इसी लिये नीरद और तुमपर जायदादकी देख-भालका भार दिया था, पर तुम समझ बूझकर कहॉ चले ?

शैलेन्द्र—निताई बाबू, आप कहिये, ये मुझे कामकाज सिखावें, नीरदसे मेरी पटरी नही बैठती। वह बात बातमे बड़प्पन दिखाता है जिससे मेरा सारा शरीर जल उठता है।

नीरद क्यों चाचाजी, मैने तो कभी आपका सामना नहीं किया, फिर आप बाबूजीसे क्यो झूठी शिकायत कर रहे है ?

निताई—नीरद, तुम यहॉसे जाओ।

नीरद्—(उठकर) अच्छा मैं चला जाता हूं, चाचाजी झूठ बोल रहे हैं।—बाबूजीने जो नियम बना दिये थे, उन्हींके अनुसार मैंने चलना चाहा—बस यही मेरा अपराध है। बाबूजीके पास मुझे ही हिसाब-किताब लेकर जाना पड़ता था, ये थोड़े ही जाते थे।

शैलेन्द्र—नीरद, बैठ जा, मैंने तेरी शिकायत नही की। तू अगर मुझसे झगड़ता या गालियाँ देता तो मै बुरा नही मानता। मै कहता—"मुझे इतने रुपये और चाहिये, इसके बिना मेरा काम नही चल सकता सकता,तू भैयासे कहकर दिलवा दे।" पर तू "न्याय-अन्याय उचित-अनुचित" कह कर उपदेश देता था बस इसीसे मेरा—

नीरद्—इसीसे आप कहते—"तेरे बापकी जमा नही खर्च करता हू"।

शैलेन्द्र—सच कहता है, मैने यह बात कही है? फिर डरते डरते मै तुझसे रुपये क्यो माँगता?

नीरद्—सच झूठ मै नहीं जानता, आप लोग समझिये। (प्रस्थान)

शैलेन्द्र—सुनी आपने उसकी बातें? बस इसीसे मेरे शरीरमें आग लग जाती है।

उपेन्द्र—मै समझ गया कि तुम दोनोमे बनेगी नही; पर मै तो सदा बैठा नहीं रहूंगा? तुम अपना हिस्सा अलग कर लो।

शैलेन्द्र—मुझे क्या करना होगा?

निताई—मथुरा बाबू, कुञ्ज बाबू और भवानी बाबू इन तीनोको

तुम दोनों भाई पञ्च मानो; ये लोग तुमलोगोंकी जायदादका बँटवारा कर देंगे।

शैलेन्द्र—अगर इसके विना नहीं चलता हो तो करवा दीजिये।

निताई—अच्छा तो यह पंचनामा लेकर पढ़ जाओ, इसपर जो कुछ कहना हो कह सकते हो।

शैलेन्द्र—मुझे कुछ कहना नहीं है। मैं यह सब क्या जानूं? दीजिये, मै सही किये देता हू। (दस्तखत करना)

निताई—देखना, अब कहीं राय मत बदल बैठना। इसमे सबकी भलाई है। यह तो देख लिया कि तुम्हारी भतीजेसे बनती नही, फिर तुम्हारे भाईके शरीरका भी क्या ठिकाना है? और हजार हो, नीरद उनका लड़का है, और तुम्हारा चरित्र कुछ बिगड़ गया है। सम्भव है कि, नीरदकी वात पर ही वे विश्वास करे—यह भी सम्भव है कि तुम्हे कोई बात कह बैठे—तुम सीधे सादे आदमी ठहरे, चार जनोंकी बातोमें आकर कहीं किसी वकीलके पाले पड़ गये तो बस जायदाद बरबाद हो जायगी। तुम नहीं जानते कि कितने ही शैतान तुम्हारी जायदाद पर दाँत लगाये बैठे है।

शैलेन्द्र—भैया, आप चाहे जो करें, पर मुझे बिगाना न समझियेगा।

उपेन्द्र—तुम्हे बिगाना समझूंगा? तुम क्यों ऐसे हो गये? क्यो तुमने यह जहर पीना सीखा? घरकी लक्ष्मीको छोड़ क्यो ऐसे अनाचारी हुए? तुम्हे बिगाना समझूंगा?—शैलेन—शैलेन, तुम जानते नही, तुम मेरे कौन हो? स्त्री-पुत्र एक ओर,

सर्वस्व एक ओर, और तुम एक ओर। तुमसे जुदा होऊँगा—तुमसे जुदा होऊँगा!

निताई—यह क्या—यह क्या उपेन्द्र, ठंढे हो।

उपेन्द्र—शैलेन, शैलेन, मेरा सिर चकरा रहा है। मै चला—मेरा दम घुटा जा रहा है।

(उपेन्द्रका प्रस्थान और पीछे पीछे शैलेन्द्रका जाना।)

(नेपथ्यमे उपेन्द्रके गिरनेका शब्द।)

नेपथ्यमे शैलेन्द्र—अरे जल्दी पानी लाओ—जल्दी पानी लाओ। निताई बाबू, जल्दी आइये—भैया गिर पड़े है।

(निताईका शीघ्रतासे प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

कुमुदिनीका घर।

हीरू, सतीश और शिबू वकील।

हीरू—लो, सारा मामला ही बिगड़ गया! निनैया साळेने सब चौपट कर दिया!

सतीश—क्यों, उसने गलेपर छुरी नहीं चलने दी?

हीरू—इस समय हंसी ठट्ठा रहने दो। छ महीने मेहनत करके उसे राहपर लाया था, निनैयाने सब मिट्टी कर दिया।

शिबू—क्या—क्या—हुआ क्या—कहो भी तो सही?

हीरू—घरमे ही बैठकर बॅटवारा होगा। बेवकूफको इतना समझाया कि निनैयाकी बातमे मत आना। पर उसने नही माना।

सतीश—शिबू बाबूकी शरण लो, इन्होने छुरेपर सान चढ़ा रखी है।

शिबू—क्या कहा—मैंने छुरेपर सान चढ़ा रखी है?

सतीश—तो क्या छुरा निकाल रखा है? मेरे समान ही उसे जबह करोगे?

शिबू—मैं हूं इसीसे तुम वारण्ट पर पकडे नहीं गये, सात सात वारण्ट रुकवा रखे है।

सतीश—है—कहते क्या हो! ऐसी बात है? तो क्या अपने'बिलके' लिये एक साथ ही वारण्ट निकलवाओगे?

हीरू—अरे जाने भी दो—कामकी बात करने दो। (शिबूसे) शिबू बाबू, अभी उसकी बात पर ध्यान न दीजिये, अब उपाय क्या है सो बताइये। आपसमे ही बॅटवारा होने लगा है!

शिबू—हूं—लड़का समझकर उसपर हाथ साफ करेंगे और क्या!

सतीश—क्यों शिबू बाबू, आज तुम्हें नींद आवेगी? हॉ, एक उपाय है हीरू! हिस्सापत्ती हो जाय तब जायदाद बढ़ानेके लिये शिबूबाबूके हवाले कर देना, ये मेरी जायदादके समान ही बढ़ा देंगे!

शिबू—तीन तीन बन्धकी मामलोके रुपये वसूल कर दिये है!

सतीश—हॉ, इसमें क्या सन्देह है? रुपये तो वसूल कर दिये पर

तुम्हारे लिये खर्चा कितना पड़ा? अब उधारउधूर कर रुपये तो मुझे ही देने होंगे।

शिबू—तुमसे आधा खर्च भी तो नहीं लिया, जो पाकेटसे किया वही लिया।

सतीश—और शैलेनको जायदादको मिलने पर तो आधा भी नही लोगे? चौथाई या दो आना लोगे, क्यो?

शिबू—(आपही आप) ठहरो बचाजी, तुम्हे देख लेता हूं।

सतीश—क्या सोच रहे है? मेरा जो होना था सो हो गया! अब दिवालियोमे नाम लिखाऊँगा।

(कुमुदिनीका प्रवेश।)

हीरू—क्यो, नौकर क्यो आया था?

कुमुद—बाबूकी चिट्ठी आयी है कि आज नही आऊँगा। सिर फोड़नेको जी चाहता है।

सतीश—तो रोओगी क्या? आँखोंमे मिर्च डाल दूँ या शरतको खबर दूँ?

कुमुद—चलो, हर घड़ी दिल्लगी अच्छी नही लगती। आज तीन दिनसे मैंने हीरेका झूमर अपने पास रख छोड़ा है, प्रमथ बिचारा दामके लिये फेरा लगा रहा है। देखिये तो शिबू बाबू, भलेमानससे वादा कर झूठा बनना पड़ता है!

सतीश—इसमे क्या सन्देह! तुम्हारी जातमें वादेके खिलाफ होनेकी गुञ्जाइश ही नहीं है! सत्य भङ्ग हुआ! झूठा बनना पड़ा!

हीरू—क्यो—बाबू क्यो न आवेंगे?

कुमुद—उनके भाईका दिमाग खराब हो गया है। हुआ है तो इसमें किसीका क्या? रुपये तो भेज दिये होते!

सतीश—ओ. बड़ा भारी अन्याय है!

हीरू—शिबू बाबू, मैं चला: देखूं कहाँ तक नौबत पहुंची है। उसे लौटानेकी चेष्टा करता हूं। अपने निताईकी अकल तो देखिये! वह क्यों नहीं मँझलेकी ही तरफ रहता? आपको दो पैसे मिले यह उससे देखा नहीं जाता। वह दूसरेकी भलाई देख नहीं सकता।

शिबू—जो समझता नहीं, उसके लिये क्या किया जाय? अकेला ही खाना चाहता है, खाय, मामला चलने पर जो मिलता अब उसका चौथाई भी नहीं मिलनेका!

हीरू—बेवकूफ है!—

सतीश—गधा है—गधा! इतना बड़ा शिकार हाथ लगा है सब लोग बाँटकर खाना नहीं चाहते!

हीरू—मैं चला। जो कुछ बात होगी आपके यहाँ आकर कहूंगा।

शिबू—मेरी गाड़ी पर ही चलो। (धीरेसे) घबराओ मत, जब आग लगी है, तब धधकेगी ही। तुम नीरदको हाथमे रखो, वह पक्का है, दो दिनमे ही चिढ़ा देगा।

(हीरू और शिबू वकीलका प्रस्थान।)

सतीश—अब सोच किस बातका है? मैं जाता हूं, शरतको भेजे देता हूं।

कुमुद—उस दिन वह फिर बिगड़ कर चला गया। बाबू बहुत रात तक मेरे यहाँ थे, वह आकर लौट गया।

सतीश—उसे अभी भेजे देता हूं। अच्छा तुम मेरी एक बात मानोगी?

कुमुद—क्या?

सतीश—शरतको बुलवाओ या और चाहे जो करो, वह उसकी आँख बचाकर ही चलेगा। पर तुम्हारे हाथ मालदार असामी लगा है, उससे मजेमें माल चीर सकती हो, दूसरोंसे उसे बरबाद मत कराओ, शिबू और हीरूसे शैलेनकी खट-पट करा दो। तुमसे जो ऐंठते बने ऐंठो, दूसरे क्यों खाय? इसमें तुम्हरा क्या फायदा है?

कुमुद—कैसे खटपट कराऊँ? हीरू शरतकी सब बातें जानता है।

सतीश—तुम शैलेनसे कहना कि, हीरू मुझे शिबू वकीलसे फसाना चाहता है।

कुमुद—अरे, हीरू सब कह देगा।

सतीश—तुम्हारे यह कहने पर शैलेन हीरूको देखते ही जूता लेकर दौड़ेगा।

कुमुद—तुम जाते हो—चलो, मैं अपने नये नौकरको तुम्हारे साथ किये देती हूं। उसे उसका घर दिखा देना। मैंने एक चिट्ठी लिख रखी है, वह उसे दे आयगा। तुम्हारे हाथ ही चिट्ठी भेजती पर मेरे आदमीके जानेसे उसका गुस्सा उतर जायगा।

(दोनोंका प्रस्थान।)

तीसरा दृश्य

उपेन्द्र बाबूके मकानका सामना।

ड्योढीपर जमादार बैठा हुआ है।

(मन्मथ और पीछे पीछे फूलीका प्रवेश।)

फूली—मन्मथ बाबू —

मन्मथ—क्या है री फूली?

फूली—नये नये गुलदस्ते कैसे बनाते हो, आज सिखानेको कहा था न?

मन्मथ—मैं तुझे एक किताब दूंगा, उसे पढ़ना, अभी जा। मैंने श्यामूको बहुत सी तरकीबें बतायी हैं, उससे कह दूंगा, वह सिखा देगा।

फूली—और एक नया गीत बना देनेको जो कहा था?

मन्मथ—इस समय मै बड़े झंझटमे हूं।

फूली—एक बात और कहने आयी हूं।

मन्मथ—वह फिर कहना। (मन्मथका प्रस्थान।)

फूली—मुझे तुम्हारे मनकी थाह लग जाती है। पाजी हीरू लोगोको बरबाद करता फिरता है, अब तुम लोगोका घर उजाड़नेको लगा है। तुम उसे ठीक करना चाहते हो; जैसे हो, उसे मै इस घरसे निकलवाऊंगी। मुझे भी छलबल आ गया है; तुम मुझ पर बिगड़ना मत।

जमा०—अरी बिट्टी तुम आइउ ? भले आइउ, तुम्हरी खातिर रोटी धरी है। तुम बैठि कै खाय लेओ। खायके तुम्हें एक गीत जरूर सुनावेका पड़ी।

(फूलीका गीत)

प्रभाती

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ।
किलकिलाय उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय,
धाय माय गोद लेत दसरथकी रनियाँ। ठुमकि०
अंचल रज अंग झारि विविध भाँति सों दुलार,
तन मन धन बारि डारि कहत मृदु बनियाँ। ठुमकि०
विद्रुमसे अरुन अधर बोलत मृदु बचन मधुर,
रतिपतिकी छवि समान रघुवर छबि बनियाँ। ठुमकि०
मेवा मोदक रसाल मन भावे सो लेहु लाल,
और लेहु लाल पान कचन घुनघुनियाँ। ठुमकि०

जमा—बिटिया, तुम्हार गीत बड़ा सुन्दर है। गीत सुनिकै हमार मन बहुत खुशी भा है।

फूली—क्यो बाबा, तुम्हारी लड़कीकी बात सच है ?

जमा०—का कहौं बेटी, वही नारायण दीन्हेने और वही बुलाये लिहिन। देखौ बिटिया, तुम्हार चेहरा वइसै है। वहिसै कबौं कबौ आ जावा करौ, काहेसे तुम्हार मुखका देखिकै जीमे धीरज होत है।

फूली—हाँ, आज तुमने पूजाके लिये फूल नहीं तोड़े ?

जा०—[illegible]। सब स्नान करै गेहै, खुली ड्योढ़ी छोड़िकै हम कैसे जाव ?

फूली—वे आ ही रहे होंगे, तुम जाकर फूल तोड़ो, मै यहाँ खड़ी हू। कही दूर तो तुम्हें जाना नहीं है,बाबूके बगीचेमे ही तो तोड़ना है। किसीके आनेपर मै तुम्हें पुकार लूंगी।

जाम०—अच्छा, बेटी बनी रहो—बनी रहो।

(जमादारका प्रस्थान)

(हीरू घोपालका प्रवेश)

हीरू—फूली, सचमुच तेरा भाग फूटा है, नही तो अगर तू मेरी बात मानती तो इस तरह तुझे मारी मारी फिरना न पड़ता—महलमे रहती होती—जोड़ी गाड़ीमे हवा खाती।

फूली—तुम्हारी बात सच है या नहीं, यह मै देखना चाहती हू। एक लड़की है, उसको किसीसे मिला दो न! देखती हूं न उसको तुम क्या बना देते हो ?

हीरू—कौन—कौन—तेरी माँ क्या कोई नयी छोकरी लायी है ? कौन है ?

फूली—इसी जमादारकी लड़की।

हीरू—जमादारकी लड़की ?

फूली—हाँ जी हाँ। देशसे आयी है। मेरी जितनी उमर है। उसका रङ्ग रूप—नाक कान, आँख सब देखने ही बनता है। मैं तो उसकी लौंडी होने लायक भी नही हूं। वह अभी जमादारके पास आयी थी। जमादार मुझसे बोला—

तू अपनी मासे कहकर इसका कोई ठिकाना कर दे सकती है ? मैने कहा—हीरू बाबूसे कहना।

हीरू—चल ! तू झूठ कहती है।

फूली—तुम उससे पूछकर देख लो न मैं सच कहती हूं या झूठ ? मैं उसे भेजे देती हू। वह फूल तोड़ने गया हुआ है। (फूलीका प्रस्थान।)

हीरू—नवीन बाबूका पछैयाँ औरतपर ही झुकाव है। हाथ आवे तब तो।

(कुछ दूर पर फूलीके साथ जमादारका प्रवेश।)

फूली—अब मैं तुम्हारे पास न आऊँगी। खड़ा खड़ा वह तुम्हे गालियां दे रहा है और साथ ही मुझे भी।

जमादार—को गाली द्यात है ?

फूली—जाओ, देखो। (फूलीका प्रस्थान)

जमा—बिटिवा, जान पड़त है, पागल है। बड़ा सुन्दर पद गाइस रहे।

हीरू—क्यो जमादार, बात सच है ?

जमादार— हाँ बाबू—

हीरू—तुम्हारी लड़की ?

जमादार—हाँ बाबू—

हीरू— वह सुन्दर है ?

जमा०—हाँ बाबू, पुतलीकी तरह रहै। हमार अभाग और का !

हीरू—तुम्हारा भाग तो अच्छा ही है। मेरे रहते सोच किस बातका ?

जमादार—का कहत हो बाबू ?

हीरू—तुम दामादकी खोजमे हो न ?

जमादार—सब ठीकठाक होइगा रहै, पर दैव इच्छा ! परमेसुरसे कौनो उपाय है ?

हीरू—तुम सोच मत करो। मै तुम्हे एक अच्छा दामाद खोज दूँगा। तुम्हारी लड़कीको बड़े आदमीके पास रखवा दूँगा, वह खूब सुखसे रहेगी। तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा; तुम्हे महीना मिलेगा। बस, तुम अपनी लड़की मेरे हवाले कर दो।

जमादार—ठहर सारे, तोरी ऐसी तैसी मारौं, अबही तुमका तुम्हारे पुरखिनके लगे पहुंचाइत है।

(हीरूका गला घोंटना।)

हीरू—अरे बापरे! मार डाला रे मार डाला!—

(स्नान करके दोनों दरवानोंका प्रवेश।)

दरवान—अरे यहु का करतु हौ—यहिका काहे का मारत हौ ? मरि जाइ—हत्या लागी।

(हीरूको छुड़ा देना।)

(नीरद, मन्मथ, और श्यामू नौकरका प्रवेश)

सब—क्या हुआ—क्या हुआ ?

जमादार—यहिका सारेका खुतरे डालत हौं।

नीरद—दरवान, जमादारको ले जाओ, ठंढा करो।

(हीरूका भीतर भागना।)

पहला दरवान—अरे जाय दैव—जाय दैव—

(जमादारको लेकर दोनों दरवानोंका प्रस्थान)

(नीरदका घरके अन्दर प्रस्थान)

श्यामू—छोटे भैया, फूली कह रही थी कि तेरे खाली भौंकनेसे कुछ नही होनेका। कैसे ठीक करना होता हैं, देख। उसे लड़ाना खूब आता है।

मन्मथ—उसने क्या किया ?

श्यामू—उसने हीरू बाबूसे जमादारकी बेटी निकालनेको कहा था

मन्मथ—सचमुच ? अभी खून हो गया होता ! फूली कहाँ है बुला तो।

(दोनोंका प्रस्थान)

चौथा दृश्य

उपेन्द्रके मकानका बाहरी हिस्सा।

नीरद और हीरू

नीरद—है, इतनी ढिठाई ! मन्मथ—मन्मथ—

(मन्मथका प्रवेश)

मन्मथ—क्या कहते हो ?

नीरद—क्योंरे पाजी, टुकड़तोड़, तू हीरू बाबूके पीछे क्यों पड़ा है ?

हीरू—नीरद बाबू जाने दो ।

नीरद—घरसे निकाल दूंगा—जूते मार कर निकाल दूंगा ।

(हाथमें चिट्ठी लिये हुए शैलेन्द्रका प्रवेश)

शैलेन्द्र—क्या है नीरद ?

नीरद—देखिये न। सही—उस दिन इसने श्यामूको सिखलाया वह भूँकने लगा, मानो उसे पागल कुत्ते ने काट खाया हो, यह विचारा ब्राह्मण छाता-दुपट्टा छोड़कर भागा ! आज ये बाबूजीकी बीमारीका हाल सुनकर उन्हे देखने आये तो इन्हे दरवानसे पिटवाया ।

शैलेन्द्र—हीरू देखने आया है ? घर उजाड़ने आया है। मन्मथ, तूने खूब किया। (हीरूसे) हरामजादा कहींका, फिर अगर इस घरमे पैर रखा तो जूते मारकर निकाल दूंगा । पाजी कमीने, रडीके घर बैठकर शिबू वकीलसे मनसूबा गाँठता है। जिस पत्तलमे खाना उसीमे छेद करना ! मै महीना देता हूं उसीसे चचाजीका घर भर पलता है, और मेरी ही बुराई !

हीरू—छोटे बाबू मुझपर नाहक बिगड़ते है ! मेरा यह काम नही है, मै आप लोगोकी भलाई ही चाहता हूं ।

शैलेन्द्र—क्योरे पाजी, फिर वही चिकनी चुपड़ी बातें ! मन्मथ, लगा इस सालेके मुह पर तमाचा !

हीरू—इतना बिगड क्यो रहे है ! मैं तो नीरद बाबूके पास आया था, लीजिये, मे चला जाता हू । मै आप लोगोकी भलाई ही

चाहनेवाला हूं, बुराई नहीं। बिना कसूर आप मुझे गालियाँ देते है—दीजिये।

शैलेन्द्र—देख तो हरामजादे, इस चिट्ठीमें क्या लिखा है? तू घरकी बहू बेटी भी निकाल सकता है!

नीरद—कैसी—किसकी चिट्ठी है?

हीरू—कुमुदकी होगी। वह मुझसे जली हुई है, उसीने कोई शिकायत की होगी।

शैलेन्द्—शिकायत क्या की? शिवू वकीलसे उसे फँसाना चाहता है?

नीरद्—इसीसे वेश्याकी चिट्ठी पढ़कर आप इन्हे गालीगलौज दे रहे है?

शैलेन्द्र—नीरद्, जबान संभाल कर बातें कर।

नीरद्—क्यो, मैने ऐसी कौनसी बेजा बात कही? घरमे रंडी लाइयेगा, रंडीकी बातोंमें आकर एक भलेमानसको बेइज्जत कीजियेगा। चलिये, हीरू बाबू आप मेरे कमरेमे बैठिये।

हीरू—मेरे लिये यह किचकिच क्यो?

शैलेन्द्र—नीरद्, देख, मझले भैयाके लिहाजसे मै अब तक कुछ नहीं बोला, गम खाया किया, पर अब जूतेसे तेरा मुंह बिगाड़ दूंगा।

नीरद्—आप बड़े है, एक बार क्यो, पाँच सौ बार जूते मार सकते है, पर आप एक भलेमानसको बेइज्जत कर निकाल नही सकते—मकानके मालिक आप ही अकेले नही है।

शैलेन्द्र—मैं अकेला मालिक नहीं तो तू है? देखता हूं न-तू कैसे इसको बैठाता है! मन्मथ, इस कमीनेका हाथ पकड़ कर निकाल दे।

नीरद—ओः! तभी मैं सोचता था कि इस टुकड़तोड़की इतनी हिम्मत कैसे हुई! आप ही सब सिखा पढ़ा देते है?

शैलेन्द्र—हाँ, मैं ही सिखा पढ़ा देता हूँ—खूब करता हूं! (हीरूसे) निकल साले इस घरसे। दरवान-दरवान---

नीरद—दरवानको न बुलाइये, वह मेरा नमक भी खाता है। हीरू बाबू, आप बाबूजीकी बैठकमे जाकर बैठिये।

शैलेन्द्र—निकल साले—

(हीरूका हाथ पकड़ कर खींचना।)

(नीरदका बीचमें पड़कर हाथ छुड़ा देना)

(क्रोधमें शैलेन्द्रका नीरदको मारना)

मन्मथ—(बीचमें पड़ कर) छोटे बाबू—छोटे बाबू, मौसाजीकी तबीयत बहुत खराब है।

(लज्जित होकर शैलेन्द्रका प्रस्थान।)

हीरू—नीरद बाबू, जानते हैं, मेरा कसूर क्या है? ये पाँच हजार रुपयेका हीरेका झूमर खरीदना चाहते थे, मैं उसमें बाधक हुआ हूं।

मन्मथ—हीरू बाबू आपका काम बन गया!

नीरद—क्यो मन्मथ बाबू, क्या तुम भी दो चार हाथ जमानेको यहाँ खडे हो? या तुम्हीं इनको घरसे निकालोगे?

मन्मथ—जी नहीं, भला मेरी क्या मजाल है? मैं बड़ी माँको प्रणाम कर चला जाऊँगा।

हीरू—मन्मथ बाबू, मैं धरमकी कहूंगा—आप नीरद् बाबूके मौसेरे भाई है, नीरद् बाबूकी माँ आपकी मौसी हैं, बड़ी बहू आपकी कोई नहीं हैं, हाँ,अगर आपको उनकी जायदादका लालच हो और इस लिये खुशामद करे तो दूसरी बात है। आपको कहना चाहिये कि—"मौसीसे मिलकर चला जाऊँगा।" पर जाइयेगा कहां? बडे भाईने गुस्सेमे एक आध बात कही; इसपर क्या इस तरह टेढ़ा जवाब देना चाहिये?

मन्मथ—क्यो महाशय,चुप क्यों हो गये? और कुछ उपदेश दीजिये।

हीरू—तुम अभी लड़के हो, तुम्हें उपदेश तो देना ही चाहिये।

मन्मथ—नीरद् भैया, आप लोगोके टुकड़ोसे मै पला हू, जब आपकी आँखोंमे खटकने लगा, तब यहाँसे मेरा चला जाना ही अच्छा हैं। पर जरा सोचिये,.मौसाजीकी कैसी बुरी हालत है, हीरू बाबूने आकर आप लोगोंका ध्यान उधरसे कितना बँटा दिया है!

नीरद्—हूं—तुम पढ़े लिखे हो, तुम्हें लोग बुद्धिमान् कहते है, तुमसे राय न लूंगा तो किससे लूंगा? कहो, और क्या कहते हो?

मन्मथ—यहाँ रहता तो कहता। आपके जूता मारने पर भी चुप न होता। पर शायद् आपके किसी खास काममे मैं बाधा डाल रहा हूं, नहीं तो आप मुझपर इतना बिगड़ते नही।

पर जब आपने इतनी बरदाश्त की, तब आपसे इतनी और भिक्षा मांगता हूं कि मौसाजीके पास मुझे रहने दीजिये, आखिर एक नौकरकी तो जरूरत है, जबतक वे आराम नहीं होते तबतक मैं ही रातको उनके पास रहा करूंगा।

हीरू—तुम नहीं रहोगे तो जाओगे कहाँ? सबकी देखभाल कौन करेगा?

नीरद—सच तो! चलिये हीरू बाबू, आपकी बातें सुनूँ।

(दोनोंका प्रस्थान)

मन्मथ—(आप ही आप) यार, तुम जरा फेरमें पड़ गये! दुनियाँ पड़ी है, खानेको मिल ही जायगा—सोच मत करो। पर हाँ, बड़ी माँसे क्या कहूं और मौसाजीको ही इस हालतमें छोड़ कर कैसे जाऊँ! बड़ी माँसे मैं कुछ न कहूंगा, फिर तो मैं हीरूका दादा हो जाऊँगा। मेरे पीछे बड़ी माँ आप ही अलग हो जायंगी। न जाने अपने पेटका लड़का रहता तो उससे इतना स्नेह करती या नहीं। अः आँखें भर आयी! कुछ ठीक न हुआ!

(फूलीका प्रवेश)

फूली—मन्मथ बाबू, मुझे बुलाया है?

मन्मथ—क्यों री, तूने हीरूको दरवानसे पिटवाया था?

फूली—हाँ।

मन्मथ—मैं तुझे भली औरत समझता था, पर देखता हूं, तू तो बड़ी नटखट है! हीरूसे भिड़ने क्यों गयी?

फूली—तुम जो उसे घरसे निकालना चाहते हो ?

मन्मथ—तुझसे किसने कहा ? श्यामूने कहा होगा।

फूली—नहीं।

मन्मथ—झूठ बोलती है ?

फूली—जान भी चली जाय तोभी तुमसे झूठ न बोलूंगी।

मन्मथ—मैं निकालना चाहता हूं, इससे तेरा क्या ?

फूली—तुम जो चाहते हो वह मैं करूँगी ही,तुम चाहे लाख मना करो।

मन्मथ—तू इतनी शैतान है, यह मैं नहीं जानता था। सीधी तरहसे रह।

फूली—तुम जानते कैसे ? तुम्हारा जन्म हमारे कुलमें तो हुआ नहीं है ! मैं नागिनकी बच्ची हूं—विषैले दाँत भी उगे हैं, पर डसूंगी नहीं। अगर हो सका तो किसीके डँसने पर विष खींच लूंगी।

मन्मथ—मर कहीकी, तेरी मत मारी गयी है।

फूली—मरूंगी—देखना, कैसे मरती हूं।

मन्मथ—तूने बड़ी माँके पैर छूकर मेरे सामने कसम खायी थी न कि मैं बुरे रास्ते न जाऊँगी ?

फूली—हाँ, अब भी कहती हूं,बुरे रास्ते न जाऊँगी। पर हाँ, साँपका स्वभाव है फन फैलाना, फुंकार मारना—डँसा न सही।

मन्मथ—तू ऐसा करेगी तो मेरे पास मत आना।

फूली—मैं ऐसा भी करूंगी और तुम्हारा काम भी करती रहूंगी।

मन्मथ—अब तुझे मेरा काम न करना होगा—जा, दूर हो यहाँसे।

फूली—तुम्हारे कहनेसे मैं थोडे ही दूर हो जाऊँगी ! (फूलीका प्रस्थान)

मन्मथ—इसकी माँ ठीक कहती है, यह पागल ही है ! इसकी बातें तो सुनो ! कहीं इसका मन तो इधर उधर नहीं दौड़ने लगा है ? पर बुद्धि तो ख़ूब है, कोई बात बताओ तो झट सीख लेती है ! बड़ी माँ कहती हैं—यह नीच कुल-की लड़की है तो क्या, पर इसका चरित्र निर्मल है। यह लड़कपनसे ही पागल सी है, जो मनमे आया कह गयी !

(डाक्टरका प्रवेश।)

डाक्टर—क्यों—क्या सोच रहे हो ? तुम्हारे मौसाजी अब आराम हो चले है। मैंने तुमसे कहा ही था कि दस्त होनेसे ही सब ठीक हो जायगा।

मन्मथ—डाक्टर बाबू, अब डरकी तो कोई बात नहीं है न ?

डाक्टर—नहीं, नहीं। तुम्हारे अंगरेज डाक्टर साहब तो कहते है ऐपोप्लेक्सी (apoplexy) और न जाने क्या क्या, पर असलमें उनका दिमाग गर्म हो गया था और तुम भी तो जानते हो, और और केसोमे अच्छा डायगनोसिस (diagnosis) * करते हो, फिर मौसाजीके समय साहबकी बातोंसे क्यों घबरा गये ? हाँ, उन्हें जरा ठंढा रखना। देखना, कहीं उठते ही काममें न लग जायं।

मन्मथ—तो अब कोई डरकी बात नहीं हैं ?

डाक्टर—No—no—no(नहीं—नहीं—नहीं—)(डाक्टरका प्रस्थान

* रोगका निदान

मन्मथ—चलो, एक चिन्ता तो दूर हुई। अब बड़ी माँसे छुट्टी लेना रह गया। (प्रस्थान।)

पाँचवाँ दृश्य

उपेन्द्रके मकानका भीतरी हिस्सा।

विरजा और तरङ्गिणी।

तरङ्गिणी—जीजी, तुम बराबर नीरद्को ही दोष दिया करती हो। देखो तो आज छोटे जनेने नीरद्को कैसा मारा है—मारते मारते उसकी हड्डी तोड़ डाली है! कसूर यही था कि एक ब्राह्मण घरमें आया था, बाबूको उनकी रॉड़ने न जाने क्या क्या लिखा था, उसे देखते ही वे आग हो गये और लगे गालीगलौज करने। नीरद्का कसूर यही था कि, वह कहो कह बैठा था कि, ये घर आये है, इन्हे बेइज्जत क्यो कर रहे है? इतना कहना भर था कि बस उस पर टूट पडे और उसे बुरी तरह मारा पीटा!

विरजा—असल बात यह नहीं है, तुमने एक तरफकी बात सुनी है। लाख हो, वह चाचा है, उसकी खातिर ज्यादा या घरमे लड़ाई लगानेवाले उस चौपटे ब्राह्मणकी?

तरङ्गिणी—तुम्ही एक तरफकी बातें सुनकर कह रही हो। लड़ाई लगानेवाला ब्राह्मण नहीं है, लड़ाई लगानेवाला मन्मथ है। वही तो सबको लड़वा रहा है।

विरजा—वह लड़का रहा है! जब तुमने बात छेड़ी है तब कहना पड़ता है, इधर कई दिनोंसे नीरद बहुत बढ़-बढ़ कर बातें कर रहा है। आज तो सुना है कि उसने मन्मथको टुकड़-तोड़ और जो मनमे आया सो कहा है और गर्दनिया देकर घरसे निकालना चाहता है।

तरङ्गिणी—शायद इसीसे उसने आकर तुम्हारे कान भरे है! वह कुनबा ही ऐसा है।

विरजा—वह कुनबा कैसा है, यह तो तुम जानो, पर मन्मथ वैसा लड़का नही है।

तरङ्गिणी—नीरदने कहा है—"वह घरमें रहेगा तो मैं नहीं रहूंगा।"

विरजा—वह जैसा समझे, करे। पर वह मन्मथको टुकड़तोड़ कहने या घरसे निकालनेवाला कौन होता है? मेरे रहते यह न होने पावेगा। वे इसे लाये थे, उन्हींका खाता है और उन्हींके घर रहता है। वह कुछ नीरदका दिया नहीं खाता।

तरङ्गिणी—ओह! तुम्हे तो माँसे बढ़ कर उसका दरद है! मेरा भाँजा है, मै उसे लायी थी, अब जो उसे न रखूं तो इसमे किसीका क्या?

विरजा—भांजा तुम्हारा है तो क्या, तुम उसे लड़कपनसे ही फूटी आंखों नहीं देख सकती! नीरद पढता लिखता नही था, स्कूलसे भाग जाता था—यह सब वह आकर कह देता था, बस तभीसे तुम दोनो उससे बुरा मानते हो। अभी

मॅझले जनेकी बीमारीमे उसने रातो जागकर सेवा टहल की, उसकी तो कोई बात ही नही है, उलटे उसीकी बुराई! वह घरमे फूट करानेवाला बताया जाता है!

तरङ्गिणी—तुम तो बड़ी जली कटी सुना रही हो।

विरजा—मै जली कटी नही सुना रही हूं, न्यायकी कह रही हूं।

तरङ्गिणी—तुम न्यायकी नहीं कह रही हो—उसकी वकालत कर रही हो। मन्मथके उकसानेसे ही छोटे जनेने नीरदको मारा पीटा और वही मन्मथ तुम्हारा लाड़ला है!

विरजा—ऐसा समझती हो तो समझा करो—अब बात न बढ़ाओ।

तरङ्गिणी—बात क्या बढ़ाती हूं? छोटे जने मतवाले होकर घर आवेंगे, मारपीट करेंगे और मन्मथ रोज रोज उन्हे उकसावेगा और तुम उसकी हिमायत करोगी, यह मै क्यो सहूंगी जी?

विरजा—हुआ क्या है सुनूँ तो सही। शैलेनसे जुदा होना चाहती हो? हो, पर मन्मथके पीछे हाथ धोकर क्यो पड़ी हो? उसके निकालनेके खयालमे न रहना।

(सरोजिनीका प्रवेश।)

सरोजिनी—जीजी, तुम दोनोके पैरों पड़ती हूं।

विरजा—चल, हट। (तरंगिणीसे) जुदा होना चाहती हो, हो; चूल्हा चौका अलग हो, भाई भाई एक दूसरेका मुँह न देखें। जो तुम लोगोंके मनमे आवे सो करो—मुझे इसका डर न दिखाना। मेरा स्वार्थ क्या है?—यही कि घर बना रहता,

जब तुम लोग घर उजाड़ने पर तुल ही गये हो तब मैं क्या कर सकती हूं? कहने आयी हो—शैलेनने मारते मारते नीरदकी हड्डी तोड़ डाली,—गुस्सेमें आकर उसने एक आध हाथ चलाया यही तुमने सुना, पर नीरदने जो ऐंडी वेंड़ी सुनायी, छोटे मुँह बड़ी बात की कि—हीरू तुम्हारे घर नही आया है, दरवान अकेला तुम्हारा ही नमक नहीं खाता है—यह सब बातें क्या तुमने नही सुनीं? लड़केको डाँटते नहीं बना? मन्मथको निकालने—बंटवारा करने आयी हो? बँटवारा करना चाहती हो करो, मेरा हिस्सा भी मुझे दिला देना। इधर कई दिनोसे तुम खाली शैलेनके दोष ही दिखा रही हो! जवानी है, शराबका चसका पड़ गया, एक आध काम कर बैठा है; अगर शैलेनकी जगह तुम्हारा लड़का होता तब सब सहती, वह देवर है, इसीसे तुम सह नहीं सकतीं।

तरङ्गिणी—तुम इतनी टर टर क्यों कर रही हो? छोटे जनेके बिना घर बरबाद हो तो हो, तुम अपने मँझले देवरसे कह कर हम माँ-बेटेको निकलवा दो और अपने कुल-दीपक मन्मथको लेकर रहो।

सरोजिनी—जीजी, जीजी, तुम दोनोके पैरों पड़ती हूं—

विरजा—चल हट। (तरङ्गिणीसे) क्या कहा—क्या कहा, माँ-बेटा चले जाओगे?

तरङ्गिणी—जायँ नही तो क्या तुम सबकी दिन रात सहा करें?

इतनी बढ़ बढ़ कर क्यों बातें करती हो ? मुझे किसीकी परवा नहीं है।

बिरजा—मँझली बहू, समझी, अब मुँहका झगड़ा नही रहा घर उजड़ता है तो उजड़े। जब तुम्हारी मेरे साथ पटती ही नहीं तब मुझे क्या पड़ी कि जो मैं तुम्हारी खुशामद करूं ? दोनो भाई साथ रहे या जुदा जुदा, मुझे जुदा कर दो।

तरङ्गिनी—अजी मैं जुदा करनेवाली कौन होती हूं ?

बिरजा—तुम्हारे सिवा और कौन है ? दोनो भाइयोका झगड़ा तो निताई वकील निपटाये देता था पर तुमसे सहा कहाँ गया ? मैं बकबक नही करना चाहती, जो अच्छा समझो, अपने मालिकको बुलाकर कर डालो।

तरङ्गिणी—इसमे सोचने समझनेकी क्या बात है ? भाई-भाई जुदा होते ही आये है। छोटे बाबू शराब पीकर गुल-गपाड़ा मचावेगे, मार-पीट करेंगे, किसी भलेमानसके आने पर उसकी गर्दन नापेंगे—मैं जाकर कह देती हूं कि, घरकी मालकिनका हुक्म है कि, अगर यह सब बरदाश्त कर सको तो रहो, नहीं तो अपना रास्ता लो। बाप रे बाप ! इतना कौन सहेगा !

बिरजा—जो मनमे आवे सो करना। आज ही वे कही भागे नही जाते हैं। अभी वे बीमारीसे उठे है; किचकिच कर उनकी बीमारी मत बढ़ाओ। जुदा होना चाहती हो तो मै कहकर जुदा करा दूँगी। दो दिन ठहर जाओ।

तरङ्गिणी—ऊँह ! बड़ा दरद है ! (प्रस्थान)

सरोजिनी—क्यों जीजी ! तुम जुदा होगी ?

विरजा—नहीं, नहीं, तू यह सब बातें शैलेनसे मत कहना ।

सरोजिनी—मैं कहूंगी। जीजी ! वे गृहस्थीका हाल कुछ नहीं जानते, मै भी कुछ नही जानती। तुम नीरदको समझाओ जिसमे वह हम लोगोंको अलग न कर दे। मैं उनसे हाथ जोड़ कर कहूंगी कि, वे नीरदको अब कुछ न कहे ।

विरजा—नहीं, नहीं, तू जा, मैं नोरदसे कहूंगो ! रो मत ।

सरोजिनी—(पैर छूना)

विरजा—मेरे शैलेनको मारकण्डेकी आयु हो, तेरा सदा सोहाग वना रहे । (सरोजिनीका प्रस्थान)

विरजा—दोनोंको दुनियाकी कुछ खबर नहीं है !

(मन्मथका प्रवेश)

विरजा—क्यो रे मन्मथ, नीरदने तुझे टुकड़तोड़ कह कर घरसे निकल जानेको कहा था ?

मन्मथ—तुमसे किसने कहा बड़ी माँ ? नीरद भैया गुस्सेमें न जाने कितना कुछ कह डालते है और मैं भी कुछ बाकी नहीं रखता। बड़ी माँ, मेरे ये रुपये अपने पास रख छोड़ो। (नोट देना)

विरजा—क्यो रे तुझे रुपये कहाँसे मिलते है ? जेब खर्चमेंसे तो कहीं नहीं बचा रखता है ?

मन्मथ—नहीं—नहीं—

विरजा—ये तो हज़ार हज़ार रुपयेके दो नोट है ! कहाँसे मिले ?

मन्मथ—बड़ी माँ—मैने जो फूलोंका बगीचा लगाया है उसके फूल बेचता हूं। साहब लोग बहुत पसन्द करते हैं, उनसे खूब दाम मिलता है।

विरजा—अच्छा, ये रुपये मेरे पास क्यो रखता है ? बैकमे जमा कर दे न, ब्याज मिलेगा।

मन्मथ—अभी बैकमे कहाँ जमा करूं, मेरी नौकरी लग गयी है बडी माँ !

विरजा—कहाँ ?

मन्मथ—परदेशमें। मैं जानेवाला हूं।

बिरजा—परदेश मे—कहाँ जायगा ? मालूम होता है, नीरदकी बातोसे रूठ गया है।

मन्मथ—नही बड़ी माँ !

विरजा—देख मन्मथ, मुझसे झूठ मत बोल। कहे देती हू, तू जाने नहीं पायगा। तू रूठ क्यो गया है। तू क्या उनका दिया खाता है या उनके घर रहता है ! तू तो भागना चाहता है, मैं बूढ़ी हूं, अगर बीमारी हुई तो सेवा टहल कौन करेगा ? ये सब तो जुदा होते हैं, मेरी देखभाल कौन करेगा ? ले ले रूठ मत।

मन्मथ—तुम मेरी माँ हो, यह क्या मुझे आज मालूम हुआ। माँ जीती रहती तो इतना स्नेह करतीं कि जिसका ठिकाना नहीं। मैं जहाँ कहीं रहूंगा तुम्हारी खोज खबर लेता रहूंगा।

तुम साक्षात् भगवती हो, तुम्हे प्रणाम कर जिस कामको जाता हूं वही सफल होता है।

विरजा—रहने दे, रहने दे, बहुत चिकनी चुपड़ी बातें न बना। अच्छा तू रूठा क्यो है?

मन्मथ—बड़ी माँ, यह घर नहीं रहनेका। मुझे अपने पास रख कर क्यों बुरी बनोगी? तुम्हारी बुराई मुझसे नही सुनी जायगी। तुम मुझे रोको मत। तुम्हे आज ही मालूम हो जायगा कि कहाँ तक नौबत पहुंच गयी है! तुम आसीस दो, सोच फिकर मत करो, मै जहाँ कहीं रहूंगा, तुम्हारे आसीससे मेरा भला ही होगा (पैर पड़ना)

विरजा—अच्छा, अच्छा, देखा जायगा। आज कहीं चला न जाना, कल जैसा होगा बुला कर कहूंगी।

(मन्मथ जाना चाहता है।)

विरजा—देख, तुझे मेरी सौगन्ध है, कहीं जाना मत।

(दोनोंका दो ओर प्रस्थान।)

छठा दृश्य

मार्ग।

हीरू और भैरव।

हीरू—भैरव तू एक काम कर सकता है?

भैरव—मजेमें कर सकूंगा। अब मैं होशियार हो गया हूं।

हीरू—मेरे छप्पर परसे कुछ कद्दू उतार सकता है ?

भैरव—हाँ हाँ। यह काम कौनसा मुश्किल है ?

हीरू—मेरा छप्पर उजाड़ सकता है ?

भैरव—हाँ हाँ, बातकी बातमें उजाड़ डालूँगा।

हीरू—हामी तो भरता है, पर मँझले बाबू जो तुझ पर बिगड़ेंगे तो ?

भैरव—बिगड़ेंगे तो सही, तुम्ही कोई उपाय बताओ।

हीरू—तुझसे न हो सकेगा।

भैरव—खूब हो सकेगा। तुम देख लेना।

हीरू—तुझसे जब मँझले बाबू पूछेंगे कि, छप्पर क्यों तोड़ा तो कहना,—छोटे बाबूके हुक्मसे।

भैरव—छोटे बाबूने तो हुक्म दिया नही है ?

हीरू—उन्होंने हुक्म दिया तो। तूने सुना नही। देखता हूं तेरी शामत आयी है।

भैरव—ऐं—छोटे बाबूने हुक्म दिया है ?

हीरू—हाँ रे हाँ। अभी तो तेरे सामने हुक्म दे गये है।

भैरव—सच कहते हो, छोटे बाबूने हुक्म दिया है।

हीरू—अरे कद्दूकी तरकारी खानेको मन चला है।

भैरव—अच्छा तो फिर लो, तुम्हारा छप्पर उजाड़े देता हूं।

(दोनोंका प्रस्थान)

सातवाँ दृश्य

उपेन्द्रके मकानका बाहरी हिस्सा।

उपेन्द्र तरङ्गिनी और नीरद।

उपेन्द्र—तुम क्या चाहती हो? घरसे निकल जाऊँ? या पागल होकर थेई थेई नाचूं? या भाईका खून करके फाँसी पर चढ़ूँ? जिसमे भलाई समझती हो सो कहो, मै वही करता हूं।

तरङ्गिणी—मै क्यो कहने लगी कि, तुम भाईका खून करो या नंगे होकर नाचो? हम माँ-बेटेका कोई बन्दोबस्त कर दो। नाको दम हो गया है। जब देखो जीजी काटनेको दौड़ती है—जली-कटी सुनाया करती है—कहती है, तू तो खसमको लेकर अलग होगी। तुम्हारे भाई मारनेको दौड़ेंगे, शराब पीयेंगे, उछल-कूद मचावेंगे, घरमें रण्डी लावेंगे—कहाँ दो चार दिनमें मैं बहूको घरमें लानेके विचारमे थी! यहां हमारी गुजर नही हो सकती—इसमे तुम भला मानो चाहे बुरा।

उपेन्द्र—नीरद बाबू, आपकी वकालत भी आपकी गर्भधारिणी कर रही है?

नीरद—मैं तो कुछ बोला नही साहब। मार पड़ी, आकर माँसे कहा—बस यही मेरा अपराध है, इसपर आप जो चाहे सो

नीरद्—आप बीमार है, इससे मैंने सब बातें कही नहीं।

उपेन्द्र—बड़ी कृपा की। मनमें क्यों रखते हो, सब बातें कह ही डालो न।

नीरद्—छोटे बाबूने भैरवको भेजकर हीरू बाबूका छप्पर उजड़वा डाला। ब्राह्मण रोता रोता आया था, मैं भला क्या करता?

उपेन्द्र—क्यो, तुम उसे अदालतमें ट्रेस पासकी* नालिश करनेकी सलाह देते?

नीरद्—उलटे आप मुझपर ही नाराज हो रहे हैं, इसपर मैं और क्या कहूं!

(शैलेन्द्रका प्रवेश)

शैलेन्द्र—भैया, देखिये, आप बीमार हैं इससे मैंने आपसे कोई बात कही नही। नीरद् उड़ा रहा है कि मैने भैरवको हुक्म देकर हीरूका छप्पर उजड़वा डाला, भैरवने उसकी रसोई खराब कर दी; आपही कहिये, ये सब कैसी बातें है?

उपेन्द्र—मै क्या कहूं? मुझे कुछ कहना नही है।

(विरजाका प्रवेश)

विरजा—रहने दे, शैलेन, आज ये सब बातें रहने दे। छप्पर तोड़ा है, खूब किया है, उससे जो करते बने कर ले। हीरूने भैरवको साथ ले जाकर छप्पर उजड़वाया है।

* किसी घरमें अनधिकार प्रवेश।

नरंगिणी—जीजी, क्या तुम ज्योतिष भी जानती हो या मन्मथने यह बात कही है ?

उपेन्द्र—रहे क्यो ? आज ही मै सबका निपटारा किये देता हूं। सुनता हूं, तुम भी अपना हिस्सा समझ लेना चाहती हो ?

विरजा—तुम ठंढे हो, वह बात कुछ नही है, योंही बातबातमे मुंहसे निकल गयी थी ।

उपेन्द्र—कुछ क्यो नही ? जब निपटारा हो रहा है, तब सबका साथ ही हो जाय ।

शैलेन्द्र—नीरद, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मुझे इस तरह बदनाम कर रहे हो ? सोचो तो यह कितनी बुरी बात है ?

नीरद—बुरी भली तो मै जानता नहीं जो सच बात थी सो कही।

शैलेन्द्र—तू बड़ा ही पाजी है ! तेरे मनमे क्या है ? मुझे जुदा करना चाहता है ? कर दे । इतना जाल क्यो रच रहा है ?

विरजा—चुप रह शैलेन ।

शैलेन्द्र—चुप क्यो रहूं जी ? सुना है, इसने हीरूसे मुझपर नालिश करनेको कहा है ।

उपेन्द्र—सचमुच नीरद ?

नीरद—सुनते चलिये । देखिये, अभी ये कितना कुछ झूठ सच लगाते है ! इन्होंने मेरी कौनसी शिकायत नहीं की ?

शैलेन्द्र—तेरी क्या शिकायत की बता तो सही ?

नीरद—और क्या कीजियेगा ? बाबूजी कब मरेंगे, मैं दिन गिन रहा

हू, किसीसे आंखे लड़ाता हू ! जैसे आपका मन भरे, भर लीजिये। मैं सत्यपर डटा हूं, मैं ऐसी बातोंसे नहीं डरता।

शैलेन्द्र—तेरी सब बातें झूठ है।

नीरद—मुझे आपके जितनी शिक्षा नहीं मिली है।

शैलेन्द्र—देख तेरी शामत आयी है।

नीरद—देखिये, मैने ऐसा कौनसा अपराध किया जिसपर ये इतने लालपीले हो गये ?

उपेन्द्र—मै दोनोके हाथ जोड़ता हू, बस करो। मेरे समझनेमें कुछ बाकी नहीं रहा, जिसमे तुम लोगोकी मनस्कामना पूरी हो वही करता हू।

शैलेन्द्र— क्यों भैया, मुझसे क्या अपराध हुआ ?

उपेन्द्र—अपराध किसीका नही है—अपराध है मेरा ! इतने दिन तक मेरी आँखे नही खुली थी, इसीसे मायाममतामें पड़ा रहा। पर देखो बेटा नीरद,शैलेनसे मैं जीते जी जुदा न हो सकूंगा, तुम भी इकलौते लड़के हो,—स्त्रीपुत्रका भी त्याग न कर सकूंगा। शान्तिमे दिन बीत रहे थे यह तुम लोगोको अच्छा नहीं लगा। मारपीट, दंगा फसाद, मुकद्दमेबाजी करना चाहते हो तो उसका उपाय किये देता हूं, खूब करो। एक दो दिन ठहर जाओ, मेरा जो कुछ है तुम्हारे नाम लिखे देता हूं, इसके बाद तुम चाचा-भतीजा बँटवारा कर लेना और मुझे छुट्टी दे देना।

विरजा—क्यों तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो? निताई बाबू तो कह गये हैं कि हिस्सापत्ती कर देंगे। तुम्हारी बीमारी बढ़ जायगी, ठंढे हो।

उपेन्द्र—बहुत हुआ—अब मुझपर तरस खानेकी जरूरत नहीं है। अब मुझसे सहा नहीं जाता। भाभी, तुमसे भी कहता हूं, जमीन जायदाद पड़ी है, मै साथ नहीं लिये जाता हूं, तुम अपने एकएक पैसेका हिसाब समझ लो।

विरजा—मैं जैसा समझूंगी करूंगी, जाओ, तुमलोग यहाँसे जाओ।

उपेन्द्र—नहीं, कोई मत जाना। सुनो नीरद, डाक्टर लोग मुझे हवा बदलनेको कह रहे है। जायदाद मेरी अपनी कमाईकी नहीं हैं, वह बड़ोंकी हैं, तुम वारिस हो, तुम्हारे नाम लिखा-पढ़ी किये जाता हूं। तुम्हारी समझमें जो आवे सो करना। मैं अपने गुजारे लायक रख बाकी तुम्हे दिये देता हूं। भाभी, तुम भी अपने नाम लिखापढ़ी करा लो, नहीं कराओ तो तुम्हे कसम हैं!

विरजा—राम राम! कसम क्यों देते हो?

उपेन्द्र—दूंगा, सो बार दूंगा। लो, अब अच्छी तरह समझबूझ लो, मुझे छुट्टी दो। भैया तो छुट्टी ले गये, मै भी छुट्टी लेकर जाता हूं। लो, समझ बूझ लो, अभी तुरंत—देर मत करो। नहीं तो सबका खून करूंगा। मुझे तुम सबने पागल समझ लिया है—मुझे नचाना चाहते हो? यह नहीं होनेका, मै बड़ा कठोर हूं।

विरजा—देखो—देखो, अनर्थ होने लगा है।

उपेन्द्र—सब धूलमें मिल जाय—सब धूलमें मिल जाय, तुम सबकी मनस्कामना पूरी हो। भैयाने मुझसे कहा, सब फूंक ताप डाल—सब राहके भिखारी बन जायं। भैया,—भैया, शैलेनको दूर कर दो, मेरे नीरदको सब दे जाओ। शैलेन मेरा कौन है? नीरद मेरा अपना है—स्त्रीपुत्र अपने हैं!

विरजा—तुम लोग खड़े क्या देख रहे हो—जल्दी डाक्टरको बुला लाओ।

उपेन्द्र—नहीं—नहीं, डाक्टरको बुलाकर क्या होगा—डाक्टरको बुलाकर क्या होगा? वकीलको बुलाओ—मैं आप ही जाता हूं। मकानके अन्दर दीवार चुनवा दो—चण्डी मण्डप तोड़ डालो—तोड़ डालो—तोड़ नहीं सकते! (मूर्च्छा)

(मन्मथका प्रवेश)

मन्मथ—बड़ी माँ, तुम्हारे रहते मौसाजीकी यह हालत हुई!

उपेन्द्र—(उठ कर) खूब हुआ—अच्छा हुआ—तेरा क्या—तेरा क्या?

मन्मथ—ओह! नाड़ी बड़ी क्षीण हो गयी है! नीरद भैया, जल्दी डाक्टरको बुला लाइये—जल्दी बुला लाइये।

शैलेन्द्र—मैं जाता हूं— (प्रस्थान)

मन्मथ—मौसाजी—मौसाजी, एक दो घूंट पानी पी लीजिये।

उपेन्द्र—नहीं—नहीं, पानी नहीं पीऊँगा—पानी नहीं पीऊँगा। इस घरमें मेरा पानी पीना हो चुका।

नीरद—मन्मथ-मन्मथ, शराब मत दो। यह और भी गर्मी करेगी।

मन्मथ—नीरद भैया, मैं जानता हू, मैं क्या कर रहा हू, मेडिकल कालेजने मुझे वह अधिकार दे रखा है ।

(डाक्टर और शैलेन्द्रका प्रवेश)

विराज—डाक्टर साहब—डाक्टर साहब, अनर्थ हो गया । हम कई जनोने मिलकर इनकी यह दशा कर डाली ! हाय ये हम लोगोके पीछे पागल रहते थे । हम लोग बराबर इन्हे जलाते ही रहे । अन्तको जान लेनेपर उतारू हो गये ।

डाक्टर—चुप रहिये—देखने दीजिये ।

शैलेन्द्र—नीरद, भैया मेरे, तेरे हाथ जोड़ता हूं, तू सब भूल जा । भैया आराम हो जाय, तू ही घरमे एक लड़का है, तू ही सब लीजियो, मै तेरे कहेपर चलूंगा । बड़ी भाभी, मैने क्या किया—मैने क्या किया ? क्यो झगड़ा किया था ?

मन्मथ—मैंने तोस बूंद ब्रांडी (शराब) दी है ।

डाक्टर—और एक डोज (मात्रा) दो । You have saved the patient's life Terrible nervous weakness (तुमने रोगीकी जान बचा ली । भयङ्कर दुर्बलता है ।) जरा स्टिमुलैण्ट (Stimulant) * दिये जाओ, कही कोलैप्स (Collapse) न हो जाय (कही ठण्डे न हो जायं) । सब कोई इस कमरेसे चले जायँ । इस जगह आप लोग न रहने पावेंगे । मन्मथ रहेंगे और एक नर्स (दाई) भेजे देता हू वह रहेगी ।

शैलेन्द्र—क्यों डाक्टर साहब, अब डरकी तो कोई बात नहीं है ?

डाक्टर—डर क्यों नहीं है ? बीमारीसे बढ़कर तो तुम लोगो-
का डर है । इस हालतमें कहीं किचकिच करके इनकी जान
न लेना, इन्हें चुपचाप पड़े रहने दो ।
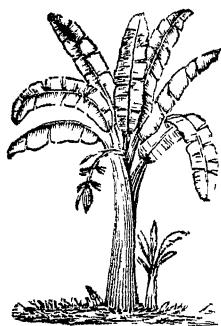
विरजा—क्यों बेटा, ये आराम हो जायँगे न ?

डाक्टर—अभी तो डरकी कोई बात नहीं है । पर देखना, अब
कलह न होने पावे ।

उपेन्द्र—कोई डर नहीं—कोई डर नहीं, मैं मरूँगा नहीं , मर
जाऊँगा तो इतना कुछ देखेगा कौन ?—कोई डर नहीं—
कोई डर नहीं ।

डाक्टर—मन्मथ, नींदकी दवा देना ।

---

* उत्तेजक औषध ।

भारतीपुस्तकमाला, कलकत्ता

तीसरा अंक

पहला दृश्य

उपेन्द्रके मकानका भीतरी हिस्सा ।

उपेन्द्र, विराज और तरंगिणी ।

विरजा—डाक्टर कहते है, तुम हवा बदल आओ । जान है तो जहान है । तुम पछाँह चले जाओ, यहाँ जो होना होगा, सो होगा ।

उपेन्द्र—डाक्टर तो कह रहे है, पर मै भी तो निश्चिन्त होऊँ ! भैयाके वसीयतनामेके अनुसार तुम्हारी जायदादके बंदोबस्तका भार मुझपर है । तुम तो हमलोगोकी मायामे पड़कर दिन रात मजूरिनको तरह पिस रही हो, पर मै तो जानता हूं न कि तुम्हारी सम्पत्तिके अधिकारी हम लोग नहीं है ।

विरजा—तुम यह क्या कह रह हो ? तुमलोगोके सिवा मेरी जायदादका मालिक और कौन है ? और किसके घरमे मै मजूरिनका काम करती हूं ? सच तो यह है कि मेरे हाथ उठाकर देने पर तुम लोगोंको खानेको मिलता है ।

उपेन्द्र—ऐसा ही समझो । मुझसे निश्चिन्त होनेको कह रही हो ;

तुम विधवा हो, तुम्हे इतना मोह किस लिये ? सब छोड़-छाड़ कर तीर्थ यात्रा क्यों नहीं करती ?

विरजा—अच्छा तो चलो, कहाँ चलते हो, मै तुम्हे छोड़ आऊँ।

उपेन्द्र—मुझे तो छोड़ आओगी, पर मेरे मनको तो नहीं छोड़ आ सकोगी। तुम ठीक अवस्था नही समझ सकती, इसीसे मुझसे परदेश जानेको कहती हो। मैं देख रहा हू कि नीरदकी बुद्धि अच्छी नहीं है। शैलेनसे उसकी पटरी नही बैठेगी। वह कानूनिया है, बात बातमे कानून ही छांटता है। और अगर उसने हीरूसे सचमुच ही शैलेनपर नालिश करनेको कहा हो तो इसे क्या तुम मामूली बात समझती हो ?

विरजा—तुम शैलेनके लिये सोच मत करो। वह छलकपट नहीं जानता, गधापचीसीमे खराब हो गया है, सुधर जायगा ; ऐसा होता ही है। अभी तुम्हारी बीमारीमे दिन रहते ही घर आ जाता था, एक दिन भी उसने शराब नहीं छूई। मेरे पैर पकड़कर रोते रोते बोला—भैया जो कहेंगे, वही करूंगा। वह सीधा है। बोला—मै फेरमें पड़ गया हूं, निकलते नही बनता। जब समझा है तब सुधर जायगा।

उपेन्द्र—तब तो मेरे कहीं जानेकी जरूरत ही नहीं रहे। आज ही मैं आराम हो जाऊँ। जीमे आता है कि उसे जुदा कर दूं, पर देखता हूं कि वह मेरे भरोसे है।

(शैलेन्द्रका प्रवेश)

विरजा—देख तो, तेरे पीछे तेरे भैया हवा बदलने बाहर नहीं जा सकते। कहते हैं, पीछेसे चचा-भतीजेमें ठाँय ठाँय होगो वहाँ मैं कैसे निश्चिन्त रह सकूंगा।

शैलेन—बड़ी भाभी, अब मैं कुछ न बोलूंगा, नीरदके जो जीमें आवे सो करे।

उपेन्द्र—तुम क्या कहते हो? :तुमपर जो भूत सवार हो जाता है।

शैलेन्द्र—नही भैया, मै सुधरनेकी चेष्टा करूंगा। पर हाँ, मेरा महीना कुछ बढ़ा दीजिये, उतनेसे मेरा पूरा नहीं पड़ता।

उपेन्द्र—शैलेन, तुमने मेरे नाकोदम कर दिया।

शैलेन्द्र—कैसे भैया?

उपेन्द्र—महीना बढ़ा देना बहुत सहज बात है। तुम्हारे ही रुपये तुम्हे दूंगा। तुम अगर सब उड़ा डालोगे तो तुम्हारा ही जायगा। मै तुम्हारा हिस्सा तुम्हे समझाकर अभी निश्चिन्त हो सकता हूं। मैंने कितनी ही बार सोचा कि मैं निश्चिन्त होऊँ, पर सोचते ही सिर चकराने लगता हैं। तुम सीधे हो, दुनियाकी तुम्हें कोई खबर नही, जायदाद हाथ लगते ही दो दिनमें फूक डालोगे। इस अवस्थामे मैं क्या करूँ—मैं बडे संकटमें पड़ा हूं। दूसरोंके जैसे भाई होते है तुम भी अगर मेरे वैसेही भाई होते तो चिन्ताकी कोई बात नहीं थी। मैंने सम्पत्ति बढ़ायी ही है नष्ट नहीं की। मै तुम लोगोंको एक एक पैसेका हिसाब

आज ही समझा सकता हूं। तुम समझे, मै किस संकटमें हूं ?

विरजा—वह समझ गया है। अब वह संभल कर ही चलेगा।

उपेन्द्र—नहीं भाभी,तुम समझती नहीं हो। यह होलीकी भांग नहीं है जो एक दिन पी और छोड़ दी। शराबका चस्का बुरा है, मुंह लगनेसे नहीं छूटता। मुझे पता लगा है कि यह ऐसे आदमियोंकी संगतमें पड़ गया है जो डुबानेवाले है। मैं नहीं जानता,यह कैसे सुधर सकेगा। सुनो शैलेन, अगर तुम इन लोगोंकी संगत एकदम छोड़ दो तो तुम सुधर सकते हो, नही तो तुम्हारे सुधरनेका कोई उपाय नहीं है।

शैलेन्द्र—आप जो कहेगे मैं वही करूँगा।

उपेन्द्र—करोगे ? देखो, अच्छी तरह सोच लो।

विरजा—तुम इतने अधीर क्यो हो रहे हो ? सुधरनेको तो कह रहा है।

उपेन्द्र—भाभी, तुमने भैयाको देखा था—देवताको देखा था। भैयाके संगी साथियोको जानती हो। तुम शेषनागके समान गृहस्थीका भार सिरपर उठाये हुई हो। खिलापिला रही हो—कितनोको पाल रही हो—इसके बाहर शैतानोकी भी दुनिया है यह तो तुम्हे मालूम नही है। उनकी बातें सुनो तो कानोमें उंगली देनी पड़ेगी। अगर यह तुम जानती होती कि रंडी भडुए, शराबी कबाबी कैसे जीव है, अगर यह तुम्हें मालूम होता कि वे कैसी माया फैलाते है,

तो तुम भी मेरे समान ही शैलेनके लिये व्याकुल हो उठती। तुम्हारा शैलेन भँवरमें पड़ गया है, ईश्वर ही जाने, उसमेंसे उसे निकाल सकूंगा या नहीं।

बिरजा—क्योंरे, क्या किया है?

उपेन्द्र—यह नहीं जानता कि इसने क्या किया है। यह सीधा है, कालीनागिनपर विश्वास कर बैठा है, सात्विक आनन्दके बदले कुत्सित भोगविलासमे रत हो गया है। संग साथके प्रतापसे इसने समझ लिया है कि जीवन बस इसी कुत्सित भोग विलासके लिये है। अच्छा शैलेन, तुम मेरा कहना मानोगे?

शैलेन्द्र—जी हाँ, मानूंगा।

उपेन्द्र—देखो, आगापीछा तो न करोगे?

शैलेन्द्र—जी नहीं, आप जो कहेंगे वही करूंगा।

उपेन्द्र—अच्छा तो तैयार हो जाओ, आज ही मैं यहाँसे रवाना होऊँगा। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। तुमने यह कलकत्ता शहर ही देखा है, दुनिया क्या है वह भी देखो। जो धन तुम पानीकी तरह बहा रहे हो, तुम्हें प्रत्यक्ष होगा कि, उस धनसे तुम सैकड़ो मरतोंको जिला सकते हो। तुम खर्च करना चाहते हो, चलो दिखाऊँ, खर्च करनेकी कितनी जगह है। कितनी ही सुन्दर चीज़े देखनेमे आवेगी। तैयार हो, मै गाड़ी रिजर्व करनेको आदमी भेजता हूं।

शैलेन्द्र—आज ही ?

उपेन्द्र—हाँ, आज ही—अभी।

शैलेन्द्र—बहुत अच्छा।

(शैलेन्द्रका प्रस्थान।)

विरजा—क्या सोच रहे हो ?

उपेन्द्र—आज तो गाड़ी रिजर्व होगी नहीं, उसके लिये एक दिन आगे लिखना पड़ता है। गाड़ी रिजर्व न करानेसे शैलेनको कष्ट होगा। उसे घर रहने देनेको जी नहीं चाहता, न न जाने वह कब खसक जाय। रात होते ही उसका चित्त ठिकाने न रहेगा और छिप कर निकल भागेगा। फिर उसके संगी साथी उसे लौटने न देंगे।

विरजा—कलका दिन अच्छा कहाँ है—कल दिशाशूल है।

उपेन्द्र—सन्ध्याके उपरान्त अच्छा है, मैंने पञ्चाङ्ग देखा है। सोचता हूं, उस समय यात्रा कर बागमें जाकर रहूं। इष्ट-मित्रोंके साथ भोजन कर कल ८॥ बजेकी गाड़ीसे यात्रा करूँ।

विरजा—तुमने ठीक सोचा है।

उपेन्द्र—वह जायगा तो ? - संग-साथियोंके सिखाने-पढ़ानेसे कहीं उसका मन तो न बदल जायगा ?

विरजा—मन बदला ही हुआ है, देखा नहीं किस तरह बड़बड़ाता चला गया।

उपेन्द्र—अच्छा मैं तो उसे ले जानेकी चेष्टा करता हूं।

विरजा—यहाँका क्या बन्दोबस्त करोगे ?

उपेन्द्र—सोचता हू, नीरदको मुख्तारनामा दे जाऊँ, अवश्य ही निताई वकीलने सब करनेधरनेको कहा है, पर तोभी मेरा नाम सही करनेका भार उस पर रहा। चिन्ता इसी बातकी है कि, वह न जाने क्याका क्या कर बैठेगा।

विरजा—क्या तुम सोचते हो कि वह रुपया पैसा बरबाद करेगा?

उपेन्द्र—जो होना होगा सो होगा, मै उसे ले कर चला जाता हूं;

(प्रस्थान।)

दूसरा दृश्य

—::※::—

कुमुदिनीका घर।

कुमुदिनी और शरत।

शरत—तुम लोग तो आधी आधी रात तक मौज उड़ाओगे और मै आ आ कर लौट जाऊँगा, यह मुझसे न होगा।

कुमुद—तूने ही तो उसे मेरे गले बाँधा,मै क्या बँधना चाहती थी?

शरत्—मैने बड़ा बुरा काम किया—क्यो? उसे फँसाया था जिसमे तुझे दो पैसे मिलेगे और रातको ९,९॥ बजे तक उसे बिदा कर दिया करेगी,पर तूने तो उसे गलेका हार ही बना लिया। नींद आ जानेपर फिर उठकर आना मुझसे न हो सकेगा।

कुमुद—तो क्या तू अभी उसे छोड़ देनेको कहता है? तो चल

मुझे कहाँ ले चलता है—इस घरमे तो गुजर नही हो सकेगी। उसे छोड देनेसे माँ उठते बैठते कोसाकाटी करेगी। इस महोनेमे चार पाँच हजार रुपयेका गहना देनेकी बात है। प्रमथसे हीरेका झूमर खरीद देनेका उसने वादा किया है।

शरत्—चार पाँच हजार! भला, मुझे पाँच सौ रुपये ही दे, लोगोका देना हो गया है।

कुमुद—हाँ, तुझे क्या मै पहचानती नहीं हूं, रुपये हाथ लगते ही उस चुड़ैलके यहाँ जा पहुँचता है। पैसेके लिये, उसने झाड़ू मारी है इसीसे मेरे पास आया है। मै ही तेरे लिये मरती हूं, तू थोडे ही मुझे चाहता है!

शरत्—तो मैं गलीकूचोंमे किसी दाई मजूरिनकी खोज करता फिरूँ और तू अपने कोठेमे यार दोस्तोके साथ मौज उड़ाया करे।

कुमुद—तू दसहरे तक सबर कर, मैं माको समझा बुझाकर उसे छोड़ देती हूं।

शरत्—मैं छोड़नेको नहीं कहता। मेरे नशेपानीका खर्च देती रह। पाँच सौ रुपये न दे सके तो दो तीन सौका तो बन्दोबस्त कर दे, बेतरह देनदार हो गया हूं। धोबीका ही पचास रुपया देना हो गया है, चार चार आने कमीज-को धुलाई लेता है।

कुमुद—अच्छा देखा जायगा। अभी मेरे हाथ रुपये नहीं हैं।

शरत्—अपना कोई गहना दे न, बंधक रखकर काम चलाऊँ। मुझे साफ बात आती है, यों थोथी प्रीतसे काम नही चलेगा। एक सोनेकी चिड़िया फंसा दी है, मुझे भी तो कुछ चाहिये। नहीं तो मै भी किसी दूसरीको फँसानेकी फिकर करता हूं।

कुमुद—क्यों नही! तू बड़ा बेईमान है! मैं तो इसके लिये जान देती हूं और यह मेरी सुनता ही नहीं! तो जा-जहाँ खुशी हो जा। ये न आयँगे तो मानो मै मर ही जाऊँगी!

शरत—अच्छा बाबा, मै चला—अब नहीं आनेका। अब अगर बुलवाया तो मजा मालूम होगा।

कुमुद—अच्छा, अच्छा, जब बुलवाऊँ तब न। (कड़े उतार कर) ले यह ले, अब अगर तूने कुछ माँगा तो देखना मजा।

शरत—यह कड़ेकी जोड़ी तो मैने ही दी थी, इसमे चौदह आना पीतल है, इसे बेचनेसे क्या मिलेगा?

कुमुद—तू तो बड़ा ही बेईमान है। मेरे पास और क्या धरा है—तूने क्या कुछ छोड़ा है? एक एक कर सब तो साफ कर दिया।

(हीरू घोषालका प्रवेश)

हीरू—क्यो झगड़ रहे हो? क्यों झगड़ रहे हो? अरे, उधरकी भी कुछ खबर है? अनर्थ होने लगा है। बाबू भाईको लेकर परदेश जा रहे हैं। दो तीन महीने नहीं लौटने। मतलब यह कि बाहर रहनेसे वह सुधर जायगा और तुम्हे

छोड़ देगा। इस समय चखचख रहने दो, अगर उसे रोकना चाहती हो तो कोई उपाय करो।

शरत्—अरे मामला क्या है ?

कुमुद—तेरो इस हायहायसे ही तो बाबू हाथसे निकल चला है ?

शरत—बडी बाबूवाली बनी है! उसे फँसाया किसने था ? क्यो हीरू, मामला क्या है ?

हीरू—मामला बड़ा बेढब है! अगर किसी ढंग उसे रोक सकती हो तो रोक लो। अभी गाड़ी रिजर्व नही हुई है इससे आज रातको बगीचेमें रहेगा, कल रेलपर सवार होगा, फिर नहीं हाथ आनेका।

कुमुद—तो मैं क्या करूं ?

हीरू—एक चिट्ठी लिखो कि अगर तीन दिन तुम्हे न देख पाऊँगी तो जहर खा लूंगी

कुमुद—पर चिट्ठी भेजूंगी कैसे, तुम तो कहते हो कि वह बाग गया है।

हीरू—तुम जल्दी लिखो। उनके घरका श्यामा नौकर कपडे लेकर जायगा, उसीके हाथ भेज दूंगा। तुम चिट्ठी तो लिखो, नीरद बाबू पहुचा देंगे।

शरत—लिख—लिख।

कुमुद—क्यो छोड़ जाय न, अभी तो तू कह रहा था ?

शरत्—तू झगड़ा करती है और मैं तेरी भलाई ही चाहता हूं। मुझे सौ दो सौ रुपये देनेमे तेरी जान निकलने लगती

है और मै तेरे आगे रुपयेके ढेर लगवाये दे रहा हूं। ले, लिख—लिख—हाथसे निकल जानेपर फिर ऐसा असामी मिलना मुश्किल हो जायगा।

कुमुद—दावात कलम न जाने कहाँ रख दी है, उस कमरेमे देखूं।

(प्रस्थान)

हीरू—नीरदने तुम्हे बुलाया है।

शरत—क्यों—किस लिये? क्या वह मुझे जानता है?

हीरू—वह सबको जानता है, बड़ा गुरु है।

शरत्—तो चलो, देखूं किस लिये बुलाया है।

हीरू—वह घरपर मिलना नही चाहता। वह:कहता है, मन्मथ देख लेगा। वह तुम्हारे साथ स्कूलमे पढता था, तुम्हे जानता है।

शरत्—हाँ, घरपर मिलना तो ठीक नही है, शैलेन मुझसे जला हुआ है। तो फिर कहाँ मिलूं ?

हीरू—उसके मकानके सामने एक गँजेड़ी रहता है।

शरत्—वह कौन है?

हीरू—वह पागल है—शैलेनके बड़े भाईका दोस्त था। वह शवसाधना करने लगा था और, कहते हैं, उसीमें वह पागल हो गया। तभीसे बाबूने अपने मकानके सामने शिवालेके अहातेमें एक कोठरी बनवा दी है और वे ही उसका खर्च भी चलाते है।

(कुमुदिनीका प्रवेश।)

कुमुद—मुझसे वैसा लिखते न बना।

शरत्—तो क्या लिखा ?

कुमुद—शैलेन,अगर तुम मुझसे न मिले तो मै जहर खा लूँगी।

हीरू—बस बस, इतनेहीसे काम हो जायगा। लाओ—दो। आओ चलते हो ?

शरत—चलो।

कुमुद—चला क्यो, आज रह न। यही खा पी, आज तो वह आवेगा नहीं।

शरत्—तेरे यहाँ पडे रहनेसे क्या मिलेगा ? रुपये पैसेकी भी तो फिकर करनी होगी ?

कुमुद—चूल्हेमे पड़, तेरा मुंह न देखना चाहिये।

[शरत और हीरू घोषालका प्रस्थान।

इसने मुझपर जादू कर दिया है! माँ जो कहती है सो झूठ नही है, यही मेरा सत्यानाश करेगा। कितनी ही बार सोचा कि अब उससे न मिलूंगी, एक आध बार लौटा भी दिया, पर उसके बिना बिछौने पर रात भर रोया की। वह चला गया, अब मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। (प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

शैलेन्द्रका कमरा।

शैलेन्द्र और सरोजिनी।

शैलेन्द्र—रोओ मत, घूमने जा रहा हूं, घबरानेकी कोई बात नहीं है, मैं मजेमें ही रहूंगा। पर मैं रह न सकूंगा; मेरा जी घबरा रहा है।

सरोजिनी—अच्छा तो जेठजीसे कहकर रह जाओ न, जानेकी क्या जरूरत है?

शैलेन्द्र—नहीं नहीं, तुम समझती नहीं हो कि मैं क्या हो गया हूं। यहां रहनेसे और भी चौपट हो जाऊंगा। क्या कहूं, तुम मुझे वशमें करनेके लिये जादू-टोना कर सकती हो।

सरोजिनी—क्या कहा जादू टोना?

शैलेन्द्र—स्वामीको वश करनेके लिये जादू-टोना होता ही है। मैंने सुना है, वह सब नहीं जानती। किसी जाननेवालीका पता लगाओ जान पड़ता है, उसने कुछ कर दिया है, नहीं तो मैं ऐसा क्यों हो गया? तुम भाभीसे कह कर किसीको खुजवाओ जो जादू-टोना कर सके, जो कुछ खिला कर मुझे तुम्हारे वश कर सके।

सरोजिनी—राम राम! ऐसी बात मुंहसे न निकालो। मैंने गांवमें सुना है कि एक स्त्रीने किसीकी बातमें आकर न जाने क्या खिला कर अपने स्वामीको मार डाला था।

शैलेन्द्र—वह तो अच्छा है,इस तरह जलना तो न पड़े। जी चाहता है अभी वहाँ दौड़ जाऊँ,भैया गुस्से हों तो हो। पर वहाँ जानेपर भी चैन नही, यहाँ भी चैन नही।

(नीरदका प्रवेश।)

नीरद्—चाचाजी, आपको अपना तमंचा फिरसे पास कराना होगा।

शैलेन्द्र—तुम पास करा लेना।

नीरद्—उसका नम्बर मुझे मालूम नही और बिना नम्बर बताये पास होगा नहीं।

शैलेन्द्र—नम्बर वम्बर तो मैने कभी देखा नही। यह लो चाभी, वह मेरी बैठककी आलमारीमें है, जाकर देख लो। हाँ, मुझसे पाँच हजार रुपयेकी चेक क्यों कटवायी थी?

नीरद्—रुपयेकी जरूरत पडेगी। मेरे नामका मुख्तारनामा आज ही रजिस्ट्री आफिसमे गया है, उसके मिलनेमे देर होगी, विना उसके मै चेक नही काट सकूँगा। उनसे चेक कटवाने जाऊँगा तो वे हिसाब मागेंगे। अभी जल्दीमे हिसाब कैसे दिया जा सकता है?

शैलेन्द्र—अच्छा किया। [चाभी लेकर नीरदका प्रस्थान।

सुनो, तुम भी साथ चलो। भैयाके साथ मैं एक दिन भी न रह सकूँगा। मेरा जी अभीसे उदास हो रहा है। न जाने क्यो उसके लिये व्याकुल हो रहा हू। वह पाजी है, मुझसे प्रेम नही करती, झगड़ा करती है, फिर भी

उसे देखे बिना जी नही मानता ! मुझे यह क्या हो गया— न जाने क्या हो गया !

सरोजिनी—अगर तुम्हारा मन नहीं है तो घूमने मत जाओ, मै बड़ी जीजीके पैर पकड़कर कहती हूं।

शैलेन्द्र—तुम कुछ समझती नही हो, सीधी हो, देखती नही, मै चौपट हो गया ? मुझपर जादू किया गया है !

(नीरदका पुनः प्रवेश)

नीरद—चाचाजी, वह आलमारी तो खुली पड़ी है, उसमे तमंचा नही है। कुछ प्याले और एक बोतल है। देखिये, आपने और कहीं तो नही रखा है? मैंने एक दिन आपको उसे हाथमे ले जाते देखा था। मन्मथके पूछनेपर आपने कहा था कि किसीको दिखाना है।

शैलेन्द्र—है—क्या वहाँ छोड़ आया ! नहीं, मुझे याद है, मै ले आया था।

नीरद—खैर, मैं किसी तरह पास करा लूँगा। चाची, देखा, ये कहाँ क्या रखते है यह भी इन्हे याद नहीं रहता ! देख लिया न ? [प्रस्थान।

शैलेन्द्र—सचमुच मैं बड़ा भुलक्कड़ हूँ, सब भूल जाता हूँ। पर उसे तो मै एक घड़ीके लिये भी नही भूलता। हाय ! मुझे क्या हो गया—मुझे क्या हो गया !

(विरजा और तरंगिणीका प्रवेश।)

मँझली भाभी, मैं पागल हूँ, मैने तुम्हे न जाने क्या क्या

कह डाला है। बुरा मत मानना। जैसा तुम्हारा नीरद है वैसा ही मै हू।

तरंगिणी—तुमने नशेकी झोकमे न जाने क्या कह डाला, भला उसके लिये बुरा मानूँगी?

शैलेन्द्र—बड़ी भाभी, तुम भैयासे कहना कि मै एकदम दो महीने बाहर न रह सकूँगा।

विरजा—नही रह सकता तो न रहिये, अपने भैयाको पहुंचाकर उनके रहनेका बन्दोबस्त ठीकठाक कर चला आइयो। और जब तुम लोगोंके रहनेकी जगह ठीक हो जायगी तो, हुआ तो, मैं भी छोटी बहूको लेकर चली आऊँगी।

शैलेन्द्र—मँझली भाभी, तुम इसका ध्यान रखना, यह बड़ी सीधी है,कुछ नहीं जानती। मुझसे कभी कुछ नहीं कहती, गुस्सा जानती नहीं, मेरे चले जानेपर रो रोकर मर जायगी। तुम इसका ध्यान रखना; बड़ी भाभी गृहस्थीके झंझटमें फँसी रहती है। यह बड़ी दुखी है, मँझली भाभी, बड़ी दुखी है।

तरङ्गिणी—ध्यान न रखूँगी तो क्या सड़क पर खड़ी कर दूंगी?

शैलेन्द्र—तुम रोओ मत, तुम्हारा रोना-धोना देखकर मुझे गुस्सा आता है। मैं घूमने जा रहा हू इसमे तो भलाई ही है। यह बड़ी मूरख है, कुछ नहीं समझती।

विरजा—तुम्हारे भैयाने गाड़ी जोतनेको कहा है, तुम तैयार हो आओ। समय बीता जा रहा है, यात्रा करनी होगी।

शैलेन्द्र—आज तो जायंगे नहीं, आज घरमें ही रहूं तो क्या कुछ हर्ज है ?

विरजा—कल दिन अच्छा नहीं है, आज अच्छा दिन है, यात्रा कर बगीचेमे जाकर रहो। हम सब भी आती है।

शैलेन्द्र—अच्छा मैं चला।

[विरजा और तरंगिणीको प्रणामकर शैलेन्द्रका प्रस्थान। उसके पीछे तरंगिणी और विरजाका प्रस्थान। पीछेमे सरोजिनीका विरजाका आँचल पकड़कर खींचना।]

विरजा—क्या है री ?

सरोजिनी—ओ जीजी, मेरा मन न जाने क्यों घबरा रहा है, तुम उन्हें जाने मत दो।

विरजा—क्यो री, तू ऐसी गँवार क्यो है ? भाईके साथ घूमने जा रहा है, इसमे घबरानेकी कौनसी बात है—वह सुधर जायगा।

सरोजिनी—नही जीजी, मेरा सत्यानाश हो जायगा, पहले भी एक बार ऐसा ही हुआ था, उसी दिन एकाएक बाबूजी मर गये।

विरजा—चुप रह मूरख, मुंह सी दूंगी।

सरोजिनी—नहीं जीजी, तुम गुस्से मत हो, मेरा मन घबरा रहा है। न जाने क्या होनेवाला है। मानो कोई कह रहा है कि तेरा सत्यानाश होगा।

विरजा—चुप रहती है कि नहीं बेहया, ऐसी अशुभ बात मुँहसे

न निकाल। वे लोग ठाकुरजीका दर्शन करने जा रहे है। चल, तू भी चल कर दर्शन कर।

[दोनोंका प्रस्थान।

चौथा दृश्य।

शिवमन्दिरका सामना।

नकुलानन्द अवधूत।

(खाना लेकर फूलीका प्रवेश।)

अव—क्यो री—क्या है ?

फूली—बाबा, बड़ी मालकिनने तुम्हे यह मिठाई भेजी है।

अव—खबरदार, मुँह संभालकर बात कर।

फूली—क्यो बाबा, क्या हुआ ?

अव—फिर 'बाबा'! क्या किसीको दादी बनावेगी ?

फूली—तो तुम्हे क्या कहूँ ?

अव—भैरव कह। नही नही, भैरव कहनेसे भैरवियॉ आ धमकेगी।

फूली—आ ही जायँगी तो क्या होगा ?

अव—अरी उन्हे सभालेगा कौन ? मै नन्दका लाल हू, घुटनेके बल घूमूँगा! समझी ?

फूलो—हाँ, समझी बाबा, तुम नन्दके गोपाल हो !

अव—पर उसमे भी एक अड़गा है। वृन्दावनमे वशी बजानी होगो। गोपियाँ लंगोटीतक उतरवा लेगी।

फूलो—तो क्या होगे ?

अव—मैं कार्त्तिक हूंगा, मोरपर चढ़ूँगा।

फूली—उन्हे भी तो विधवाएँ ले जाकर पूजेगी।

अव—यह ठीक है। मै चढ़ी हुई चीजे खाकर 'मा' कहकर फुर हो जाऊँगा।

फूली—बाबा—

अव—फिर वही बाबा—

फूली—मिठाई कोठरीमे रख दूँ ?

अव—(लेकर) ले, कुछ तू भी ले ले, कुमारी पूजा हो जाय।

फूली—नही बाबा, उस समय आकर प्रसाद लूँगी।

अव—अच्छा तो, अपना वह नवमीवाला गाना तो सुना जा।

(फूलीका गाना।)

झिंझौटी—विहाग।

सखी री, मन मेरो घबरात।
भोलीभाली गौरी मेरी कल कैलासहि जात॥
रवि शशिको नहि उदय जहाँ है अँधियारो दिन रात।
भूत पिशाच रहै नित घेरे बाहन बैल लखात॥
माँगत भीख रहत नित नंगो भस्म लपेटे गात।
कैसे भोला रखिहै याको भाँग धतूरा खात॥

फूली—(आप ही आप) हीरू किसको लिये आ रहा है। इसमें जरूर कोई भेद है, छिपकर सुनती हूं। (प्रकट) बाबा, मैं मन्दिरमें जाती हूं फूलपत्ते साफ किये देती हूं।

(फूलीका मन्दिरमें प्रवेश।)

अव—इस छोकरीका जन्म डाइनके अंशसे है या योगिनीके अंशसे या नायिकाके अंशसे !

(शरत् और हीरू घोषालका प्रवेश।)

हीरू—तबतक तुम यहाँ बैठकर बातचीत करो; गाँजेकी चिलम उड़ाओ। [हीरू घोषालका प्रस्थान।

अव—तुम कौन हो ?

शरत्—मुझे क्या पहचानते नहीं अवधूतजी ?

अव—हाँ पहचान लिया, तू मोची भूतका बच्चा है।

शरत्—लाओ न अवधूतजी, एक चिलम तैयार करूँ।

अव—हूं, दम लगावेगा ? तू नन्दीका नाती जान पड़ता है, देखता हूं न कि तू कितना मजबूत भूत है। तू तैयार कर, मैं बेल पेड़के ब्रह्म दैत्यसे मिल आऊँ, वह एक आध दम लगाता है।

(प्रस्थान)

(नीरद और हीरू घोषालका प्रवेश)

हीरू—यही शरत् बाबू है !

नीरद—अच्छा, अच्छा, तुम देखो मन्मथ कहाँ है ? वह कहीं इधर न आ जाय।

हीरू—(आप ही आप) ऐसा कौनसा मनसूबा गाँठना है जो मै धता बताया जा रहा हूं। मै शरतसे सब उगलवा लूंगा।

नीरद—जाओ न—खड़े क्यो हो? जानते नही हो कि मन्मथ मेरी ताकमे फिर रहा है?

हीरू—(आप ही आप) तो मै भी ताकमे ही हू।

(प्रस्थान)

नीरद—(निकट हो कर) शरत बाबू!

शरत—क्यो नीरद बाबू, आपने मुझे बुलवाया है?

नीरद—हाँ। आप मेरा एक काम कर सकते है? मै आपको एक सौ रुपये दूंगा।

शरत्—क्या काम है साफ साफ कहिये।

नीरद—आज अगर मेरे चाचा कुमुदके घर जायँ तो वहाँ आप फसाद खड़ा कर सकते है।

शरत्—बाबा, बडे आदमीसे कौन उलझे, मुझे जेल थोड़ेही जाना है?

नीरद—अगर जेल भी न जाना हो और उलटे कुछ मिल जाय तो?

शरत्—विना सोचे समझे मैं जबाब नही दे सकता।

नीरद—अगर ऐसा कोई काम हो जिसमे आप फंसे तो साथ मैं भी फँसू तब तो कर सकते है न?

शरत—बाबा, तुम्हारी बातोसे तो जान पड़ता है कि यह एक सौ रुपयेका काम नहीं है। तुमने कोई गहरा मनसूबा बाँधा है।

नीरद्—आपका खयाल ठीक है यह सौ रुपये तो बयाना है।

शरत—बाबा, थप्पड़ घूँसोंतक ही रहे तो ठीक, इसके आगे नहीं बढ़ सकूँगा।

नीरद्—पाँच हजार रुपये मिलें तोभी नहीं?

शरत—तो क्या खून खराबा करना है?

नीरद्—अगर वही करना हो तो—

शरत—नहीं बाबा, मैं मौजी जीव ठहरा, मुझसे यह न हो सकेगा।

नीरद्—काम बहुत सहज है। मुझे जो कुछ देना है वह तो दूंगा ही, साथ ही आप चाचाजीसे भी कुछ चीर लेंगे।

शरत—अच्छा, सुनूं तो सही कि क्या करना होगा?

नीरद्—आपको देखते ही चाचाजी आप पर आग बबूला हो उठेंगे, आप धक्का मारकर उन्हे गिरा दीजियेगा, मै तमंचा देता हूं, उसे दीवार पर दो वार चलाइयेगा। इसके बाद थानेमे दौड जाइयेगा और वहाँ कहियेगा कि वे मेरा खून करने आये थे।

शरत—यहाँतक तो किसी तरह हो सकता है। अच्छा, इसके लिये मिलेगा क्या?

नीरद—आप क्या चाहते है?

शरत—दो-हजार।

नीरद्—और अगर बरामदेपरसे उन्हें फेंक दें तो क्या लीजियेगा?

शरत्—अरे बाबा. खून हो जायगा! वह नाजुक आदमी ठहरा, अगर कहीं ढेर हो जाय तो?

नीरद्—अच्छा, एक आध लाठी जमाकर घायल करे तो ?

शरत्—क्या दोगे ?

नीरद्—पांच हजार।

शरत्—नगद या नोट

नीरद्—नोट।

शरत्—अगर करेन्सी आफिसको इत्तिला कर दो कि फलां फला नम्बरके नोट रोक लेना तो मै मरा न ? तुम जैसे "गुरु" हो मुझे फँसाना तुम्हारे लिये कोई बड़ी बात नही है।

नीरद्—मैं नगद रुपये देकर नोट ले लूँगा। नहीं तो नोट जला डालियेगा। पाँच हजार रुपये जला डालनेको तो दे नहीं रहा हूं कामके लिये ही दे रहा हूं

शरत्—अच्छा, देखा जायगा।

नीरद्—कोई डर नहीं। इस तमंचेपर चाचाजीका नाम खुदा हुआ है। बात समझ लीजिये, वे परदेश जा रहे है, मौका पाकर आप लोग वहाँ मौज उड़ा रहे है। यह मालूम होते ही वे आग बबूला हो तमचा लेकर आपका खून करने जाते हैं। दो बार उन्होंने तमंचा चलाया भी। आप अपने बचावका कोई उपाय न देख उन्हें मारकर भाग जाते है। इसके बाद आप उनपर attempt to murder (इत्याकी चेष्टा)का मुकद्मा चला दीजियेगा, इज्जत बचानेके लिये हम लोगोंको झक मार कर रुपये देकर मामला निपटाना ही पड़ेगा।

शरत्—बड़ा टेढ़ा काम है बाबा ! यहाँ तक कभी नौबत नही पहुंची थी ।

नीरद—मै आपकी पीठ पर हू, मामलेमुकद्दमेमे आपको रुपयेकी कभी कमी न होगी ।

शरत्—अच्छा तो रुपये निकालो ।

नीरद—यह लीजिये, हजार हजार रुपयेके पॉच नोट है ।

[नोट देकर नीरदका प्रस्थान ।]

शरत्—गॉजेका दम लगाता जाऊँ—बड़े झंझटका काम है ।

[जाना चाहता है]

फूली—(मन्दिरसे आप ही आप) मामला कुछ समझमे न आया । इसे चकमा न दे सकूंगी ।

(फूलीका मन्दिरसे निकलकर कुछ बेलपत्र शरत् पर फेकना ।)

शरत्—कौन है बाबा ! कमीज खराब कर दी !

फूली—क्यो साहब, फूलकी चोटसे आपको क्या मूर्च्छा आ जाती है ?

शरत्—है—है बात क्या है ?

फूली—फूलकी चोट ही जब आपसे सही नही जाती तब आपसे क्या कहू ।

शरत्—बासी बेलपत्रोकी टोकरी भला सही जा सकती ? कमीज पर दाग लग गये । ताजा फूल हो तो छातीसे लगा कर रखूं ।

फूली—वाह ! आप है तो रसिया ।

शरत्—कहाँ रहती हो जान ?

फूली—आपके साथ रहनेको जी चाहता है।

शरत्—मुझे कब इनकार है?

फूली—वह बाबू कौन था—किसके साथ बातें कर रहे थे?

शरत्—कौन—बाबू कौन? तुम्हे इतनी खोज खबरसे क्या काम?

फूली—नहीं तो फिर बाबुओंकी खोज कौन करेगा?

शरत्—क्यों—क्या मै पसन्द नही आया?

फूली—आपने छेड़-कर तो मुझसे बात की नही।

शरत्—तुम्हारा घर कहाँ है?

फूली—साथ चलिये—देख लीजिये।

शरत्—यहाँ क्या कर रही थी?

फूली—इस बाबाके पास हाथ दिखाने आयी थी, ये बड़े भारी ज्योतिषी है।

शरत्—सचमुच?

फूली—परीक्षा कर लीजिये। वे बता देंगे कि आप किस लिये आये है और भला होगा या बुरा?

(अवधूतका प्रवेश।)

फूली—बाबा! इनका हाथ तो देखना।

अवधूत—यह नन्दीका बच्चा है, देख न इसके कपड़े पर रक्तचन्दन बेलपत्रके दाग लगे है। एक बार मेरी ओर ताक तो सही। ओह! तेरे पेटमे तो एक चलतापुर्जा भूत पैठ गया है। मेरी ओर ताक, मैं झपाटेसे उसे निकाल बाहर करता हूं।

(इतनेमें फूलीका शरतकी जेबसे तमचा निकाल कर देखना)

शरत्—(चौंक कर) हैं—तू क्या चोर है? सिपाहीको बुलाकर पकड़ा दूँगा, जानती नहीं?

फूली—क्या चीज चमक रही है यही देख रही थी।

शरत्—बच्चोंके लिये खिलौना खरीदा है।

(प्रस्थान।)

फूली—(आप ही आप) कुछ समझमें नहीं आया। तमंचा तो शैलेन बाबूका था। इसने क्या फरफन्द रचा है, अच्छी तरह समझमें नहीं आया। इसके पीछे जाती हूं, देखूँ कहाँ जाता है।

अवधूत—क्यों री नटखट, उड़ने चली? अच्छा जा, मैं भी उड़ता हू।

(प्रस्थान।)

पाँचवां दृश्य

बगीचा।

उपेन्द्र।

उपेन्द्र—ओह! मारे चिन्ताके रातको नींद नहीं आयी। किसी तरह वह गाड़ी पर सवार हो जाय तो निश्चिन्त होऊँ! वह भी रातभर पड़ा पड़ा छटपटाता रहा। मुझे यही

खटका लगा हुआ है कि न जाने कब वह उठ कर चलता बने। रात तो बीत गयी— (शैलेन्द्रका प्रवेश।)

उपेन्द्र—कौन—शैलेन? कहाँ जा रहे हो?

शैलेन्द्र—मै अभी आता हूं।

उपेन्द्र—अभी आता हूं क्या? ८ बजे गाड़ी पर सवार होना होगा।

शैलेन्द्र—मैं अभी आता हू, नहीं तो अनर्थ हो जायगा।

उपेन्द्र—अनर्थ क्या हो जायगा?

शैलेन्द्र—सच कहता हूं, अनर्थ हो जायगा।

उपेन्द्र—तुम्हारे हाथमे वह क्या है?

शैलेन्द्र—चिट्ठी। भैया, मैं अभी आ जाऊँगा।

उपेन्द्र—समझ गया, उस हरामजादीने चिट्ठी लिखी है। इसीसे जा रहे हो। पर तुम जाने नही पाओगे।

शैलेन्द्र—मैं जाऊँगा, नहीं तो स्त्री-हत्या हो जायगी। भैया, आप जानते नही, वह बड़ी जिद्दी औरत है, किसीकी सुनती नही। गजब हो जायगा, या तो अफीम खा लेगी या गलेमें फाँसी लगा लेगी।

उपेन्द्र—अरे सत्यानाशी, तुझे हया शर्म कुछ भी नही है?

शैलेन्द्र—भैया, मैं सच कहता हूं, मैं नशेमे नही हूं। मै न जाऊँगा तो जरूर वह जान दे डालेगी। एक दिन लड़ झगड़ कर वह अफीम खा ही चुकी थी, मैंने मुंहमे उँगली डाल कर अफीम निकाली, देखिये उँगलीमें अभी तक उसके काटेका दाग है।

उपेन्द्र—देखो शैलेन, तुम्हारा बाहर जाना रोकनेके लिये ही उसने यह ढंग रचा है। तुम्हें मै जाने न दूंगा; नहीं तो तुम्हारा जाना न होगा।

शैलेन्द्र—मै एक बार जाऊँगा और तुरत लौट आऊँगा।

उपेन्द्र—मै तुम्हे जाने न दूंगा।

शैलेन्द्र—मैं बिना गये न मानूंगा।

उपेन्द्र—तुम पागल हो गये हो, मै तुम्हे बाँध कर गाड़ी पर बैठाऊँगा।

शैलेन्द्र—नहीं भैया, स्त्री हत्या हो जायगी। बात बढ़ाइये मत, आपकी बात न रहेगी, मै तो जाऊँगा।

उपेन्द्र—सुनो, अगर तुम गये तो आजसे तुम्हारा मुंह न देखूंगा।

शैलेन्द्र—मै आपके पैर छू कर कहता हूं, अभी लौट आऊँगा।

उपेन्द्र—नहीं, तुम जाने नही पाओगे। तुम इतने बड़े हो गये हो, अब भी वेश्याका छल नही समझ सकते! अगर तुम्हें मेरा लिहाज है तो मेरी बात मानो। लज्जा, घृणा त्याग कर तुम्हारी बहुत सही, अब मै नहीं सहूंगा। अगर जाओगे तो तुम मेरे भाई नहीं।

शैलेन्द्र—नहीं तो न सही, मै तो जाऊँगा।

उपेन्द्र—मैं तुम्हे किसी तरह न जाने दूंगा।

शैलेन्द्र—छोड़ दो भैया—छोड़ दो, क्यो अपना अपमान कराते हो। मैं जहन्नुममे जाऊँ—मरूं, इससे तुम्हारा क्या?

मै तुम्हारी बातमें नहीं पड़ूँगा—तुम मेरी बातमें मत पड़ना—

उपेन्द्र—अरे निर्लज्ज, जो मनमे आ रहा है, बक रहा है! नीरद्—नीरद्—

नीरद्—(प्रवेश कर) जी हाँ—

उपेन्द्र—दरवाजा तो बन्द कर दे।

शैलेन्द्र—खबरदार! खून हो जायगा—छोड़ दो—

(लाठी उठा कर उपेन्द्रको धक्का मार कर वेगसे प्रस्थान।)

(तरङ्गिणीका प्रवेश।)

उपेन्द्र—ऐं—ऐं—आखिर यहाँ तक नौबत पहुंची! कैसा भ्रम था!

(तरंगिणीके बोलनेकी चेष्टा करना पर नीरदके संकेत पर चुप रहना।)

(विरजाका प्रवेश।)

विरजा—क्यों जी, हुआ क्या ?

उपेन्द्र—शैलेन्द्र, मुझे धक्का मार कर चला गया।

विरजा—गया तो जाने दो—मरने दो। तुम अकेले ही रवाना हो जाओ।

उपेन्द्र—अब मुझे कुछ न कहना—अब मेरा कोई अपराध नहीं है। अब मुझसे कुछ कहनेका किसीका मुँह नहीं रहा। सच-मुच वह खून कर सकता है।

विरजा—जाने दो—बरबाद हुआ होने दो।

तरं०—क्या लाठी उठायी थी ?

उपेन्द्र—बस हद हो गयी ! मैं भी कैसा मूर्ख हूं ! किसके लिये इतनी हायहाय करता हूं ? मरने चला हूं तोभी मोह नही छूटता—भाई भाई किये जा रहा हूं। धिक्कार है मुझे ! बड़ी बहू, सबका जुदा होना ही ठीक है। मैं काशी जाता हूं, नीरदको मुख्तारनामा दिये जाता हूं, निताई बंटवारा कर देगा, राजी खुशी हो जाय तो अच्छा ही है, नहीं तो जो होना होगा वह होगा।

विरजा—जो होना होगा वह होगा—तुम जाओ, सोच फिकर मत करो, अपने शरीरकी रक्षा करो। सोचते क्या हो—रहकर तुम्ही क्या कर लोगे—और मैं ही क्या कर लूंगी ? उसके भागमे जो बदा है सो होगा। है—उसने क्या कहा—खून करूँगा ! मैंने समझा, वह किसी दूसरेको कह रहा है। देखो, तुम उसे एकदम भूल जाओ। वह तुम्हारा नालायक भाई है। वह तुम्हारी जान लेनेपर उतारू हुआ है।

उपेन्द्र—ओह ! मनुष्य इतना गिरता है ! [प्रस्थान।

नीरद—ताईजी, चाचा जी पागल हो गये है। सुनता हूं, उसने कुछ खिलाकर उन्हें ऐसा कर डाला है। उन्हें हिस्सा न देना चाहिये, शराब पिलाकर उनसे सब कुछ लिखवाकर उनके हाथ पॉव जकड़ देने चाहिये। बाबूजीको समझाकर कहो कि वे अब भाईकी खातिर कलकत्ते न रहें। डाक्टर कहता है कि अगर वे यहां रहेगे तो बचेंगे नहीं। उनका जाना कहीं आज रुक न जाय।

छठा दृश्य

मार्ग

मन्मथ और फूली ।

फूली—मन्मथ बाबू—गजब हो गया !

मन्मथ—तेरी देहपर यह खून कैसा ? क्या हुआ है ?

फूली—वह कुछ नही है—गिर पड़ी थी । जल्दी चलो, छोटे बाबूकी जान बचाओ

मन्मथ—कहाँ चलूँ ?

फूली—कुमुदके घर । अबतक वहाँ खून हो गया होगा । चलो—जल्दी चलो ।

मन्मथ—खून ? किसका खून ?

फूली—चलो, बताती हूं ।

मन्मथ—तुझसे तो चला नहीं जाता, तू तो हाँप रही हैं ?

फूली—चल सकूँगी—चल सकूँगी, चलो गाड़ी किराये कर लें ।

मन्मथ—मुझे तो घरका पता मालूम नहीं है ।

फूली—मैं घर देख आयी हूं, सलाह मशवरा भी कुछ सुन आयी हूं । चिट्ठी भेजकर छोटे बाबूको बुलवाया है, उन्हें रास्तेमे मैंने देखा है । छोटे बाबूका तमचा ले गया है—जो ले गया है उसे मैंने पहचान लिया है । शायद वह खून करेगा । चलो—चलो— [वेगसे दोनोंकाप्रस्थान ।

सातवाँ दृश्य

कुमुदिनीका कमरा।

कुमुदिनी और शरत्

नेपथ्यमें शैलेन्द्र—दरवाजा खोल—दरवाजा खोल—

कुमुद—क्यो—इतने सवेरे क्यो हल्ला मचा रहे हो ?

(शैलेन्द्रका प्रवेश।)

शैलेन्द्र—तेरे कमरेमें कौन है ? अपने बाबाजानको घरमे घुसा कर मुझे चिट्ठी लिखी ?

कुमुद—कोई हो—तेरा क्या ?

शरत्—वाह ! शैलेन बाबू, एक तो मेरी रंडी छीन ली और पूछते हो—तेरे कमरेमें कौन है !

शैलेन—कमीना कहींका !

शरत्—क्यो रे साले ! मेरी रंडीसे यारी ?

शैलेन्द्र—क्या खून करेगा ?

(शरत्का दो बार तमचा चला कर लाठी उठा कर शैलेन्द्रके सिर पर जमाना।)

शैलेन्द्र—अरे खून कर डाला—खून कर डाला—

शरत्—खून कर डाला—खून कर डाला।

कुमुद—हैं यह क्या किया—मार डाला !

(शरत्का शैलेन्द्रके बायें हाथमें तमचा रखकर चम्पत होना और कुमुदिनीकी माँ तथा दूसरी वेश्याओंका आना।)

कुमुदकी माँ—अरी, क्या गजब कर डाला !

कुमुद—शरत पर इसने गोली चलायी थी, वह लाठी मार कर भाग गया।

कुमुदकी माँ—ऐं क्या खून हो गया ? मुँहपर पानी छिड़क।

(फूली और मन्मथका वेगसे प्रवेश।)

फूली—यह देखो—कैसा अनर्थ हो गया !

(मन्मथका शीघ्रतासे शैलेनके घावपर पट्टी बाँधना।)

मन्मथ—किसने मारा ?

कुमुद—अजी, मै क्या जानूं ! मारपीट हुई थी। मेरे घरमे आदमी देख बाबूने तमंचा चलाया था ; वह लाठी मारकर चलता बना। वह देखो—दीवारपर गोलीका निशान है।

फूली—देखेंगे क्यों नहीं—किसे दिखा रही है ? बस चुप रह। तू जिस कुलकी है, उसी कुलकी मै भी हूं। बस चुप ही रह, मैंने सब सुना है। शरत् बाबूने पूछा था—दरवाजेके पास कौन है ? तूने कहा था—"शायद माँ है।" वह तेरी माँ नहीं थी—मैं थी।

(पुलिसको लेकर शरत्का प्रवेश।)

शरत्—मैंने अपनी जान बचानेके लिये इसे मारा है।

दारोगा—तो बाबू, जब खून खराबी हुई तब तो मै तुम्हे छोड़नेका नहीं। और औरत तो मजेमें है उसे तो उसने गोली मारी नहीं। आपने लाठी बड़े जोरसे मारी है। अब तो साहब जो हुक्म देंगे वही होगा। आज आपको थानेकी

हवालातमें रहना होगा। आप देखते नही है कि यह खूनका मामला है ?

फूली—जनाब, यह खूनका मामला है।

दारोगा—अरे, यह पगली यहाँ कहाँ ? तेरी देहपर यह खून कैसा ?

फूली—दौड़ी आ रही थी, रास्तेमे गिर पड़ी।

दारोगा—इसने तमंचा चलाया था। देखता हूं, बाँयं हाथसे चलाया था !

मन्मथ—दारोगा साहब, इन्हे अस्पताल ले चलिये। (कुमुदिनीसे) क्यो जी, तुम्हारे यहाँ शराब होगी ?

दारोगा—होगी क्यों नही—उसीने तो यह उपद्रव कराया है। वह बोतल है।

(मन्मथका शैलेन्द्रको शराब पिलाना।)

शैलेन्द्र—अरे बाप रे !

दारोगा—(शरत्से) बाबू आपको थाने चलना होगा।

मन्मथ—दारोगा साहब, अपने सिपाहियोंसे इन्हें पकड़कर सीढ़ी उतारनेको कह दीजिये।

फूली—दारोगा साहब, उनके कुरतेकी जेबमें क्या है देखिये, कुरता साथ ले लीजिये।

शरत्—कुरता धुलनेको देना है—कुरता धुलनेको देना है। कुरता क्या होगा ?

दारोगा—देखूं बाबू, जेबमें क्या हैं ? (कुरतेकी जेबसे नोट निकालकर) ये तो ताजे नोट है—पाँच हजारके ! क्या

बाबू आपको रुपये देकर खून करने लगा था? आपकी हालत तो मुझसे छिपी नहीं है, ये नोट आपने कहाँसे पाये? चुप क्यों हो रहे? अच्छा, चलिये साहबके सामने बताइयेगा।

फूली—शरत् बाबू, बच्चेके लिये जो खिलौना खरीदा था, उसे न ले जाइयेगा?

दारोगा—खिलौना कैसा री पगली?

फूली—वही जो खिलौना है?

मन्मथ—फूली, क्या बक रही है?

दारोगा—(तमंचा उठाकर) यही खिलौना है! यह खिलौना क्या बाबूने खरीदा था?

मन्मथ—दारोगा साहब, यह पागल है, आप इसकी बात क्या सुनते है!

दारोगा—क्यो बाबू, इसमे क्या कुछ भेद है? आप तो हमारे कामके नहीं है, फिर धमका क्यों रहे हैं?

मन्मथ—अजी साहब अभी इन बातोंको रहने दीजिये—इन्हे अस्पताल ले चलिये।

दारोगा—चलिये—चलिये। (कुमुदिनीसे) बीबी, मामला संगीन है—यो नहीं पीछा छूटनेका!

कुमुद—बापरे बाप! कैसे खूनियोको घर आने दिया था!

दारोगा—रुपये गिन लिये होगे तब घरमे घुसने दिया होगा। तुम सब इसके पेटमें हो—चलो। [सबका प्रस्थान।

चौथा अङ्क

पहला दृश्य ।

उपेन्द्रके मकानका बाहरी हिस्सा ।

मन्मथ और वैद्यनाथ ।

मन्मथ—वे तो लाठी खाकर बेसुध हो गये ; इधर उनपर यह अभियोग लगाया गया कि वे तमंचा लेकर खून करने गये थे ।

वैद्य—हाँ तो तुमने निपटाया कैसे ?

मन्मथ—फूलीने नीरद भैयाको शरत्‌को तमंचा और पाँच हजार रुपयेके नोट देते देखा था । वे नोट शरत्‌की जेबसे मिले । इधर नीरद भैयाने करेन्सीमें नोटोंका भुगतान रुकवा दिया ।

मन्मथ—मैंने निताई बाबूसे सब हाल कहा । शरत् भी अकड़ बैठा, बोला मुझे कैद हो चाहे जो कुछ हो, मै सब बातें साफ साफ कह दूँगा । इससे नीरद भैया डरे, और जो पाँच हजार दिये उनके सिवा और कुछ दे दिलाकर मामला निपटाना पड़ा ।

वैद्य—फिर क्या हुआ ?

मन्मथ—खबर पाकर मौसाजी काशीजीसे आये और भाईपर ही बिगड़े। नीरदके नाम वसीयतनामा कर जायदादके बँटवारेका दावा करनेको कहकर चले गये। वह मामला अभी चल रहा है।

वैद्य—और शैलेनसे नीरदके हैण्डनोट खरीदनेकी बात कैसी है?

मन्मथ—छोटे बाबू जब खाटपर पड़े हुए थे उस समय नीरद भैया सेवा-टहलमें ऐसे लग रहे थे कि मानों उन्हें चाचाका बड़ा दरद हो! इस समय वे छोटे बाबूके प्यारे बन गये। छोटे बाबूने जिन मुफलिसोंको रुपये-उधार दे रखे थे उनके हैण्डनोट 'एनडोर्स' (Endorse—सही) करा लिये। इसके सिवा कुछ जाली हैण्डनोट भी नीरद भैयाने तैयार किये थे, उन्हें भी एनडोर्स करा लिया। कुल मिलाकर कोई एक लाख रुपया होता है। इस रकमके लिये वे छोटे बाबूको जिम्मेवार कर रहे हैं।

वैद्य—निताई क्या कहता है?

मन्मथ—वे कहते हैं कि शिबू वकीलसे छोटे बाबूने सब ठीकठाक कर लिया है अब कोई उपाय नहीं है। इधर उसने रुपये पैसे रुकवा दिये है, बँटवारेके मामलेमें ही सब स्वाहा होना चाहता है। अब भी छोटे बाबूका शिबूपर विश्वास है। नीरद भैयाने कान भर भरकर छोटे बाबूका मन मेरी और बड़ी माँकी ओरसे फेर दिया है। उनका खयाल है कि हम लोगोंने ही उलटी सीधी लगाकर मौसाजीको भरा

है—नीरद भैयाको उकसाया है। यह जितना कुछ हो रहा है हमी लोगोका काम है।

वैद्य—बड़ी बहू कहाँ है?

मन्मथ—वे मौसाजीसे मिलने काशी गयी है।

वैद्य—एं! यहाँतक नौबत पहुँच गयी? जब मैं वालटियर घूमने गया था तब शायद इसका श्रीगणेश नही हुआ था?

मन्मथ—नहीं। उसके बाद ही यह बखेडा खडा हुआ।

वैद्य—यह सब हाल तुमने मुझे लिखा क्यो नहीं?

मम्मथ—इसलिये कि आप सख्त बीमार थे, आराम होनेके लिये गये हुए थे और उस समय मै भी यह चालबाजी नही समझ सका था।

वैद्य—अरे भाई, तुम नही जानते कि इस घरसे मेरा क्या सम्बन्ध है, इसीसे तुमने पत्र नही लिखा। किसकी बदौलत मैं इतना बड़ा हुआ? वडे बाबूने मेरी परवरिश की। तुम्हारी बड़ी माँ जिस नजरसे उपेनको देखती है उसीसे मुझे देखती हैं। खैर, जो होना था वह हो गया। अब आगे क्या किया जाय?

मन्मथ—आप छोटे बाबूसे मिलिये—किसी तरह उनकी आँखें खोल दीजिये।

वैद्य—उसे इतनेपर भी होश नही आता। अच्छा देखता हूं।

मन्मथ—आपसे एक बात कहता हूं; मुझपर भी विश्वास मत कीजियेगा।

वैद्य—क्यों ? पगलेकी बात तो सुनो !

मन्मथ—आप जिस मन्मथको छोड़ गये थे, अब मै वह नहीं रहा—अब मैं सत्यवादी नहीं रहा, अब मैं जालसाज—धोखेबाज हूं, हीरू आदि जितने बुरे आदमी है, वे सब मेरे मित्र हैं। मेरी जो कुछ बुराई सुनियेगा उसे सच मानियेगा। अब मै सब कुछ करनेको तैयार हू—ऐसा कोई काम नहीं है जो मैं नहीं कर सकूं।

वैद्य—तुम क्या बक रहे है ? तुम्हारी बातें सुनकर भी विश्वास करनेको जी नहीं चाहता।

मन्मथ—विश्वास कीजिये।

वैद्य—तुम्हारी ऐसी कुमति क्यो हुई ?

मन्मथ—क्यों हुई ? बड़े बाबू मुझे अनाथ अवस्थामे उठा लाये थे बड़ी मॉने बड़े स्नेहसे मुझे पाला-पोसा—उनकी बदौलत मेरे दिन राजकुमारोके से कटे—लिखना पढ़ना सीखा। आप लोग भी मुझसे स्नेह करते है—मेरी बड़ाई करते है। बडे बाबूके अन्त समय मैं उनके पास था। यद्यपि उस समय मै लड़का था, पर मै उनका आन्तरिक भाव समझ गया था। उनकी यही इच्छा थी कि बड़ोंकी कीर्त्ति बनी रहे। इसीलिये वे अपना हिस्सा बड़ी माँके नाम लिख गये। उनके मनमे इस बातकी आशका थी कि कहीं पीछे भाई भाईमें झगड़ा न हो और जायदाद बरबाद न हो जाय। बड़ी मॉका हिस्सा रहेगा तो ठाकुरसेवा तो

बन्द न होगी। बड़ी माँ भी स्वामीकी आज्ञाका पालन कर रही थीं—घर बनाये रखनेके लिये सुखको तिलाञ्जलि देकर गृहस्थी चला रही थीं उसी घरको नीरद भैया जालसाजी-से बरबाद कर रहे है। मैंने भी प्रतिज्ञा की है कि उन्हे इसका मजा चखाऊँगा। देखूँगा न कि वे कहाँतक जालफरेब करते है।

वैद्य—तुम पागल हो गये हो है! अरे जरा ठंढे हो।

मन्मथ—जी नहीं, मै पागल नहीं हुआ हूं। रात भर जागकर मै यही सोचता रहा। आप जानते है, बुरे विचारोको हृदयमें स्थान देनेसे कैसी यन्त्रणा होती है—वही भयानक यन्त्रणा मैं भोग रहा हूं। सत्यको तिलाञ्जलि दी—सदिच्छाको तिलाञ्जलि दी। अब दिन रात मुझे बस यही चिन्ता है कि क्योंकर नीरद भैयासे बदला लूँ।

वैद्य—मन्मथ, तुम क्या समझते हो कि बुरे उपायसे अच्छा काम होता है? तुम्हारे मनकी अवस्था मै समझ गया। तुम्हारी बातें सुनते सुनते मेरी भी इच्छा हुई थी कि जाकर नीरदका सिर काट डालूँ। तुम शान्त हो, बुरे रास्ते मत जाओ।

मन्मथ—जाऊँगा तो क्या होगा? यही न कि मेरी बदनामी होगी—मुझपर आफत आवेगी—मेरा जीवन व्यर्थ होगा। पर साहब, बड़ी माँ मुझे देखकर रो पड़ीं, बोलीं—"मन्मथ क्या होगा?" मै देखूँगा न कि क्या होता है! मुझे मना मत कीजियेगा।

वैद्य—अरे सुनो भी तो—

मन्मथ—नहीं, अब मै कुछ न सुनूँगा। आप छोटे बावूको किसी तरह शिवूके चंगुलसे निकालिये।

वैद्य—अच्छा अच्छा, मै निताईसे सलाह करके जो कुछ करना है करता हूं। तुमने जो अभी कहा कि रुपये पैसे रोक दिये गये है सो मै कुछ रुपये देता हूं, शायद इससे कुछ सुभीता हो जाय।

मन्मथ—नही, अभी वैसी जरूरत नहीं है, अभी घरका खर्च एक तरहसे चलाये जा रहा हूं। नर्सरी (Nursery) के कामसे मेरे पास प्रायः दस हजारका ठिकाना हो गया है, उसीसे अभी खर्चबर्च चलेगा। बाद जैसा समझियेगा वैसा कीजियेगा।

[प्रस्थान।

वैद्य—लड़का गुस्सेसे भर गया है। बात ही ऐसी है। मैं काशी जाकर एक बार उपेनसे मिलता हूं।

(निताई वकीलका प्रवेश।)

वैद्य—क्यों निताई, तुम्हारे सामने इतना कुछ हो गया और तुम देखते रहे?

निताई—मैं क्या करता? मुझे क्या पास फटकने दिया! मैने पुलिस केस चलने न दिया। इसपर नीरदने शैलेनको क्या समझाया कि जिस शरत्‌ने उसे लाठी मारी थी उसकी पैरवी कर मैंने उसे बचा लिया। अब वह समझता है कि

मेरी ही सलाहसे बँटवारेवाला मामला दायर हुआ है।

वैद्य—अच्छा तो अब उपाय क्या है?

निताई—बड़ी बहूकी जायदाद अलग करा लेनेके सिवा और कोई उपाय नहीं है। अब उन्हें राजी करनेकी जरूरत है।

वैद्य—शिवू सालेके चगुलसे शैलेन कैसे निकाला जाय?

निताई—शैलेन समझे तब तो? खाली समझनेसे ही काम न चलेगा, उसका खर्चा देना होगा नहीं तो वकील बदला नही जा सकता।

वैद्य—अच्छा तो जो लगेगा, मैं दूँगा।

निताई—अरे भाई, क्लर्की करके इस मामलेका खर्चा नहीं दे सकते हो। हाँ, अगर शैलेनको राहपर ला सके तो बाद जो कुछ करना होगा मै करूंगा।

वैद्य—अच्छा तो मै जाता हूं।

निताई—उधर तुम उसे राहपर लानेकी चेष्टा करो, इधर मै बड़ी बहूको समझता हूं—देखो क्या होता है। [दोनोंका प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

काशी—उपेन्द्रका वासस्थान।

उपेन्द्र और विरजा।

उपेन्द्र—यह क्या—भाभी—आ गयी? बैठो।

विरजा—नहीं आती तो क्या करती? सत्यानाश होने

लगा है। मामले मुकद्दमेमे ही सब बरबाद हो रहा है!

उपेन्द्र—होने दो—रहकर क्या होगा? भाई वेश्याके पीछे किसीपर गोली चलावेगा, बेटा रुपयेके लिये बापकी बात न सुनेगा, चाचाकी मुश्के बँधवावेगा—स्त्री स्वामीको देख न सकेगी, कैसे लड़का सारी जायदादका मालिक बने, दिन रात इसी चिन्तामे रहेगी! खूब हो रहा है,इस धनका जाना ही अच्छा है। जब जायदाद हाथसे निकल गयी थी उस समय मजेमे था, कोई चिन्ता नहीं थी, स्त्री वशमें थी, लड़का वशमे था, भाई वशमे था,—

विरजा—तो क्या यहीं बैठे रहोगे और सब कुछ बरबाद होने दोगे?

उपेन्द्र—हो जाय—मेरा क्या है? अब तो मेरा कुछ नहीं है! जिस दिन सुना कि आपसमें फौजदारी—खूनका मामला हुआ, उसी दिन अपना सब कुछ लड़केके नाम लिख दिया, अब मेरा है क्या जिसकी देखभाल करूँ?

विरजा—क्या हुआ है—कुछ सुना है? सुनती हूं कि घरसे चिट्ठी आने पर उसे तुम खोलते ही नहीं—फेंक देते हो!

उपेन्द्र—सुन चुका—सुननेको कुछ बाकी नहीं है। पर जब रुपया खर्चकर इतनी दूर आयी हो तब बिना सुनाये तुम न मानोगी। सुनाओ—यही तो सुनाओगी न कि मुकद्दमा दायर हुआ है, जायदादका बँटवारा हो रहा है, रुपये पैसे लोग लूटे खा रहे हैं, शैलेन अब किसी दूसरी

औरतके पास जाता है, फिर खूनखराबी हो गयी है, नीरद चाचाको फँसानेकी घातमें है,—यही न—या और भी कुछ? यह सब तो मैं पहले ही सुन आया हूं, कुछ देख भी आया हूं—और नयी बात क्या सुनाओगी?

विरजा—तुमने क्रोधमे आकर ही सब काम खराब किया, तुम्हारे दोषसे ही सब बरबाद हुआ।

उपेन्द्र—क्रोध न करूँ, शान्त रहूं, जमीन जायदादका बन्दोबस्त करूँ—यही तुम चाहती हो? मैं गुस्से होकर नहीं, अपनी इज्जत बचाने आया हूं। वहाँ रहता तो मेरी मिट्टीखराब होती—बुरी मौत मरता। या तो लड़का मेरी जान लेता या छोटा भाई लेता, या कलङ्कके डरसे मुझको ही आत्महत्या करनी पड़ती।

विरजा—इसमे कलंक ता आत्महत्याकी कौन सी बात है?

उपेन्द्र—क्या—क्या कहा? कलंककी कौनसी बात है? तुम क्या भैयाकी स्त्री नहीं हो—तुम क्या वही भाभी नहीं हो? उस भेषमें कोई दूसरी आयी हो? तुम कहती हो—कलंककी कौनसी बात है? हमारे घरानेका लड़का खूनके मामलेमें फँसा—वह भी कहाँ—वेश्याके घरमे—और कहती हो कि कलंककी कौनसी बात है?

विरजा—तुमने सब बाते सुनी नहीं हैं, तुमने शैलेनसे नाराज होकर नीरदके नाम सब कुछ लिख दिया। तुम्हारे नीरदका ही यह सब फरफन्द है—यह जानते हो?

उपेन्द्र—नहीं जानता था, इसीसे शैलेनसे नाराज होकर नीरदके नाम सब कुछ लिख दिया—यह सच है, पर अब देखता हूं कि मैंने जो किया बहुत ठीक किया। अगर यह सच हो कि नीरदने चाचाको फँसानेके लिये इतनी अकल खर्च की है तो बापको विष देकर मालिक बननेकी इच्छा करना भी उसके लिये कोई बड़ी बात नहीं है। इसीसे कहता हूं कि मैं क्यों बुरी मौत मरूँ, जिसके जीमें जो आवे सो करे—मैं निश्चिन्त होकर काशीवास करने आया हूं।

विरजा—इस बुढ़ियाका क्या होगा? यह कहाँ जाय?

उपेन्द्र—क्यों? तुम्हे किस बातकी कमी है? तुम्हारा तो सब कुछ है। अदालतसे अपना हिस्सा अलग करा लो।

विरजा—इस उमरमें अदालत जाऊँ?

उपेन्द्र—यह तुम्हारी मरजी। मै साथ कुछ नहीं लाया—जमीन जायदाद वहीं पड़ी है। अपनी सम्पत्तिकी रक्षा करो। अगर तुम कुछ कर सकी तो कुछ रह जायगा—ठाकुर सेवा चलती रहेगी। मुझसे क्या कहने आयी हो? अब मेरे हाथकी बात नहीं है। अगर तुम एक दिन देरसे आती तो मुझे यहाँ देख न पाती, मैं यहाँसे चला जाता, कहाँ जाता तुम्हें खबर भी नहीं लगती—और जाऊँगा नहीं तो मेरा पिण्ड नहीं छूटेगा।

विरजा—क्यों? मेरे आनेसे तुम दुःखी हुए हो?

उपेन्द्र—अकेली तुम्हीं नहीं, नीरदकी गर्भधारिणी भी कल आयी है।

जानती हो कि वे क्यो आयी है ? मेरा जो कुछ था वह तो मैने नीरद्को दे दिया, पर कई हजारके कम्पनीके कागज अपने खर्चके लिये अलग कर रखे है, नीरद् बाबूको मामलेके खर्चके लिये रुपयेकी जरूरत है, इसलिये वे कागज बिकवाना चाहती है—इसीलिये वे आयी है। कलसे लड़ झगड़कर मुँह फुलाये पड़ी है, इसीसे अभीतक तुम्हे गरदनिया नही मिली। तुम अपनी कह चुकी, मैंने सुन लिया, अब तुम भला चाहती हो तो लौट जाओ, किसीका मुँह मत ताको। निताईसे कहकर अपनी जायदादका बँटवारा करा लो, नही तो उनके साथ रहनेसे तुम्हे भिखारिन बनना पड़ेगा।

बिरजा—तुम आप तो निश्चिन्त हो गये, मेरा भी तो कोई बन्दोबस्त कर दिया होता। चलो मेरा कोई बन्दोबस्त कर आओ।

उपेन्द्र—तुम्हारा सब ठीक है। भैया तुम्हे अपना हिस्सा दे गये हैं। तुमने मुझे भलामानस समझकर अपना हिस्सा चुपचाप मेरे नाम लिख दिया। उसमे लिखा था कि अगर शैलेन मेरे कहेमें रहेगा तो मै तुम्हारे हिस्सेका आधा उसे दूँगा।

बिरजा—पर अभी मै कहाँ जाकर खड़ी होऊँ ?

उपेन्द्र—मैने जिस दिन नीरद्के नाम वसीयतनामा लिखा था उसके एक दिन पहले तुम्हारे वसीयतनामेकी पीठपर यह

लिखकर रजिस्ट्री करा दी थी कि वसीयतनामा रद्द समझा जाय, क्योंकि यह ऐसे समय लिखा गया था जब कि स्वामीके शोकसे उनका चित्त ठिकाने न था। तुम जाओ, अपनी जायदाद सँभालो।

विरजा—मुझसे यह बखेड़ा न होगा। मुझे पाँच सात हजारके कम्पनीके कागज दे दो, मैं वृन्दाबन्दमे जा बैठूँ।

उपेन्द्र—अभी तुम मुझसे जायदादका बन्दोबस्त करनेको कह रही थी न? अब मेरा कोई अख्त्यार नहीं है, तुमसे बन पड़े तो बचा लो, अगर कुछ बच रहा तो ठाकुरसेवी बन्द न होगी और मामलेमुकद्दमे करके जब वे तबाह हो जायंगे तब तुम्हारे हाथ उठा कर देने पर उन्हें खाना नसीब होगा। नहीं तो सब बरबाद हो जायगा—आगे तुम्हारी मरजी।

(मुँहमें पान भरे हुए तरङ्गिणीका प्रवेश।

तरङ्गिणी—तुम लोगोंके मारे तो घर छोड़कर काशी चले आये—यहाँ भी तुम इनकी जान खाने आ पहुंची?

विरजा—तुम तो पहले ही आ पहुची। मँझली बहू, तुम्हें लाज नहीं आती? लड़केके कान भरकर घर चौपट करने चली हो?

तरङ्गिणी—और तुम तो मानो सब बचाने ही चली हो? तुम्हींने तो इधरकी उधर लगाकर इनसे घर छुड़वाया है। "भाई भाई" करते ही तो जान चली थी—अभी

तुम्हारी मनस्कामना पूरी नहीं हुई है इसीसे यहाँ आयी हो ?

बिरजा—मेरी मनस्कामना पूरी क्यों न होगी ?—तुम्हारी नहीं हुई है। अभी तुम्हारा देवर मरा नहीं है, मैं भी अभी जीती हूं—जायदादमे मेरा हिस्सा है, अभी उपेनकी ठठरी खड़ी है, अभीतक तुम पूरी मालकिन नही होने पायी हो।

तरङ्गिणी—तुम्हारे मुँहमे आग लगे—मुँह झुलस जाय—यहाँ कोसनेकाटने आयी हो ? अपने लाड़ले मन्मथको सर्वस्व नहीं दे सकी इसीसे जली मर रही हो। घरकी मालकिन इसी तरह घरका भला चाहती हैं !

उपेन्द्र—तुम खड़ी क्या सुन रही हो ? तुम यो न जाओगी ? तो रहो—दोनों लड़ो। नीरदकी माँ, सुनो, अगर तुम यहाँसे बिदा नहीं होती हो तो मै ही चला जाता हूं। या तो तुम दोनो यहाँसे बिदा हो नहीं तो मैं ही बिदा होता हूं।

तरङ्गिणी—और कैसे बिदा होऊँगी—बिदा तो हो ही चुकी हूं। भलेकी कहने आयी, बुरी बनी। लो क्या सलाह करते हो, देवर भौजाई मिलकर करो—मैं चली। मेरा नीरद सलामत रहे, मुझे रोटियोंकी कमी नहीं है। अब मैं किसी-की दबैल नहीं हूं जो मैं "जीजी जीजी" करती लौंडीपना करूँ।

बिरजा—नहीं, तुम्हारे वे दिन गये। तभी मुँहमें पानके बीडे जमा-कर लड़ने आयी हो। अब तुम माँ-बेटा अपने मनकी पूरी

करो। पर अपने बेटेसे कहकर मेरा हिस्सा मुझे दिलवा दो। मैं ठाकुरघरमें पड़ी रहूंगी, तुम लोगोंकी परछाईं भी न लाघूंगी।

तरंगिणी—अरे तब तो गजब हो जायगा मालिकन कुछ देखे सुनेगी नहीं! तुम्हारी जायदाद कैसी, तुम तो सब दे चुकी हो। राँड़ बेवाकी जायदाद कैसी?

विरजा—उपेन, मैं चली।

उपेन्द्र—मैं भी चला।

तरंगिणी—क्यो—क्यो तुम लोग क्यों जाते हो? मैं ही जाती हूं-तुम दोनों मिलकर मनसूबा गाँठो। [तरंगिणीका प्रस्थान।

उपेन्द्र—देखा? अब तुम्हारे जो जीमें आवे सो करो।

[उपेन्द्रका प्रस्थान।

विरजा—बाबा विश्वनाथ, अब तुम्हारा ही आसरा है। अब मैं किसीका सहारा न ढूढ़ूंगी। [प्रस्थान।

तीसरा दृश्य

—::*::—

कुमुदिनीका कमरा।

शरत् और कुमुदिनी।

शरत्—आजसे मै तेरी ड्योढीपर पैर न रखूंगा। तेरी मा मुझे देखते ही कोसाकाटी करेगी और मैं तेरे तलवे सुहलाया

करूंगा, यह मुझसे नहीं होनेका। मुझे चाहती है तो मेरे साथ निकल चल।

कुमुद—कहाँ चलूँ ? तेरी एक पैसेकी भी तो औकात नहीं है।

शरत्—चल—मैंने घर किराये ले लिया।

कुमुद—घर तो किराये लिया पर मेरा पेट कौन भरेगा ?

शरत्—गहनेका सन्दूक ले चल, बेच बाचकर कोई कारबार कर लूँगा। मैं भी घरद्वार छोड़ दूँगा—दोनों जोरू खसम-की तरह रहेंगे।

कुमुद—तू कारबार करेगा ? तीन बार तो भारी भारी गहने ले जाकर कारबार कर चुका है! अब मेरे पास रखा ही क्या है!

शरत्—जो है—वही बहुत है। ले चल!

कुमुद—वे भी बिक जायँ तभी तुझे ठंढक पडेगी।

शरत्—अरी नहीं—पहले जो गहने ले गया था उन्हें बेचकर कारबार थोडे ही किया था। तुझसे तो कह ही चुका—रुपये खर्च डाले। इसबार कसम खाकर कहता हूं, जरूर कोई काम करूँगा। दो हजार रुपये लगानेसे कोयलेका कारबार दो दिनमे चमक उठेगा। तब फिर तेरे यहां भी किसीको लाना न पडेगा और मुझे भी किसीकी मुसाहबी न करनी पडेगी।

कुमुद—नहीं, तू जैसे आता है वैसे ही आया कर। तू जब आवेगा तब चाहे कोई क्यों न बैठा हो, उसे उठा दूँगी। मैं तेरे साथ न जाऊँगी। आखिर क्या भीख माँगूगी।

शरत्—तो तू मुझे नहीं चाहती है ?

कुमुद—तू जो चाहे सो कह, अब मै गहने न दूँगी।

शरत्—बस बस समझ गया, कोरा जबाव दे रही है, तो साफ क्यों नहीं कहती ?

कुमुद—और साफ कैसे कहूं ? मै क्या कौड़ीको तीन होऊँगी ? जबसे फौजदारी हुई, तेरे डरसे बडे आदमियोके लड़के मेरे घर आना नही चाहते। और फिर नौ बजते ही तू यहाँ आ धमकता है।

शरत्—और तू जो मेरी छातीपर मूँग दलती है—आये दिन बाग बगीचेकी सैर उड़ाती है ? मै कभी कुछ बोला ? मैं खूनका घूँट पीकर रह जाता हू। अगर मुझसे सम्बन्ध बनाये रखना चाहती है तो चल मेरे साथ, गहने बेच बाचकर कोयलेका कारबार करूँ और दोनो एक साथ रहे। और अगर नही चाहती है तो बस तुझसे यहींतक।

[कुमुदिनीकी माँका प्रवेश।]

कुमुदकी माँ—क्योंजी, तुम कैसे आदमी हो ? लड़कीको कौड़ीका तीन करना चाहते हो ? फिर गहने झटकने आये हो ?

कुमुद—इसमें तेरे बापका क्या ? हरामजादी कहींकी निकल यहाँसे—

कुमुदकी माँ—हाँ री हाँ, निकलूँगी क्यों नहीं ? प्रीत करके आखिर झोली लेकर दरदर मारी मारी फिरेगी।

कुमुद—निकल हरामजादी, नहीं तो झाड़ू मारते मारते सिर गंजा कर दूँगी।

[हीरू घोषालका प्रवेश]

हीरू—अरे बस करो बस—झगड़ा रहने दो—शरत्, चलो चलो—एक दाँव है—एक दाँव है।

शरत्—मामला क्या है

हीरू—अरे चलो तो सही बताता हूं—कुछ छोकरियाँ ठीक करनी होंगी। मन्मथ एक चाल चला है, चलो तो बताता हू।

शरत्—चलो।—

हीरू—कोई आठ छोकरियाँ ठीक करनी होगी।

शरत्—यह कौनसी बड़ी बात है? (कुमुदिनीकी माँसे) लो, मैं जाता हू, अब मैं नही आनेका।

कुमुद—क्यों नही आवेगा? मैंने तुझे कुछ कहा है?

शरत्—बाबा, इस रोजकी किचकिचमें कौन पडे?

[हीरू और शरतका प्रस्थान।

कुमुद—(माँसे) देख हरामजादी, अगर शरत न आया तो तुझे घरमे एक घड़ी न रहने दूँगी—घरसे निकाल बाहर करूँगी।

कुमुदकी माँ—निकालेगी क्यों नहीं, नहीं तो मौज कैसे उड़ेगी?

कुमुद—क्यों री हरामजादी, वह काना बैरागी तेरा कौन है जिसके साथ मौज उड़ाती है? झाड़ूसे चेहरा बिगाड़ दूँगी।

कुमुदकी माँ—झाड़ू तो मारेगी मुँहझौंसी ! आइनेमें अपना मुँह तो देख ? 'दाद' बताकर कितने दिनतक धोखा देगी ? रंगसे कितने दिनतक उसे छिपाये रखेगी ? जब देह भरमे फूट निकलेगी तब देखूँगी न शरत कहाँ रहता है ?

कुमुद—दाद नहीं तो क्या है री हरामजादी ? तेरे मुँहमें कीड़े पड़ें ।

कुमुदका माँ—चूल्हेमें पड़-मर—तेरे घर मैं नहीं रहना चाहती ।

[प्रस्थान ।

कुमुद—निकल हरामजादी ।

[प्रस्थान ।

चौथा दृश्य ।

शैलेन्द्रका कमरा ।

शैलेन्द्र और सरोजिनी ।

शैलेन्द्र—मैं भी भिखारी हुआ, तुम्हे भी भिखारिन बनाया । नीरद-ने मेरा सत्यानाश कर दिया ।

सरोजिनी—तुम सोच फिकर मत करो, दिन किसी तरह कट ही जायँगे । मैं घरका सब कामधंधा करूँगी—तुम्हारी सेवाटहल करूँगी—तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा । एक गाड़ी रख लेना उसपर घूमना, एक नौकर रख लेना,

वह वाहरका काम काज करेगा, फिर तुम्हे किस बातका कष्ट ?

शैलेन्द्र—तुम जानती नहीं कि क्या हुआ है, इसीसे कहती हो कि किस बातका कष्ट है ? मै कंगाल हो गया हूं।

सरोजिनी—क्यों—क्यो—तुम्हारा तो जायदाद्मे हिस्सा है, हिस्सा तो मिलेगा ?

शैलेन्द्र—हिस्सा कब होगा सो राम जाने ; इस समय तो नीरद्-का एक लाखसे ज्याद्का देनदार हो गया हूं, न जाने कब वह मुझे जेल भिजवा दे।

सरोजिनी—क्यो—तुमने तो उससे एक पैसा भी उधार नही लिया, उलटे वही तुमसे रुपये ले गया है।

शैलेन्द्र—जानती हो उसने क्या किया ? पहले तो, उसने मुझे पिटवाया। उसके बाद रात दिन मेरी सेवाटहल करने लगा। खूनका मामला था ही—मुझसे रोकर कहता—"चाचा जी, खूनका मामला है, मेरे पास रुपये नहीं हैं, बाबूजी रुपये देते नहीं, क्या करूं ?" मैंने हैण्डनोट पर रुपये लेने चाहे इसपर उसने क्या किया जानती हो ?

सरोजिनी—क्या किया ?

शैलेन—सुनो उसने क्या किया। उसने मुझसे कहा कि—"मैंने तुम्हारे नामसे हैण्डनोटपर कुछ रुपये कर्ज दिये है, उन हैण्डनोटोंकी पीठपर तुम सही कर दो और तुमसे जिन लोगोंने हैण्डनोटपर रुपये लिये हैं, अगर उनके हैण्डनोट

तुम्हारे पास हो तो उनपर भी सही कर दो, मैं उन्हें बन्धक रखकर रुपयोंका बन्दोबस्त करता हूं। मैं खाट पर पड़ा था, उसकी जालसाजी समझ न सका—सही कर दी।

सरोजिनी—हाँ हाँ, मुझसे उठ जानेको कहता था। तुम्हें किसी कागजपर सही करते तो देखा था। पर उससे क्या होता है?

शैलेन्द्र उन हैण्डनोटोंके रुपये वह मुझसे वसूल करेगा।

सरोजिनी—कैसे?

शैलेन्द्र—कहता हू, पर तुम समझ न सकोगी। तोभी कहता हूं सुनो, उसने कैसा जाल रचा।

सरोजिनी—अब क्या इसका कोई उपाय नहीं है?

शैलेन्द्र—सुनो तो उसने क्या किया। उसने मुझसे जो कहा था कि तुम्हारे नामसे रुपये उधार दिये है वह बात झूठ थी। उसने कुछ आवारे छोकरोंको कुछ दे दिलाकर हैण्डनोट लिखा लिये। उनसे तो रुपये वसूल होनेके नहीं, अब वह अदालतमे कहना चाहता है कि उसने मानो मुझसे हैण्ड-नोट खरीद लिये हैं। उन लोगोसे रुपये वसल होते नही इससे मुझसे वसूल करेगा। मै उन रुपयोका देनदार हो गया हू।

सरोजिनी—तुमने क्या वह सब बेच दिया है?

शैलेन्द्र—मैं क्यों बेचने लगा? कहा तो, तुम्हारी समझमे बात

न आवेगी। उसने शिवू वकीलकी मार्फत मुझसे एक चिट्ठी ले ली है कि मैंने मानो मामलेमुकद्दमेके खर्चके लिये हैण्डनोट उसके हाथ बेच डाले हैं। मन्मथने मुझसे यह बात कही थी पर उसपर मैंने विश्वास नहीं किया, आज नीरदने वकीलकी चिट्ठी दी है चिट्ठी पढ़ते ही होश गुम हो गये।

सरोजिनी—अब तुमने क्या करना सोचा है ?

शैलेन्द्र—सोचा है कि मकानका हिस्सा बेचकर यहाँसे चल दूँगा। नीरद दिन दिन मुझे आफतमे डालनेकी जैसी चेष्टा कर रहा है, उससे यहाँ रहनेकी हिम्मत नहीं होती। हिस्सा बेचनेसे कुछ रकम हाथ आ जायगी, उससे शिबू वकीलका देना कुछ उतर जायगा और कुछ रुपयोंसे तुम्हारे नाम एक मकान खरीद लूँगा। मकान ताल-तलेमे देख आया हूं। वहीं चलकर रहेंगे। पर रुपये तो अदालतने रोक दिये हैं, खर्च कैसे चलेगा इसीका सोच है।

सरोजिनी अच्छा मेरे गहने कितनेके होंगे ?

शैलेन्द्र—बेचनेसे पाँछ हजार मिलेंगे।

सरोजिनी—उतनेसे क्या मोदीकी दुकान नहीं खुल सकती ?

शैलेन्द्र—वाह ! तुमने तो रोजगारका ढंग भी सीख लिया।

सरोजिनी—क्यों क्यो इसमें दोष क्या है ? मैंने मन्मथ सुना है कि मजूरी करके खानेमें दोष नहीं है। मन्मथ झूठ नहीं बोलता।

शैलेन्द्र—तो तुम और मन्मथ मिलकर मोदीकी दूकान कर लो।

सरोजिनी—तुम्हारे कहे बिना क्यों करूं?

शैलेन्द्र—तुम्हारी बातें सुनकर मेरी छाती फटने लगती है।

सरोजिनी—मुझे माफ करो, अब मैं कुछ कहूंगी।

शैलेन्द्र—सुनो सरोजिनी, संसारमें तुम्हारे समान भी सरल साध्वी स्त्री होती हैं, यह मैंने सपनेमें भी न सोचा था। रत्न पहचाना पर अन्तमें। हाय! इस रतनकी कद्र नहीं हुई! इसका मुझे कितना सन्ताप है यह मेरा जी ही जानता है। तुम रानी होने योग्य थी, अपने बुद्धिदोषसे मैंने तुम्हें भिखारिन बना दिया! मुझे धिक्कार है!

सरोजिनी—तुम क्या कह रहे हो! मैं भिखारिन तो हुई नहीं! तुम सोच मत करो। जीजी कहती थीं कि मन्मथ कहता है कि जो धर्म पर रहता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। तुमने तो कभी पाप किया नहीं, मैंने भी कभी नहीं किया। मैं कभी झूठ बोली नहीं। फिर हमें दुख क्यों झेलना पड़ेगा? तुम सोच मत करो।

शैलेन्द्र—क्या कहा—मैंने पाप नहीं किया? तुम्हे छोड़कर काली नागिनको छातीसे लगाया, देवताको साक्षी मानकर व्याहके समय तुम्हारे भरण-पोषणकी जो प्रतिज्ञा की वह भी भंग की—मैं अधम हूं, नीरदसे भी बढ़कर अधम हूं। नीरद अपना स्वार्थ देखता है, पर उसने स्त्रीको भिखारिन

नहीं बनाया। मैं आलसी हूं—ऐयाश हूं। मैं तुम्हारी दुर्दशाका कारण हूं।

सरोजिनी—तुम क्यों ऐसी बाते कर रहे हो? सुना है, अपनी उमरमें सभी ऐसा करते है। देखो, मैं तुम्हारे पैर छूकर कहती हूं, मेरे मनमे कभी कोई बात नही आयी।

शैलेन्द्र—अगर कोई मुझसे पूछे कि सबसे बढ़कर पापी कौन हैं, तो जानती हो मै क्या उत्तर दूंगा?—जो ऐयाश है—जो व्यभिचारी है वही सबसे बढ़कर पापी है। व्यभिचारी चोर होता है, व्यभिचारी खूनी होता है, व्यभिचारी पितरोंको पानी देनेवाले पुत्रको रोगी बनानेवाला होता है—आप कलुषित होता है, स्त्रीको कलुषित करता है, सन्तानको कलुषित करता है, इस प्रकार वंशको कलुषित कर डालता है। पर अब कोई उपाय नहीं। अब पछतानेसे क्या होगा।

सरोजिनी—सुनो, सुनो, मैने एक उपाय सोचा है। चलो, हम दोनो राधावल्लभजीके पास चले और उन्हें अपना दुखड़ा सुनावें। मै सच कहती हूं, वे हमारी सुनेंगे। जीजी कहती थीं कि हम लोगोंका सब कुछ जा चुका था, राधावल्लभजीने ही सब दिलवा दिया।

[शैलेन्द्रका हाथ पकड़कर सरोजिनीका प्रस्थान।

पाँचवाँ दृश्य ।

उपेन्द्रका मकान ।

नीरद और फूली ।

नीरद—सुन—सुन तो सही—

फूली—सुनू क्या—मानो इन्हींसे तो मिलने आयी हूं जो इनकी सुनूँ ?

नीरद—तो किससे मिलने आयी है—मन्मथसे ?

फूली—हूं मन्मथसे ! जिसके न खानेका ठिकानां है न रहनेका— उस मन्मथसे ।

नीरद—तो किससे मिलने आयी है, सुनूँ तो सही ?

फूली—छोटे बाबूसे । जिनका तुम लोगोकी जायदाद्‌मे दो हिस्सा है । एक हिस्सा बड़ी मालकिनका और दूसरा उनका निजका । अब उन्होने अपनी उस राँड़को छोड़ दिया है, अगर मै उनका मन खींच सको तो निहाल हो जाऊँगी ।

नीरद—हः हः हः !—

फूली—हँसे क्यों ?

नीरद—कुछ खबर भी है—छोटे बाबूके पास अब धरा क्या है ? उनका इस मकानका हिस्सा मैंने खरीद लिया है अब उन्हें यहाँसे अपना डेरा डंडा उठाना पड़ेगा ।

फूली—क्यो, डेराडंडा क्यो उठाना पडेगा? बड़ी मा मकानका अपना हिस्सा उन्हें देगी।

नीरद—तूने ऐसा ही समझा होगा? पर ऐसा नहीं होनेका। चाचाकी ओरसे बड़ी माका जो फट गया है। और बड़ी माँकी जायदादकी जो कही, सो अभी तो मामलामुकदमा चले फिर वे लेनेको हाथ बढावे। बड़ी माँने बाबूजीके नाम सब कुछ लिख दिया है।

फूली—हाँ, हाँ, यह मुझे मालूम है, पर पीछेसे तुम्हारे बाबूजीने फिर बड़ी माँके ही नाम सब कुछ लिख दिया।

नीरद—तुझे यह बात कैसे मालूम हुई? मन्मथने कही होगी?

फूली—हाँ, मन्मथने ही कही है।

नीरद—यह सब बातें मन्मथसे हुआ करती है?

फूली—हाँ, होती तो है,वह मुझे भुलावा देता है। कहता है, मुझे बड़ी माँकी जो जायदाद मिलेगी वह तुझे दूंगा। मैं भुलावे-मे नहीं आनेवाली। मैं एक तारमे हूं, इसीसे अभीतक चुप हूं, नही तो कितने ही आदमी मेरे तलवे चाट रहे है।

नीरद—इसी लिये तू छोटे बाबूसे मालामाल होनेका सपना देख रही है! पर उनके पास धरा क्या है? घर तो ले ही चुका! और मन्मथसे पूछियो, उनसे सब हैण्डनोट बेची करा लिये हैं। तू तो पढी लिखी है—सब समझती है? मैं उन हैण्डनोटोंके रुपये उनसे वसूल करूंगा—समझी?

फूली—हाँ—हाँ, सुना तो है। अब मैं चली।

नीरद्—क्यों, क्यों, चली क्यों, सुन तो ! तू मालदार होना चाहती है ? मुझसे मेलजोल बढा—मैं तुझे निहाल कर दूंगा।

फूली—हाँ तुम तो जरूर निहाल कर दोगे ! तुममें प्रेम भी है ?

नीरद्—मुश्किल तो यह है कि तू विश्वास नहीं करती। मै तुझे दिलसे चाहता हूं। एक दिन अगर तुझे नहीं देख पाता तो मेरी बुरी हालत हो जाती है। सच कहता हूं फूली, मै तुझ-पर मरता हूं।

फूली—तुम किसीपर नहीं मरते ? तुम्हारी बातका मुझे विश्वास नही हैं।

नीरद्—कैसे विश्वास दिलाऊँ ?

फ़ूली—सच कहना मन्मथसे मिलकर मुझे दमपट्टी दे रहे हो या नहीं ?

नीरद्—क्या दमपट्टी दी है ?

फूली—क्या दमपट्टी दी ? छोटे बाबू मानो ऐसे ही अनाड़ी है जो उन्होने आँखे मूँदकर सही कर दी ? तुम्हारे बाप तो तुम्हींको त्यागनेवाले है, तुम मुझे क्या निहाल कर दोगे !

नीरद्—तुझसे यह किसने कहा ?

फूली—किसीने कहा हो। बड़ी माँ अब फिर क्यों काशी गयी है ? मै छोटे बाबूसे पूछने आयी थी कि क्या हुआ ? सो वे तो अभीतक आये नहीं ! मैं उनके बगीचे जाती हूं।

नीरद्—जाती क्यों है—जाती क्यो है—सुन तो सही ! क्या चाहती है कह न, मैं वही देता हूं।

फूली—तुम्हारी बातका मुझे विश्वास नहीं है। तुम क्या मुझे कम चकमा दे रहे थे ?

नीरद—फिर तू कहे जाती है कि मैं चकमा दे रहा था ?

फूली—चकमा नहीं तो और क्या है ? मैं पढना जानती हूं, तुम मुझे हैण्डनोट दिखा सकते हो ?

नीरद—दिखा सकता हू, तू यहाँ ठहर।

फूली—बातोंमें बहुत देर हो गयी, अब मैं चली—कोई देख लेगा तो क्या कहेगा। अगर हैण्डनोट दिखाओ और साथ ही हजार रुपये दो तो मैं तुम्हारी सुनूँ।

नीरद—अच्छा तो आज रातको तू हम लोगोंके बगीचे आइयो श्यामा तुझे गाड़ीपर ले जायगा। वहाँ रुपये भी दूंगा और हैण्डनोट भी दिखा दूंगा।

फूली—मैं जकड़बन्द होकर नहीं जानेकी। अगर तुम मुझसे बातचीत करना चाहते हो तो तुम लोगोंके शिवालेके साथ जो अतिथिशाला है वहां मिल सकती हूं। वहाँ अगर कोई देख भी लेगा तो कुछ न कहेगा, क्योंकि मैं बराबर वहाँ जाया करती हूं। और तुम भी जाया करते हो। रात दस बजेके बाद मिलना

नीरद—तो यही ठीक रहा ?

फूली—मेरा तो ठीक ही हैं, तुम अपनी कहो।

[फूलीका प्रस्थान।

नीरद—एक बार यह मेरे फन्देमें आ जाय फिर मैं देख लूंगा।

यह बड़ी शैतान है। हैण्डनोट दिखाकर इसका विश्वास जमाऊँगा, रुपये मँगानेपर कहूंगा, वकीलको देने पड़े हैं, हाथमें रुपये नहीं है, कल दूँगा। एक सौ रुपये देनेसे ही उसे विश्वास हो जायगा। इसकी आँखें कैसी कटीली है!

(तरंगिणीका प्रवेश।)

क्यो माँ, क्या हुआ?

तरङ्गिणी—उन्होने नहीं दिये! इसपर तुम्हारी बड़ी माँ कान भरनेको पहुंच गयी थीं। वे कुड़बुड़ाते हुए घरसे निकल गये। नौकरोसे मालूम हुआ कि वे रेलपर सवार होकर न जाने कहाँ चले गये।

नीरद्—खैर, मै सब ठीक किये लेता हूं। मैंने दरखास्त लिख रखी है कि वे पागल हो गये है। कल अदालतमे दरखास्त दूँगा।

तरङ्गिणी—दरखास्त देनेसे क्या होगा? कम्पनीके कागज तो उन्हींके पास हैं उन्हें तू कैसे निकालेगा?

नीरद्—कागज बैंकमें हैं। सब ठीक हो जायगा। पर उन्हे पागल साबित करना होगा, नहीं तो कहीं बड़ी माँ दावा कर बैठीं तो मामला बिगड़ जायगा।

तरङ्गिणी—उन्हे पागल बताकर क्या होगा?

नीरद्—तुम जानती नहीं हो, दानपत्र वे बड़ी माँको लौटा गये हैं। मैं कहूंगा कि इन्होंने पागलपनमें यह काम किया है,

अदालतको यह विश्वास भी हो जायगा, क्योंकि यों बैठेठाले कोई जायदाद थोड़े ही वापस करता है !

तरङ्गिणी—अगर ऐसा कर सका तो फिर पूछना ही क्या है ! फिर तो देवर भौजाईके होश ही ठिकाने आ जायँगे।

नीरद—तुम अभी रेलसे चली आ रही हो, जाकर सुस्ताओ। फिर सब बातें होंगी।

[तरंगिणीका प्रस्थान।

रुपयेकी बड़ी जरूरत है। शिवू अगर मन्मथको बातोंमें उतारकर शरतके दोनों नोट हथिया ले तो एक ढेलेसे दो चिड़िया मरें—हाथमें कुछ रुपये भी आ जायँ और शरतको भी जरा मजा मालूम हो जाय। देखा जाय मैं कर सकता हूं या नहीं। लेकिन ऐसा तो कोई काम नहीं जो बुद्धि बलसे न हो !

(हीरू चोपाल, मन्मथ और शिवू वकीलका प्रवेश।)

मन्मथ—लीजिये, नीरद भैया तो यह खड़े हैं, क्या कहते हैं—कहिये ?

हीरू—तुम तो बड़े भारी बेवकूफ हो, नगद रुपये मिल रहे हैं, लेते क्यों नहीं ? तुम क्या शरत्‌से कुछ वसूल कर सकोगे ?

मन्मथ—नहीं, वसूल नहीं कर सकूंगा—नीरद भैया तो मानो दूधपीते बच्चे है जो गाँठसे रुपये देकर शरत्‌के दोनों हैण्डनोट लेना चाहते हैं ? उन्हें पता लगा है कि शरत्‌को

रिवर्सन राइटसे (उत्तराधिकारित्वसे) दस पन्द्रह हजार रुपयेका मकान मिला है, इसीसे वे हैंएडनोट खरीदना चाहते हैं। मैंने छोटे बाबूको उलटा सीधा समझाकर वे दोनो हैंएडनोट' एनडोर्स' (बेची) करा लिये है, मै दोनों नहीं देनेका, मैं शरत्‌का मकान नीलाम कराकर रुपये वसूल करूँगा।

शिवू—जानते हो उसमे बहुतसे झमेले है। मुकद्दमा चलाकर रुपये वसूल करना तुम्हारा काम नही है। इसमे खर्च कितना है? यह सच है कि उसे मकान मिला है, पर तुम नीलाम कराकर उसे खरीद सकोगे? तुम खर्चेका बन्दोबस्त न कर सकोगे? इससे तो यही अच्छा है कि नगद रुपये मिल रहे है, ले लो।

मन्मथ—कितने रुपये देंगे?

नीरद—दो हजार।

मन्मथ—मैं उन्हे जला डालूंगा—दूंगा नही।

शिवू—अच्छा—अच्छा, चार हजार लो।

मन्मथ—पाँच हजार लूगा—चाहे दो किस्तमे भले ही दीजिये।

शिवू—अजी, इन्हें दें दो चार हजार—बहुत हुआ। हाईकोर्टका मामला है, पाँच छ हजार खर्च हो जायँगे; इतना रुपया कहाँसे आवेगा?

हीरू—वेवकूफ है बेवकूफ, समझानेसे भी नहीं समझता।

मन्मथ—पर मैं नगद रुपये लूंगा।

शिवू—अच्छा अच्छा, नगद ही लेना। हैण्डनोट मेरे आफिसमें ले आना।

मन्मथ—कब ?

शिवू—कल दिनको १०बजे।

मन्मथ—पर मै चेकवेक या नम्बरी नोट नही लेनेका, नीरद भैया कहीं फिर नोटोका भुगतान रुकवा दें ?

नीरद—क्यो नही, यही तो मेरा काम है।

मन्मथ—तुम सब कुछ कर सकते हो। अभी हालमे शरतको जो नोट दिये थे उनका भुगतान रुकवा ही दिया था।

शिवू—अच्छा, अच्छा नगद रुपये ही लेना।

नीरद—दस्तखत तो कर दोगे न ?

मन्मथ—नही, वह नहीं करनेका।

शिवू—छोटे बाबूका ब्लैक एनडोर्स" (Blank endorse) है, सही नहीं करना होगा। तो यही ठीक रहा।

मन्मथ—हाँ। [मन्मथका प्रस्थान।

नीरद—मामला क्या है कुछ समझमें नही आया ?

शिवू—बात यह है कि छोटे बाबूने शरतको पाँच पाँच हजार करके दो बारमें दस हजार रुपये उधार दिये, मन्मथने न जाने कैसे उन हैण्डनोटोपर सही करा ली।

नीरद—तब तो मालूम होता है एनडोर्स करके चाचाने सब हैण्डनोट मुझे नही दिये! पाजीपना देखा! और भी हैण्डनोट थे ?

शिबू—तुम्हारा ख्याल ठीक है। और सुनो, मन्मथको न जाने कैसे पता लग गया कि शरत्‌को अपने बापकी जायदाद मिली है, हालमें उसकी माँ मर गयी, इससे वह रुपये लेने मेरे पास आया था। मैंने तुमसे कहा था न कि एक दाँव है? वह और कुछ नहीं, वे ही दोनों हैण्डनोट हैं।

हीरू—शिबू बाबू, दोनो हैंण्डनोट हाथ आते ही नालिश ठोक दीजियेगा। शरतवा नीरद बाबूको मनमानी गालियाँ देता फिरता है और धमकी भी देता है कि पा जाऊँगा तो जान लिये बिना न छोड़ूँगा।

शिबू—जायदाद हाथ लग गयी है न इसीसे इतनी उछलकूद है!; देखो तो सही, Attachment before judgement (फैसलेके पहले कुर्की) कराकर उसकी जायदाद कुर्क कराये लेता हूं। नीरद बाबू कल रुपये मिलने चाहिये। नही तो कहीं वह दूसरे वकीलके पास चला गया और वकील अपने पल्लेसे उसकी ओरसे लड़ने लगा तो फिर मुश्किल होगी।

नीरद—शरतको तंग करना चाहिये। हरामजादेने मुझे फँसानेमे कोई बात उठा नही रखी थी।

हीरू—ओह! साला बड़ी गालियाँ देता है। मकान कुर्क कराओ तब पाजीको गाली देनेका मजा मालूम होगा।

शिबू—चेकके लिये ठहरूँ?

नीरद—पर इतने रुपये बैंकमे होंगे भी?

[नीरदका प्रस्थान।

हीरू—शिवू बाबू, मन्मथने पांच सौ देनेको कहा है, आप भी पांच सौ दें। शैलेन बाबू जबसे 'फेल' हुए है तबसे कहीसे कुछ हाथ नही लगता।

शिवू—अच्छा—अच्छा, देखा जायगा; पहले मामला तो चलवाने दो। नीरद बाबू बड़े उस्ताद है, उनसे कुछ वसूल करना होगा।

हीरू—कैसे—कैसे ?

शिवू—देखो तो सही। पहले एफिडेविट (हलफनामा) करके अदालतमे दोनो हैण्डनोट दाखिल कर लूँ। इस बार या तो हजरतको बड़े घरकी हवा खानी होगी या मुझे मुहँमाँगा देकर मामला निपटाना होगा। ये दोनो ही हैण्डनोट जाली हैं। मन्मथने बड़ी अक्ल खर्च करके नये ढंगकी जालसाजी की है। और जिस मकानके लालचसे हजरत दोनो हैण्डनोट खरीद रहे है वह कभीका बिक चुका है।

हीरू—शिवू बाबू, इन लोगोका रंगढंग अच्छा नहीं है। इसी समय जो कुछ ऐंठते बने ऐंठ लो। निताई वकील जिस तरह कमर कसकर खड़ा हुआ है, बिना बडी बहूकी जायदाद अलग कराये नहीं माननेका।

शिवू—मुझे क्या इसका खयाल नहीं है ? बड़ी बहूको दस वर्षकी आमदनीका हिस्सा देते दोनोंका दिवाला निकल जायगा।

हीरू—शैलेनका जो खर्च आप अपनी गाँठसे चला रहे है उसका क्या होगा ?

शिबू—उसने घरका हिस्सा बेचकर कुछ दिया था और जो बाकी है उसके वसूल करनेका ढंग निकालना होगा।

हीरू—तब तो बस हो चुका! मैंने ही पहले पहल उसे आपसे मिलाया था। अगर आप योंही रह गये तो मैं मुंह दिखालाने लायक नहीं रहूंगा।

(श्यामाका प्रवेश)

श्यामा—बाबूने कहा है कि रुपये आपके घर भेज देंगे।

[सबका प्रस्थान।

छठा दृश्य।

—:*:—

उपेन्द्रकी अतिथिशालाका पिछवाड़ा।

मन्मथ और शरत्।

मन्मथ—आजकलमें ही तुमपर हैण्डनोटोके बारेमें नालिश होनेवाली है। तुम जवाब देना कि ये हैण्डनोट मैंने नहीं लिखे है—ये जाली हैं।

शरत्—मेरी उनपर सही है, मैं कैसे उन्हें जाली बता सकता हूं?

मन्मथ—अरे इसमे डरकी कोई बात नहीं है। इस जालसाजीके मामलेका विचार केवल दस्तखतपर ही नहीं होगा। एक मजेदार बात यह है कि जिस कागजपर दोनों हैण्डनोट

लिखे गये है वह स्वदेशी मिलका है, जिसे खुले अभी आठ ही महीने हुए है। और तुम्हारे हैण्डनोटोंपर तारीख पड़ रही है दो साल पहलेकी। जिस समय तुमने हैण्डनोटो-पर सही की थी उस समय कागज बना ही नहीं था, बस इसी एक बातसे जालसाजी सावित हो जायगी।

शरत्—तब क्या होगा?

मन्मथ—जेल होगी।

शरत्—अरे, इससे मेरे हाथ क्या लगेगा? यहाँ तो नगद्नारायण चाहिये।

मन्मथ—क्यों तुम तो नीरद् वाबूको फँसानेकी फिकरमे न थे?

शरत्—था तो सही, पर अब नही हूं। कुमुदके सारे शरीरमे न जाने क्या निकला है। उसकी आमदनीका रास्ता बन्द हो गया। चारो ओर देना ही देना है, तगादेके मारे रास्ता चलना मुश्किल हो गया है, अब कुछ माल चाहिये।

मन्मथ—अच्छा जो चाहोगे सो मिलेगा। नीरद् भैया जब मामला निपटाने आवें तब तुम बीस पचीस हजार माँगना, उन्हें झख मारकर देना पड़ेगा।

शरत्—जो भागमें बदा होगा सो होगा। मुझे क्या मैं उन्हे जालीही बतादूंगा?

मन्मथ—वे सब भी आयी है?

शरत्—हाजिर हैं—मै भी हाजिर हूं। एक बार अगर तुम उन्हें जालमे फँसा सके तो फिर बचाजीका निकलना मुश्किल

है। इन छोकरियोकी क्या जरूरत थी? हम दो तीन आदमी ही ठीक कर देते।

मन्मथ—क्या जाने कोई कह देता। अरे देखो तो, ये छोकरियाँ ही ठीक किये देती है। और इन्हे कोई पहचानता भी नही। इन्हे कोई देखेगा तो समझेगा कि ये पूजा करने आयी है। तुम्हारा दल होता तो अवधूत पहचान लेता, न जाने क्यासे क्या हो जाता। यह ठीक हुआ है।

शरत्—वह दो हाथ जमाऊँगा कि बचाजीको छठीका दूध ही याद आ जायगा।

मन्मथ—(आप ही आप) पहले छोटे बाबू हैण्डनोटकी बलासे बच जायँ, फिर नीरद भैयाको जालसाजीके मामलेमें फाँसूँगा। हजरत कितने बड़े चालवाज है देख लूंगा। (शरत्से) चलो जी, छिप जायँ, वह आ रहे है। (आप ही आप) जबतक बँटवारेवाला मामला नहीं निपटाते तुम्हें नहीं छोड़नेका।

[दोनोंका प्रस्थान।

(अवधूत और नीरदका प्रवेश।)

अवधूत—इतनी रातको क्या करने जा रहे हो बचा? आज आफत आनेवाली है—आज चल दो—कल दिनको आना।

नीरद्—दिनको फुरसत मिले न मिले ; बिना देखेभाले अतिथियोके घर गिर पड़ेगे। आप जाकर सोइये—मैं देखभालकर चला जाता हूं।

अवधूत—भला यह भी कभी हो सकता है ? चलो—मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।

नीरद—क्यों अवधूत जी, आपको डर लग रहा है ?

अवधूत—अरे आज परियोका झुंड आकर उस बेलके पेड़पर बैठा है। आज ब्रह्मदैत्यके बेटेका व्याह है—परियाँ नाचें-गावेंगी।

नीरद—नहीं—नहीं—आपके चलनेकी जरूरत नहीं है।

अवधूत—सो क्यों ? तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या तुम परियोंके राज्यमें उड़कर जाना चाहते हो ?

नीरद—(आप ही आप) अच्छे गँजेड़ीके पाले :पड़ा हूं। हाँ, अवधूतजी, यह कहना तो मैं भूल ही गया था कि बड़ी माँ काशीजीसे आ गयी है, उन्होंने न जाने क्यो आपको बुलाया है—कहा है कि आज ही रातको आप मुझसे मिले।

अवधूत—तुमने कहा क्यो नहीं कि इतनी रातको कैसे जाऊँगा ? आज आधी रातको ब्रह्मदैत्यके बेटेका ब्याह है, मुझे पुरोहिताई करनी होगी।

नीरद—लौटकर कीजियेगा।

अवधूत—ऐसा करना क्या उचित है ? वह बहुत दिनोंसे उस बेलके पेड़पर रहता है, बहुत दिनोंकी मेल-मुलाकात है, मेरे चले जानेसे उसका जी दुखेगा इससे यहाँसे टलना ठीक नहीं है।

नीरद—(आप ही आप) यह तो टलना ही नहीं चाहता !

अवधूत—ब्याह बड़ी धूमधामसे होगा, समझे? परियाँ पंख छिपाकर झमझम करती आ पहुंची है। वे कोई दस छत्ते तोड़ ले गयी है, शहद पीयेगी।

नीरद—परियाँ शहद पीती है?

अवधूत—हाँ, और निंबू चूसती हैं।

नीरद—ब्याह तो करावेंगे, पर आपको मिलेगा क्या?

अवधूत—आकाशकुसुम।

नीरद—तो जाते क्यों नहीं?

अवधूत—बाबाको जरा गाँजा पिला दूँ, उनको झपकी लगते ही मै यहाँसे खिसक जाऊंगा।

नीरद—तो जाइये—देर मत कीजिये।

अवधूत—देखना, अगर वे तुम्हे ले उड़े तो तुम मन्दिरका कँगूरा पकड़ लेना।

नीरद—अच्छा, वैसा ही करूँगा।

अवधूत—अगर उनमें कोई ब्याह करना चाहे तो उसकी माँके दोनों कान पकड़कर उमेठ देना। समझे—मैं चला, जाकर बाबाको शयन कराता हूं। (आगे बढ़कर) और अगर शहद पिलाना चाहें तो दो डकार लेना।

(जाते जाते फिर खड़े हो जाना)।

नीरद—बहुत अच्छा—वैसा ही करूँगा।

अवधूत—और सुनो—अगर तुम्हें सुहाग रातके लिये ले जायँ तो उलटी कलाबाजी खाना।

नीरद—बहुत अच्छा।

अवधूत—और देखना अगर तुम्हे विवाह मण्डपमे ले जायं—

नीरद—अच्छा—अच्छा, मै जाता हू—

अवधूत—अच्छा, तुम जाओ—मै जाकर बाबाको शयन कराता हूं।

[अवधूतका प्रस्थान।]

नीरद—बला टली।

[प्रस्थान।]

सातवां दृश्य

अतिथिशालाका भीतरी हिस्सा।

फूली।

फूली—उसने इतनी देर क्यों की? लो, वह आ रहा है।

नीरद—कौन—फूली?

फूली—हाँ, आज रहने दो—मै चली। मुझे बड़ा डर लग रहा है—रात बहुत हो गयी है—यहाँ भूतप्रेत है।

नीरद—बस—बातें न बना।

फूली—नही, आज रहने दो, कल जल्दी आ जाऊँगी। मैं अकेली

बैठी थी। ऐसा जान पड़ता था कि मानो कोई हँस रहा है—कोई रो रहा है।

नीरद्—अरी कुछ नहीं है, दीया जलते ही सब डर जाता रहेगा। हवाकी सनसनाहट नहीं सुन पड़ रही है?

फूली—नही, मुझे डर लग रहा है।

नीरद्—तो मेरी बैठकमे चल।

फूली—अरे बाप रे! तब तो सभीको पता लग जायगा।

नीरद्—डरकी कोई बात नहीं है—बैठ जा।

(दियासलाईसे दीया जलाना।)

नीरद्—तेरा भाग फिर गया। मैंने डेढ़ सौ रुपये महीनेपर एक आलीशान मकान किराये ले लिया है, तुझे वहीं रखूंगा, पलंग बिछौना और सब सामान पहुंचवा दिया है। घर क्या है मानो इन्द्रभवन है।

फूली—तुमने घर कब लिया? यही तो तुम्हारा झूठ है! इसीसे तो तुम्हारी बातपर विश्वास नहीं होता।

नीरद्—ऐसा क्यों जान? लो, तुम्हे हैण्डनोट दिखाये देता हूं।

फूली—मै एक एक करके देखूंगी। छोटे बाबूकी सही पहचानती हूं। सही देखूंगी। तुम जिस तिसके नामका हैण्डनोट दिखाकर मुझे भुलावा न दे सकोगे। मैंने सुना है कि आठ हैण्डनोट है, आठों ही मैं देखूंगी।

नीरद्—अच्छा ले देख। (हैण्डनोट देना)।

फूली—हाँ, सही तो छोटे बाबूकी ही है। एक—दो—

नीरद्—देख, मैं सजाये देता हूं। (नोटोंका सजाना)

फूली—(हैण्डनोट लेकर) ये तो हैण्डनोट है। रुपये कहाँ है ?

नीरद्—आधी बात मैंने मानी, आधी तू मान। इसके बाद तुझे रुपये देता हूं। क्या तू समझती है कि रुपये न दूंगा। इतनेपर भी मुझपर विश्वास नही होता ? आ जान, छाती ठंढी कर।

फूली—(नक्कीसे) ॲरे नीरॅद्—ॲरे नीरॅद्—मै फूली नहीं हूं—मै फूली नही हूं—तेरॉ सिॅर तोड़ूंगी।

नीरद्—तुझे बड़ा पखण्ड आता है।

(छिपी हुई वेश्याओंका प्रवेश)

वेश्याएॅ—(नक्कीसे) ॲरॅ नीरॅद्—ॲरॅ—नीरॅद् वॅह फूॅलीं नहीं है—फूॅली नही है—तेरॉ सिॅर तोड़ेगी—तेरॉ सिॅर तोडेगी।

नीरद्—ऐं—यह सब क्या ? बदमाशी—धोखा !

वेश्याएॅ—(नक्कीसे) नीरॅद्—तेरॉ सिॅर तोडेगी—तरा सिॅर तोड़ेगी।

(नीरदको घेरकर वेश्याओंका गाना)

गीत।

(थियेटरी चाल)

हॉ हॉ तेरी किस्मत फिरी—
सुखसे रहेगी,
गाड़ी चढेगी,
बेगम बनेगी तू तो निरी।
गाना सुना तू,
नखरे दिखा तू.

उल्लू बना तू रहके घिरी ।
यारी करेगी ,
पाकेट भरेगी
सौतन जरेगो कदमो गिरी ।

अरॅ नीरॅद्—अरॅ अरॅ नीरॅद्—अरॅ नीरॅद ।

नीरद्—चोर—चोर—मार डाला—मार डाला !

(वेश्याओंका ताली बजाते हुए ऊँचे स्वरसे गाना)
(इसी अवसरपर फूलीका हैण्डनोटोंको जलाना ।)

फूली—चल—चल—चल, तेरे नोट गये जल ।

नीरद्—पुलिस—पुलिस— (फूलीका प्रस्थान ।

(शरतका प्रवेश ।)

शरत्—ले, अब जरा लात घूंसोंका भी मजा चख । (मारना)

नीरद्—अरे बापरे—मार डाला—

[नीरदके सिवा सबका प्रस्थान ।

(अवधूतका प्रवेश ।)

अवधूत—बच्चा नीरद, सुहाग-रातकी तैयारी है—कलाबाजी खाओ—कलाबाजी खाओ—

नीरद्—मेरी जान बचाओ—मेरी जान बचाओ—मुझे मार डालेगा,

अवधूत—झटसे घर जा छिपो ।

नीरद्—अवधूत जी, ये सब डाकू थे ।

अवधूत —डाकू कहाँ—सब परियाँ थीं, फुर्रसे उड़ गयीं

नीरद्—वही हरामजादी फूली ! सिपाहीको बुलाओ, बज्जातको गिरफ्तार कराऊँ ।

अवधूत—फूलीका ढंग देखा,—वह परियोंकी रानी है, अब भी तुम्हारे सिर सवार है।

नीरद—क्योंरे गँजेड़ी, तो तू भी इसमे शामिल है?

अवधूत—इसका माथा गर्म हो गया है। रस्सीसे बाँधकर इसके सिरपर दो तीन घडे कूँएक जल डालना होगा।

नीरद—सब सालोंकी मुश्कें बँधवाऊँगा—सब सालोंकी मुश्कें बँधवाऊँगा।

अवधूत—हाँ, जरूर बाँधनी होगी, नही तो आज खूनखराबा करेगा।

नीरद—अरे बापरे! साला मुझे ही बाँधना चाहता है! [प्रस्थान।

अवधूत—ठहर—ठहर—तीन फूकमे तुझे झाड़ देता हूं।

[पीछे पीछे अवधूतका प्रस्थान।

आठवाँ दृश्य।

उपेन्द्रके मकानका भीतरी हिस्सा।

विरजा।

(उपेन्द्रका प्रवेश।)

विरजा—यह क्या! तुम्हारी यह दशा कैसे हुई?

उपेन्द्र—जो होना था सो हुआ। तुमने मेरा पागल होना नहीं सुना?

विरजा—यह क्या कह रहे हो ?

उपेन्द्र—क्यो तुमने सुना नहीं ? नीरदने अपनी गर्भधारिणीसे सलाहकर अदालतमें दरखास्त दी है कि मैं पागल हो गया हूं। मैंने अपने गुजरके लिये जो कम्पनीके कागज रखे थे उन्हें उसने रोक दिया है। मुझे पागल साबित करेगा ! नहीं तो कम्पनीके कागज उसके हाथ नहीं लगेंगे—तुम्हारी जायदादपर कब्जा नहीं कर सकेगा; तुम्हारी जायदाद तुम्हे मिल जायगी।

विरजा—ऐं—कहते क्या हो ! ओह ! क्या सुन रही हूं ! तुम बैठो।

उपेन्द्र—बैठना हो चुका—अब इस घरमें मेरे लिये जगह नहीं है ! यहाँ रहनेसे वह मुझे पागलखाने भेज देगा, इसीसे मै भागता हूं। मनमें बड़ी लालसा थी कि शैलेनको देखूंगा, पर वह तो इस घरमे है नही। अगर बेमौत नहीं मरना चाहती हो तो तुम भी भागो।

विरजा—ठंढे हो—देखती हूं न कौन तुम्हें पागलखाने भेजता है। तुमने कुछ खाया पीया है ?

उपेन्द्र—खाना पीना हो चुका, अब तो भीख माँगकर ही खाना होगा।

विरजा—छीः छीः ! ऐसे पूत भी पैदा होते है !

उपेन्द्र—सपूत है, सपूत ! मैं भागता हूं—मेरे पैरोंमे बेड़ी डलवा देगा—सचमुच मैं पागल हो गया। पागल और कैसे होते हैं ?

(तरङ्गिणीका प्रवेश)

तरङ्गिणी—चलो—चलो—अपने कमरेमें चलो—यहाँ क्या कर रहे हो? अब बैरियोंको मत हँसाओ।

उपेन्द्र—बेड़ी लायी हो? यहीं पहरा दो। नहीं, जरा ठहर जाओ—दो बातें कर लूं।

तरङ्गिणी—बाते फिर करना—लो—चलो—चलो।

उपेन्द्र—अच्छा, तुम्हारा किस कुलमें जन्म है? तुम्हारा क्या मनुष्यके घर जन्म हुआ है? सच सच कहना, तुम्हारी जोड़ी इस दुनियामें है? तुम्हारे बोझसे धरती धँस नही जाती?

तरङ्गिणी—नीरद, जल्दी आ—जल्दी आ—देख यहाँ तेरी ताई दुलार करके पागलको उसका रही है!

(नीरदका प्रवेश)

नीरद—ताई, अब तुमसे हम लोगोका क्या वास्ता? बाबूजीको तो पागल कर सब कुछ लिखवा चुकी अब क्यो पीछे पड़ी हो? बाबूजी, चलिये—कमरेमे चलिये।

उपेन्द्र—मुझे छूना मत—छूना मत। सब कुछ तो हो चुका—अब नरहत्या क्यों कराता है—पुत्रहत्या क्यो कराता है—स्त्रीहत्या क्यों कराता है?—हट जा!

तरंगिणी—अरे, ये पागल हो गये—पागल हो गये! नीरद, देखता क्या है? लोगोंको बुला—इन्हें बाँधकर डाल रख, नहीं तो खून कर डालेंगे।

उपेन्द्र—हाँ, खून करूँगा। (तरंगिणीका गला दबाना

नीरद्—खून कर डाल—खून कर डाला! (शाघ्रतासे प्रस्थान)

विरजा—है—है-क्या करते हो—खून हो जायगा!

उपेन्द्र—भाभी, तुम मत बोलो । यही काम क्यो बाकी रहे?
(तरंगिणीसे) अभी तू मरी नहीं?

(वैद्यनाथ, निताई और मन्मथका प्रवेश और तरंगिणीको छुड़ाना।)

वैद्य—उपेन्द्र, क्या करते हो—क्या करते हो!

निताई—बड़ी भाभी, जल्दी पानी लाना।

(बिरजाका पानी लाना और तरंगिणीके मुहँपर छिड़कना)

वैद्य—उपेन्द्र, तुमने यह क्या किया?

उपेन्द्र—क्या किया—जानते नहीं, पागल हो गया हूं? देखनेसे
तुम्हें मालूम नही होता? काम देखकर तुम्हे जान नहीं
पड़ता?

तरंगिणी—अरे बापरे, मुझे मार डाला रे!

उपेन्द्र—मरी नहीं—मरी नही? स्त्रीहत्या करना भागमें लिखा
नहीं है! [तरंगिणीका प्रस्थान।

वैद्य—उपेन्द्र—उपेन्द्र, आओ—चलो

उपेन्द्र—चलता हूं, अब तो रास्ते रास्ते घूमना और भीख माँग कर
खाना होगा—और तो कोई उपाय है नहीं! तुमने सुना
नहीं कि कुलकी ध्वजा पुत्रको सर्वस्व देकर फकीर हो गया
हूं?

निताई—चलो, हमारे साथ चलो, रास्ते रास्ते क्यों घूमोगे? मेरा
घर नहीं है या वैद्यनाथका नहीं है?

वैद्य—उपेन्द्र, आओ—चलो—

उपेन्द्र—चलो-एक बार मुझे शैलेनको दिखाना, जबतक मै उसे न देख लूंगा, प्राण नहीं त्यागूंगा । पर मुझे जल्दी उसे दिखाना, मेरे दिन पूरे हो आये है ।

विरजा—हे भगवान ! ये तो पुलिसवाले आ रहे हैं— (ओटमे होना)

(इन्स्पेक्टर और कान्स्टेवलोंको साथ लेकर नीरदका प्रवेश)

नीरद—विनोद बाबू, इन्हें गिरफ्तार कीजिये ।

विनोद—कहाँ—खून कहाँ हुआ है ?

उपेन्द्र—फाँसी नही होनेकी—फाँसी नहीं होनेकी ! खून नही हुआ, बच गयी—बच गयी—

नीरद—विनोद बाबू, इन्हे गिरफ्तार कर हवालातमे ले जाइये, खून हो गया है । माँ—माँ, इधर आकर इन्स्पेक्टर साहबसे सब हाल कहो—

तरंगिणी—क्या कहू साहब, मुझे मार ही डाला था—मेरा गला धर दबाया था !

निताई—विनोद, मामला समझ गये न ?

बिनोद—उपेन्द्र बाबू, क्या आप पागल हो गये है ?

तरंगिणी—ये पागल हो गये हैं—खूनी हो गये है, मेरा खून कर ही चुके थे । बेटेको मारा पीटा ।

नीरद—विनोद बाबू, इन्हें हवालातमें ले चलिये । खुले रहेगे तो खून कर डालेगे ।

निताई—विनोद, मामला कुछ समझमे आ रहा है? चलो—मैं सब कहता हूं।

वैद्य—(उपेन्द्रका हाथ पकड़कर) चलो—चलो—

उपेन्द्र—आहा पूत हो तो ऐसा हो! तुमने जन्म लेकर कुलको पवित्र कर दिया! जिस दिन तुम जनमे थे, भैयाने खूब बाजे बजवाये थे, तुमने भी खूब ढोल बजवाये! धन्य है तुम्हारी जननी! धन्य है तुम्हारे जन्मदाता! अब तुम निश्चिन्त रहो, अब मै थोड़े दिनका मेहमान हूं। खडे खड़े क्या सोच रहे हो? पागलखाने भेज देना।

नीरद—विनोद बाबू, ये पागल हो गये है आप देख नही रहे है?

विनोद—पागल हुए है या आप लोगोंने पागल कर दिया है—कुछ समझमे नही आता! यह सब देख सुनकर तो मेरे ही पागल होनेकी नौबत आ गयी है!

तरंगिणी—नीरद, किसी अच्छे दारोगाको बुला ला।

विनोद—हाँ माँजी, दूसरेको बुलाइये—मेरा यह काम नहीं है।

[इन्सपेक्टर और कानस्टेबलोंका प्रस्थान।

विरजा—निताई भाई, मैने सोचा था—ससुरका घराना है, सब सह लूंगी, पर अब मै किसीका मुलाहजा नहीं करूँगी, तुम अदालतसे जल्दी हुकुम निकलवाओ। दस बरस हो गये, मेरी यह दशा हुई है—जायदादसे एक पैसा भी मैने नहीं लिया। खाने-कपडे पर मै इनके घरमें लौंडीगिरी

कर रही हूं। अब मैं अपने हिस्सेके एक एक पैसेका हिसाब समझूंगी।

वैद्य—चलो—चलो—

उपेन्द्र—जरा ठहरो—अपने सपूतका मुखड़ा देख रहा हूं। अपने कुलतिलकको देख रहा हू।

वैद्य—चलो—चलो—

नीरद—(तरङ्गिणी के पास होकर) माँ, देखो तो, मै अगर इन्हे हवालातमे न भिजवाऊं तो मेरा नाम नहीं।

उपेन्द्र—बेटा बलिहारी है! [सबका प्रस्थान।

पाँचवाँ अङ्क

पहला दृश्य ।

रजिस्ट्री आफिस ।

सतीश, शरत् और हीरू घोषाल ।

सतीश—है, कहते क्या हो ? नीरदने पन्द्रह हजार देकर निपटाया नहीं ? फौजदारी मामला है । एकदम चौदह वर्ष रखा हुआ है । बचाजी क्या जेल जायँगे ?

हीरू—शौक हुआ है !

शरत्—खाली शौक नहीं है बाबा—निताई वकीलने बड़ी बहूकी जायदाद अदालतके जरिये निकाल ली है ! बड़ी बहूकी कड़ी प्रतिज्ञा है कि अपने हिस्सेके एक एक पैसेका हिसाब समझेंगी । उन्हें विधवा हुए भी तो दस वर्ष हो गये हैं, उन्होंने जायदादसे एक पैसा भी नहीं लिया, उन्हें दस वर्षकी आमदनीका हिसाब समझाते समझाते चचा-भतीजेके होश ठिकाने हो गये है । नीरदके हाथमे जो कुछ रुपया था सब निकल गया ।

सतीश—एक आध जायदाद बन्धक रखकर रुपये क्यों नहीं देता ? पन्द्रह हजार ही तो है !

हीरू—समझता नही है, उतनी अक्ल नहीं है। तुमने शायद आज-कल दलाली इख्तियार की है ?

शरत्—निताई वकीलके मारे क्या अब वहाँ किसीकी दाल गलने पाती है ? उसने ऐसी सब जायदाद कुर्क करा ली है जो दूसरेके हाथमे जा सकती है।

हीरू—तब तो शिवू वकील यों ही रह गया !

शरत्—वह दूध पीता बच्चा है न जो योंही रह जायगा ? वह शैलेन्द्रको तबाह कर डालेगा। शैलेन कर्जके बोझसे बेतरह दब रहा है। लेहनदारोंने उसके नाकोदम कर रखा है, इससे उसने तालतलेवाला मकान बेच डालना विचारा है।

सतीश—उसी मकानके कबालेकी रजिष्ट्री करानेके लिये ही तो मैं आया हूं, मेरे एक अपने आदमी उसे खरीद रहे हैं।

शरत्—समझबूझकर खरीदना बचा ! उसमे उलझन है। शैलेन स्त्रीकी जायदाद बताकर उसीके हाथों मकान बिकवा रहा है, पर असलमे बात यह नही है। मकान बेनामा है। उसके सबूतके सब कागज-पत्र शिवूके पास है। उन्हींको हथियानेके लिये शैलेन शिवूके पास दौड़-धूप कर रहा है—उसको खुशामद कर रहा है।

हीरू—वह चाहे खुशामद करे, चाहे सिर पटके, शिवू कागज पत्र नहीं देनेका।

शरत्—और इधर वह शैलेनसे कह रहा है कि "मुकद्दमेके खर्चे मद्धे

मेरा जो रुपया पावना है उसका कोई बन्दोबस्त कर दो। बड़ी भाभीके मरने पर उनकी जो आधी जायदाद तुम्हें मिलेगी उसका हक मेरे नाम लिख दो तो मै तालतलेवाले मकानके बारेमे कोई झमेला नहीं करूँगा।" सुना है, आज वह उसके हिस्सेका हक अपने नाम लिखवानेवाला है।

सतीश—फिर क्या है! अब शिवू तालतलेवाले मकानके बारेमे कोई बखेड़ा खड़ा न करेगा।

शरत्—खूब कही! कहीं इस धोखेमें न रहना। देख सुनकर आदमी होशियार हो जाता है और तू धोखा खा चुकनेपर भी शिवूको पहचान न सका!

सतीश—अरे बात यह है कि खर्चेके लिये उसने मुझे उस तरह जकड़बन्द किया था। जब खर्चेका निपटारा हो चला है तब वह शैलेनका मकान क्यो लेने लगा?

शरत्—घरद्वार उजाड़े बिना उसे रातको नींद नहीं आती।

सतीश—जब उसका देना ही चुक गया तब वह कैसे लेगा?

हीरू—उसने तीन हैण्डनोटोंकी डिग्री जारी करा रखी है—एक ओर शैलेन बड़ी बहूकी जायदादका हक लिख देगा और दूसरी ओर शिवू तालतलेवाला मकान कुर्क करावेगा।

(शिवू वकीलका प्रवेश)

शिवू—शरत्, हीरू, तुम दोनोंमे किसीको शैलेनकी शिनाख्त करनी होगी।

शरत्—वह तो कर दूंगा पर इधर नीरद जो कोरा जवाब दे गया है ।

शिवू—तुम पागल हो ! कोरा जवाब क्या देगा ? उसकी सासके पास माल है, मैंने उसे उसके पास जानेके लिये कहा है ।

हीरू—अजी साहब, यह सब मन्मथकी चालबाजी है ।

शिवू—तुम पागल हो ! रुपये देकर मामला निपटाना ही पड़ेगा, नही तो बचाजीको जेलकी हवा खानी होगी । मैंने सब ठीक कर लिया है, तुम लोग फिकर मत करो । कल मैं मामला मुलतवी कराऊंगा, इस बीचमे रुपयेका बन्दोबस्त हो जायगा ।

शरत्—हाकिम अगर मुलतवी न करे तो ?

शिवू—दोनो तरफसे दरखास्त पड़नेपर हाकिमको मामला मुलतवी करना ही पड़ेगा । तुम लोग यही रहो, मै आफिससे एक काम निपटा कर आता हूं । हाकिमके आनेमे भी अब बहुत देर नहीं है ।

[दोनोंका प्रस्थान ।

हीरू—इधर जो होना होगा सो होगा । अभी तो एक चिड़िया हाथमें आयी है । बोली—भले घरकी बहू हूं, स्वामी बड़ा सताता है । आदमीकी तलाशमें है । अगर कोई मिल जाय तो वह घरसे निकल आवे ।

शरत्—यह सब बातें क्या वह तुम्हारे घर आकर कह गयी ?

हीरू—कामकी बातमे भी तुम्हें दिल्लगी सझती है । कल शामको

गंगा किनारे उससे मुलाकात हुई थी—चादरसे मुँह ढके रो रही थी। बातचीतमे मै उसके मनका भाव ताड़ गया।

शरत्—चेहरा कैसा था?

हीरू—कहा तो, चादरसे मुँह ढके हुई थी। भला उसका पूछना ही क्या? उसने जैसी मीठी मीठी बाते की उसीसे समझ गया कि चाहे वह परी न हो, सुन्दर जरूर है। कल तुम्हारा मामला है, इससे मैंने उसे परसों गंगाकिनारे मिलनेको कहा है। वह गहनोंका सन्दूक लेकर घरसे भाग आवेगी। अगर तुम राजी न हो तो कहो मै किसी दूसरेको ठीक करूँ।

शरत्—और किसीको ठीक करनेकी क्या जरूरत है?

(शिबू वकील, शैलेन्द्र और सतीशका प्रवेश।)

शैलेन्द्र—शिबू बाबू, मैं आपकी शरणमें हूं। नाकमे दम हो गया है। मेरी रक्षा कीजिये। तगादेके मारे खाना-पीना हराम हो गया है। जायदाद दिखाकर इतने दिन जिन्हें रोक रखा था, निताई भैयाके कुर्क करानेसे वे अब नहीं सब्र करते। जो बात कभी नहीं सुनी थी वह अब सुननी पड़ रही है। आप मुझपर तरस खाकर मेरा मकान बिकवा दीजिये। दो चार दिन दम मारनेकी फुरसत तो मिले। (सतीशसे)सतीश, रुपये लाये हो भाई?

शिबू—शैलेन बाबू, आप इतने उतावले क्यों हो रहे है? पहले मेरे

दस्तावेजकी रजिस्ट्री हो जाय, उसके बाद मैंने जो कहा है उसमे फर्क न पड़ेगा।

सतीश—शैलेन बाबू, आप निश्चिन्त रहिये, मैंने शिवू बाबूसे सब बाते पूछी, वे कहते है कि कोई झमेला नही होगा। जिसने इस तरह गरदन झुकायी है उसपर क्या कोई छुरी चलावेगा? उन्होने कहा कि वह मकान तुम बेखटके खरीद सकते हो।

शैलेन—देखना भाई, पीछे कहीं कोई झमेला न खड़ा हो।

सतीश—झमेला किस बातका? जिसमे तुम्हे जरा आराम मिले मै वही चेष्टा करूंगा। और शिवू बाबू जब मुझे जबान दे चुके है तब वे कोई झमेला न करेंगे। अपनेको भगवानके भरोसे छोड़ दो-जो भाग्यमे बदा है सो होगा।

शैलेन्द्र—देखिये, पावनेदारोका कितना कड़ा तगादा है, यह सुनकर कि आज मकानके रुपये मिलेंगे, उन्होंने यहाँतक धावा मारा है।

(रजिस्ट्रार और अमलों वगैर.का प्रवेश)

शिवू—पहले मेरे इस दस्तावेजकी रजिस्ट्री कर दीजिये।

(दस्तावेज दाखिल करना)

रजि—किस चीजका दास्तावेज है?

शिवू—बताइये शैलेन बाबू?

शैलेन—रेहननामा हैं। विरजा दासीकी आधी जायदादका मैं हकदार हूं। शिवू बाबूसे मैने हैण्डनोटपर रुपये कर्ज

लिये थे उन्हीं रुपयोंके बारेमें मैंने यह तमस्सुक लिख दिया है।

रजि—शिनाख्त कौन करेगा ?

शिबू—ये हीरू घोषाल।

रजि—देखता हूं, घोषाल बाबूका यहाँ आना जाना बराबर लगा ही रहता हैं।

हीरू—क्या करूँ हुजूर! बहुतोंसे मेलमुलाकात ठहरी, किसीकी बात टाल नही सकता।

शिबू—हुजूरको अगर इनकी शिनाख्त मंजूर न हो तो, दूसरा आदमी हाजिर है।

रजि—नही नहीं, ये ही करें। क्यों साहब,आप इन्हे पहचानते हैं?

हीरू—भला शैलेन बाबूको नहीं पहचानता ? जी हाँ पहचानता हूं।

रजि—अच्छा तो सही कीजिये। (शैलेन्द्रसे) आप भी सही कीजिये (अमलेसे)लो, इनके अँगूठेका निशान ले लो।

(एक भलेमानसका प्रवेश)

भलामानस—क्यों सतीश, रजिस्ट्री हो गयी ?

सतीश—अभी हुई जा रही है। इस तमस्सुककी हो जाय।

अमला—(शिबू से) यह लीजिये अपनी रसीद।

सतीश—शैलेन बाबू, कबाला पेश कीजिये।

रजि—कैसा कबाला ?

शैलेन—मकान बेचनेका। तालतल्लेमें मेरी स्त्रीका एक मकान है, उसे ये खरीदेंगे।

शिबू—स्त्रीकी सम्पत्ति बेचनेवाले आप होते कौन हैं ?

शैलेन्द्र—मेरी स्त्रीने मुझे कबाला रजिस्ट्री करनेका मुख्तारनामा दिया है। यह देखिये मुख्तारनामा।

शिबू—तुम्हारी स्त्री यहाँ हाजिर नही है, अगर होती तो मै हाकिमसे तुमपर मामला चलानेको कहता।

शैलेन्द्र—शिबू बाबू, मुझपर दया कीजिये, मेरी रक्षा कीजिये।

सती।—यह क्या शिबू बाबू, अभी तुमने कहा था न इसमें कोई झमेला नहीं है।

भलामानस—चुप भी रहो—ये क्या कहते हैं, सुन तो लें। क्यों साहब, मामला क्या है ?

शिबू—मामला और क्या है ? आप जालसाजोंके फेरमे पड़े है।

शैलेन्द्र—शिबू बाबू, मुझपर तरस खाइये मै आपके पैरों पड़ता हूं, मेरी रक्षा कीजिये।

शिबू—क्यो नहीं ! जालफरेबके लिये और कोई जगह नही थी ? जानते नहीं यह अदालत है ? यहाँ जालसाजी करने आये हो ? तुम्हारे पैरों पड़नेसे क्या मै अधर्म करूँगा ? तुम लोग एक भलेमानसको ठगो और मैं खड़ा तमाशा देखूं ?

भलामानस—क्यो साहब, हुआ क्या, कहिये तो सही ?

शिबू—खैरियत यह हुई कि मै यहाँ मौजूद था। क्या हुआ, बताऊँ ? ये जुआचोर मिलकर आपको ठग रहे है।

भलामानस—कैसे ?

शिवू—मकान इनकी स्त्रीका नहीं है, इन्होंने उसके नाम कर दिया है। उसमें बड़े झमेले हैं। मेरे पास सबूत है, आप देखना चाहते हों तो मेरे आफिसमें आकर देख सकते हैं। और जो खरीदना चाहते हैं तो खरीदिये। पर उसे रख न सकियेगा। मेरी डिगरी हो गयी है इनकी जायदाद मैं कुर्क कराऊँगा।

भलामानस—है, यह बात है! (शैलेन्द्रसे) छी छी! आप भले-मानस होकर ऐसी जालसाजी कर रहे हैं! (सतीशसे) सतीश, तुमपर मैंने भार दिया था। ये भलेमानस न रहते तो मैं ठगा ही जा चुका था।

शिवू—आप इनपर धोखेबाजीका मामला चलाइये, जेल भिज-वाइये, मैं गवाही दूँगा।

भलेमानस—अजी साहब, इस झंझटमें कौन पड़े! अब मैं वह मकान नहीं खरीदनेका। सतीश, चलो घर चलें।

(शिवू वकीलका प्रस्थान)

सतीश—तुम जाओ, मैं फिर मिलूंगा, तब सब बातें बताऊँगा।

रजिस्ट्रार—छी छी शैलेन बाबू, आप बड़े घरानेके लड़के होकर यह सब क्या कर रहे हैं? कहाँ तो लोग आपसे सत्यमार्गपर चलना, सद्व्यवहार करना सीखेंगे और कहाँ उलटे आपलोग ही उन्हें कुमार्ग दिखा रहे हैं। र ज [illegible] कराने वाले ज[illegible] ठहरे, मेरे कमरेमें एक [illegible] र [illegible] दस्तावेज रजिस्ट्री कर आऊँ। [रजिस्ट्रारका प्रस्थान।

१ला पावनेदार—क्यों साहब, क्या हुआ? हमारे रुपये नहीं मिलेंगे? चुप क्यों हो रहे? आप कह आये थे न यहाँ सब रुपये चुका दूँगा? इतनी दमपट्टी!

शैलेन्द्र—हे भगवान!

२रा पावनेदार—ओः भगवानकी याद हो रही है! अजी, तुम्हे धर्मज्ञान है भी?

सतीश—आप लोग मरे हुएको और क्या मार रहे है? ये बेईमान नहीं है। आप लोग खातिरजमा रखें—घर बैठे आपको रुपये मिल जायँगे।

३रा पावनेदार—ये दे चुके और हम ले चुके! ऐसे ठगसे तो कभी वास्ता नहीं पड़ा था। रहा ही क्या जो मिलेगा!

४था पावनेदार—देखते क्या हो—कुर्ता, दुपट्टा सब उतार लो।

सतीश—आप लोग माफ करें। (शैलेन्द्रसे) चलो शैलेन बाबू, घर चलो।

१ला पावनेदार—कमसे कम इसके कान तो अच्छी तरह गरम कर देने चाहिये। रुपये जो मिलेंगे सो तो दिखाई ही दे रहा है।

सतीश—शैलेन, चलो तुम्हे घर छोड़ आऊँ। यह सब सुनकर क्या करोगे? जब बुरे दिन आते हैं तब ऐसा ही होता है।

शैलेन्द्र—सच तो- दुःखकी क्या बात है? कुछ नहीं—कुछ नही ऐसा ही होता है।

सतीश—चलो घर चलें।

शैलेन्द्र—घर ?—चलो, ऐसा ही होता है—ऐसा ही होता है !

२रा पावनेदार—चलो जी चलो। रुपयेकी थैली तो मिल ही गयी।

सतीश—चलते चलते फिर क्यों रुक गये? क्या सुनते हो?

शैलेन्द्र—कुछ नहीं—कुछ नहीं, ऐसा ही होता है—ऐसा ही होता है। [सबका प्रस्थान।

दूसरा दृश्य।

उपेन्द्रका मकान।

विरजा और निताई।

निताई—भाभी, नीरद और शैलेनपर तुम्हारी जो डिग्री हुई है उसके सब रुपये वे नहीं दे सकेंगे, उनकी जायदाद कुर्क करानी पड़ेगी। सो जायदाद तुम्हारे नाम खरीद लूं?

विरजा—मँझले जने क्या कहते है?

निताई—वे तुमसे पूछनेको कहते है।

विरजा—तुम क्या कहते हो?

निताई—मै तो तुमसे पूछ रहा हूं।

विरजा—निताई बाबू, तुम एक बार फिर शैलेनके पास जाओ।

निताई—मै एक बार क्या, दस बार जानेको तैयार हूं। पर जानेसे फल क्या? उसकी कड़ी प्रतिज्ञा है। घर बिक गया,

अब वह इस घरमें नहीं आवेगा। हाथमे जो कुछ था वह निकल गया, छोटी बहूके गहने बिक गये। चारो ओर देना ही देना है, फिर भी वह किसीकी सहायता नहीं लेना चाहता।

विरजा—तुमसे क्या कहूं अपना दूध पिलाकर मैने उसे पाला है। वह मेरे कलेजेका टुकड़ा है। उसपर भला गुस्सा किये रह सकती हूं? यह घर मुझे खानेको दौड़ता है। ऐसा जान पड़ता है कि मानो मैं मसानमे वैठी हूं। क्या कहूं, मेरे पास बैठे विना शैलेनका ग्रास नहीं उतरता था। वही मेरा शैलेन अब बिगाना हुआ! छोटी बहू मेरा आँचल पकड़े पकड़े घूमती थी। गुस्सेमें आकर मै कह बैठी थी कि तेरा मुंह न देखूंगी, काशीजीसे लौटने पर मैने उन्हे न देख पाया। क्या कहूं, मेरा कलेजा कटा जा रहा है। निताई, तुम फिर एक बार जाओ।

निताई—मै कल ही जाऊँगा

विरजा—और मॅझले जनेसे कहना कि, मै औरत हूं, मेरे सिर पर इस तरह सारा बोझ डाल कर क्या पराये घर जा वैठना अच्छा है?

निताई—पराया घर कैसा भाभी? मुझे क्या पराया समझती हो? बड़े भैया किस नजरसे देखते थे यह तुम जितना जानती हो उतना और कोई नहीं जानता। वह सब बाते क्या भूल गयी?

विरजा—नहीं—भूली नहीं। क्यों नहीं भूली यह भी नहीं जानती। आठ वर्षकी उमरमे मैं इस घरमे आयी थी, तब मुझे किसी बातका शऊर नहीं था। मुझे आदमी बना गृहस्थीका भार मुझपर डालकर सास, ससुर स्वर्ग सिधार गये। जायदाद हाथसे निकल गयी थी, पर राधावल्लभजीकी कृपासे फिर मिल गयी। तब भी देखा अब भी देख रही हूं।

(उपेन्द्रका प्रवेश।)

उपेन्द्र—बड़ी अच्छी खबर लाया हूं, — बड़ी अच्छी खबर लाया हूं। बड़ी भाभी मुँह मीठा कराओ—मुँह मीठा कराओ। आँखे फाड़फाड़ कर क्या देख रही हो? समझती हो — मै पागल हूं? मेडिकल बोर्डके बारह साहब डाक्टरोंने सार्टिफिकेट दे दिया है कि मैं पागल नही हूं। अब तुम्हारा नीरद मुझे पागल नहीं बता सकता।

निताई—तुम फिर यहाँ दौड़ आये? डाक्टरोंका तो कहना है कि तुम्हारा Heart weak (कलेजा कमजोर) है—किसी तरहकी उत्तेजना, बोलना चालना अच्छा नहीं है।

उपेन्द्र—चुप रहो—लेकचरबाजी करना अदालतमें जाकर।

विरजा—ठंढे हो—ठंढे हो। बात क्या है, कहो भी तो?

उपेन्द्र—बड़ी खुशखबरी है—बड़ी खुशखबरी है। तुम्हारा कुल उजागर नीरद—

विरजा—ठंढे हो —बैठ जाओ—जरा दम लो। नीरदने फिर क्या किया ?

उपेन्द्र—सपूतराम जालसाजी कर हवालात गये है।

विरजा—है ! यह क्या सुनती हूं !

निताई—तुमने यह बात किससे सुनी ?

उपेन्द्र—मुहरिरसे। वह बोला कि हाकिमने समय नहीं दिया। फौजदारी सपुर्द कर दिया। जमानत माँगनेपर कोई जामिन नहीं खड़ा हुआ। हवालात भेज दिया गया। इस घरानेके लड़केकी जमानत देनेको कोई तैयार नहीं हुआ। पापका फल हाथो हाथ मिलता है।

(उपेन्द्रका कँपना, विरजाका शीघ्रतासे पंखा ले कर झलना)

पखा क्या झल रही हो ? मरूँगा नहीं—नीरदकी फाँसी देखे बिना नही मरूँगा !

निताई—जालसाजी करनेपर फाँसी होती है, यह तुमसे किस वकीलने कहा ?

उपेन्द्र—महाराज नन्दकुमारको हुई थी— नीरदको भी होगी। कंगाल हो गया हूं, नहीं तो कालीजीको आज भेंट चढ़ाता। निताई, चल कालीघाट चले।

विरजा—ठंढे हो—ठंढे हो !

उपेन्द्र—पंखा झल रही हो—माथा ठंढा करोगी ? तुम्हारा बस यही करते जनम बीता। अब भी तुम्हें समझ न आयी, अब भी दूसरोंके लिये हायहाय किये जा रही हो !

मरे बिना स्वभाव नहीं जाता। गृहस्थी बनाओगी? समझती हो जैसा था वैसा ही हो जायगा? तुम्हें मौत नहीं आती? तुम कब मरोगी?

विरजा—तुम्हारे मुँहमे घीशक्कर पड़े। तुम अभी मुझे पहुचा आओ! अब मुझसे सहा नही जाता। हा भगवान!

निताई—भाभी, देखता हूं, इस पागलकी तरह तुमपर भी पागलपन सवार हुआ है।

उपेन्द्र—चुप स्टुपिड, तू ही न अपने साथ मुझे मेडिकेल बोर्डमे ले गया था!

विरजा—निताई बाबू क्या होगा? मुझे ले चलो, मैं जामिन होकर लड़केको छुड़ा लाऊँ।

निताई—भाभी, तुम कहती थी न अब मैं किसीका मुंह न देखूंगी।

विरजा—क्या करूँ भाई, मेरे ससुरके कुलकी नामधराई होगी। तुम ऐसा करो जिसमे वह जमानतपर छूट आवे।

उपेन्द्र—क्या कहा, जमानतपर छुड़ाओगी? मार डालूंगा—बोटी बोटी कर गंगामें फेंक दूंगा। निताईका खून करूंगा, तुम्हार खून करूंगा, उस सत्यानाशन मँझली बहूका करूंगा। खबरदार! खून हो जायगा! मनमें बड़ी बड़ी लालसाएं थीं भैयाके नाम धर्मार्थ औषधालय खोलूंगा, भाभीके नाम धर्म-शाला बनवाऊँगा, यह करूँगा वह करूँगा! उस समय पागल था अब अच्छा हो गया हूं। भाईको कङ्गाल बनानेके

लिये नीरदचन्द्रको जायदाद दी ! अब तो बस यही अरमान दिलमें है नीरदको फाँसीपर चढ़ते देखूँ और—शैलेनको एकबार देखूँ ! ओह ! कैसी ममता है ! कैसी ममता है ! अपने हाथों लड़केका खून करते नहीं बनता! छोटा भाई मारनेको लाठी उठावे तोभी उसे भूलते नहीं बनता !

विरजा—तुम चिल्लाओ मत, मँझली बहू अभी सुन पायेगी।

उपेन्द्र—आहा लक्ष्मी है ! कुल लक्ष्मी है ! इस छोटेसे परिवारमें उसे सुबीता नहीं हुआ—किसी राजघरानेमें जाती तो रणचण्डिका होकर नाचती ! संहाररूपिणी ! बिना एक बलि लिये शान्त नहीं होनेकी। बड़ी नींद आ रही है, जाकर जरा सोऊँ ।

(उपेन्द्रका प्रस्थान)

विरजा—प्रभु, तुमने यह क्या किया ! मेरा हराभरा घर उजाड़ दिया ! निताई, तुम क्या देख रहे हो, मेरे नीरदको जाकर छुड़ा लाओ। मँझले जनेको मैं तुम्हारे घर नहीं जाने दूँगी। मेरे बिना कोई उन्हें ठण्ढा नहीं रख सकेगा। आखिर क्या सचमुच वे पागल होंगे। जब जब उनको धक्का लगता है उनकी यही दशा हो जाती है। क्यों निताई बाबू, हवालातमें अच्छी तरह खानेको तो देते हैं न ?

निताई—भला;खानेको नहीं देते होंगे !

विरजा—तुम क्या इस बारेमें कुछ नहीं जानते थे ?

निताई—आज मैं कचहरी गया ही नही। सुना था कि पन्द्रह हजारपर मामला निपटनेकी बातचीत हो रही है। यह बात तुमसे कहनेवाला था।

विरजा—जाओ, जितने रुपये लगे, जैसे बने नीरद्को छुड़ा लाओ। नहीं तो मै तुमसे बोलूंगी नहीं।

(निताई जाना चाहता है)

देखो, नीरद्को छुड़ा ला कर मुझे यहांसे कहीं भेज दो। मै तीर्थोंमे घूमूंगी। अब मुझसे सहा नही जाता।

(फूलीका प्रवेश) (निताईका प्रस्थान)

फूली—बड़ी माँ, तुम तीर्थ करने जाओगी?

विरजा—बेटी क्या करूँ, अब इस घरमे मेरे लिये जगह नही है। पापने घरको छा लिया है।

फूली—बड़ी माँ, किस तीर्थको जाओगी? मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।

विरजा—तू अभी लड़की है, कहाँ जायगी? तेरी उमर क्या तीर्थ करनेकी है?

फूली—वाह! ऐसी अनोखी बात तो मैंने कहीं नहीं सुनी। माँ, धर्मकर्ममे उमरकी कैद कैसी? कम उमर देख कर क्या यमदूत मुझे छोड़ देंगे?

विरजा—चल पगली, यह क्या बक रही है?

फूली—बड़ी माँ, तीर्थ मुझे बड़े अच्छे लगते है, रोज मैं उन सबमें घूमा करती हूं।

विरजा—बातें ठीक कहती है पर बीच बीचमें पागलपन कर बैठती है। क्योंरी कलकत्ते में कौनसा तीर्थ है?

फूली—माँ, तुम गयी नहीं हो—कितनेही तीर्थ है। उनमे एक सती तीर्थ है। कल जब तुम गंगाजी जाओगी, तुम्हें वहाँ ले चलूंगी।

विरजा—मैंने तो सुना नहीं कि पास कोई तीर्थ है। अच्छा, कल तू आकर मुझे ले चलियो। अब मै जाती हूं—देखूँ मँझले जने कहाँ है? कहीं मँझली बहू उनका सिर तो नही खपा रही है।

(प्रस्थान)

फूली—(आपही आप) जी चाहता है, कि कहीं चल दूं। बड़ी माँ अगर तीर्थ करने जायंगी तो साथ चली जाऊँगी। मन्मथ बाबूने "कूएँ के मेढ़क और समुद्रकी कहानी" सुनाई थी। अब छोटेसे कूएं में मेरी समाई नहीं है, प्राण मानो समुद्रमे जाकर मिलना चाहता है।

(मन्मथका प्रवेश)

मन्मथ बाबू, बड़ी माँ बोली कि अभी तेरी धर्मकम करनेकी उमर नहीं है। किस उमरमें धर्मकर्म करना चाहिये मन्मथ बाबू?

मन्मथ—क्यों तू तो यह सब धर्मका ही काम कर रही है। दूसरेका उपकार करती फिरती है। लोग तेरी कितनी बड़ाई करते हैं। तू तो [illegible] है।

फूली—सुखी तो हूं पर—

मन्मथ—फिर पर क्या ?

फूली—तुमसे झूठ न बोलूंगी मन्मथ बाबू ! दूसरेका काम करते हुए बड़ा सुख मिलता है, पर कभी कभी मन कहता है मानो इसी सुखके लिये दूसरेका काम करती फिरती हूं—दूसरेका उपकार मानो इसीलिये करती हूं कि पुण्य होगा। सुख मिलेगा—पुण्य होगा—यह सब तो रोजगार है मन्मथ बाबू ! माके पास रहती तो गंदा रोजगार सीखती तुम्हारे पास रहकर ऐसा काम सीख रही हूं जो गौरवका है। मन्मथ बाबू, इससे बढ़कर क्या और कोई काम नहीं है ? अगर हो तो मुझे बताओ ?

मन्मथ—है—सीख सकेगी ?

फूली—तुम बताओ तो मैं सीखनेकी चेष्टा करूंगी।

मन्मथ—तुझे कैसे बताऊं ? मैंने सुना है, किताबोंमे पढ़ा है अभीतक मैं समझ नही सका, तूने अभी कहा कि दूसरेकी भलाई करती करती है इसी लिये कि सुख मिलेगा—पुण्य होगा ? जब इस सुखकी लालसा तेरे मनमे न रहेगी—पुण्य लाभकी आशा त्याग सकेगी तब फिर यह 'पर' नहीं रहेगा।

फूली—कहो कहो मन्मथ बाबू, क्या कह रहे हो—

मन्मथ—कहा तो—अभी तेरी समझमे बात नही आवेगी। सुन, तू कुलमें—वेश्याके घर जन्मी है, तूने सुना है कि

व्यभिचारिणीका उद्धार नहीं है, इसीसे तू कुमार्गपर न सुमार्गपर चलो। लोगोका उपकार करनेसे पुण्य होता स्वर्गकी प्राप्ति होती है—और क्या क्या होता है, इसीसे तू लोकहित करती है पर वेश्याके घर हजार वार क्यो न जन्म लूं—विष्ठाका कीड़ा क्यो न होऊँ तोभी लोकहित करूँगी—इस भावसे जब तू लोकहित कर सकेगी तब फिर 'पर' न रहेगा। इसीका नाम है आत्मत्याग-दूसरेके लिये अपनेको बलि देना—इससे बढ़ कर कोई काम नहीं समझी ?

फूली—आत्मत्याग—अपनेको बलि देना—समझ सकूँगी या नहीं पीछे बताऊँगी।

[एक ओर फूली और दूसरी ओर मन्मथका प्रस्थान।

तीसरा दृश्य

शैलेन्द्रका तालतलेका मकान
शैलेन्द्र और सरोजिनी

शैलेन्द्र—सरोजिनी, मैं यहांसे एक और ही जगह जाऊंगा, तुम मेरे साथ चलोगी ?

सरोजिनी—तुम मुझे जहां ले चलोगे चलूंगी।

शैलेन्द्र—डरोगी तो नहीं ?

सरो—तुम्हारे साथ जानेमे डर काहेका ? तुम्हारे साथ यमपुरी जानेमे भी डर नहीं है। डरनेकी बात क्यों कह कर रहे हो ? कहां जाओगे ?

शैलेन्द्र—कहाँ जाऊँगा ? वह बड़ा दिव्य स्थान है। वहां न तो पेटकी चिन्ता करनी होगी न पावनेदारोकी जलीकटी सुननी होगी। यहाँ सोच फिकरके मारे पलकें नहीं पड़ती, वहाँ जानेपर मजेसे सोयेंगे—ऐसा सोयेंगे कि कोई जगा नही सकेगा ?

सरो—तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हारी बातें सुनकर मेरा कलेजा दहल रहा है। तुम्हारे हाथमें वह क्या है ?

शैलेन्द्र—यही उस महानिद्राकी महौषधि है। दीन दुखियोका ऐसा मित्र कोई नहीं है।

सरो—ऐं ! तुमने क्या विष खाना विचारा है ?

शैलेन्द्र—विष क्या है ? दुःखका समुद्र मंथन कर यह अमृत निकाला गया है। दुखियोको इससे बढ़कर शान्ति देनेवाला और कोई नहीं है। जिसके धन है, मान है, सुख है, आशा है, वह विष देखकर काँप उठेगा—हम क्यो डरें ? इतनी यंत्रणामे भी तुम मरनेसे डरती हो ?

सरो०—मरनेसे डरती हू ? तुम्हारे चरणोंपर सिर रखकर मरना तो मेरे लिये बड़े सौभाग्यकी बात है। तुम दो—मैं खुशीसे खाती हूं। तुम जैसे कहो मै वैसे ही मरती हूं। बात नहीं बनाती—सच कहती हूं। तुमने क्या सुना

नहीं कि सती स्त्रियाँ हँसती हँसती दहकती चितामें कूद कर जल मरती थीं? मुझे डर है तो तुम्हारे लिये, जानते नहीं कि जो आत्म-हत्या करता है उसे नरक होता है?

नैपथ्यमें—शैलेन बाबू घरमे है? चावलके रुपयोंके लिये आया हूं। दीजियेगा या नही, साफ साफ कहिये। बाबू घरमे है, आवाज सुन पांयी है। यह क्या भलमनसी है? बरस भरसे रसद पहुचाता रहा, अब बाबू मुँह छिपाते फिर रहे है। अच्छे बेईमानसे काम पड़ा।

शैलेन्द्र—सुन रही हो? नरककी यातना क्या इससे बढ़कर है? जिस आगमे यहाँ जल रहा हूं वैसी आग वहाँ है? तुम नहीं खा सकती मत खाओ, मैं खाता हूं।

सरो—(शैलेन्द्रका हाथ पकड़कर विष खानेसे रोककर), तुम्हें क्या कह कर समझाऊं? सुनो मैं सती हूं, मेरी बात झूठ नहीं होनेकी। तुमने जब इतना सहा तो दो चार दिन और धीरज धरो। भगवान जरूर कोई उपाय करेंगे।

शैलेन—क्या कहा, भगवान उपाय करेंगे? अब भी धीरज धरनेको कहती हो? भगवान किसका उपाय कर रहे हैं? कितने ही लखपती राहके भिखारी हो रहे हैं, कितने ही करोड़पतियोंके लड़के अनाथ होकर इधर उधर मारे मारे फिर रहे हैं, तुम्हारे जैसी भले घरकी कितनी ही बहुबेटियाँ पेटके लिये वेश्यावृत्ति कर रही है! इनमें किसका क्या

उपाय हो रहा है जो मेरा होगा ? अपना उपाय आप ही करना होगा। तुम्हारे कहनेसे मैंने बहुत धीरज धरा, अब मै तुम्हारी बातोंमे नही आनेका। हाथ छोड़ दो—भगवानके भरोसे काम नहीं चलनेका! उसको दया नहीं है, बल्कि शैतानको दया है भी जिसने जख्मी दिलकी यह दवा दी। हाथ छोड़ दो—मेरे साथ चलना हो चलो, नहीं तो अपना रास्ता लो—मैंने अपना रास्ता ठीक कर लिया है।

सरो—इसके सिवा क्या और कोई रास्ता नहीं है ?

शैलेन्द्र—कहाँ है ? बड़े आदमीका लड़का, बराबर गुलछर्रे उड़ाता रहा। पढ़ने लिखनेमे ध्यान दिया नहीं, कामकाज जानता नहीं। बड़ी भाभीने चार पाँच वार निताई भैयाको भेजा, पर मारे ऐंठनके गया नही। मन्मथने देना चुकाना चाहा, उसे ऐंड़ीबैंड़ी सुनाकर विदा किया। फूली आती है तो उसे दुरदुरा देता हूं जिसमे कहीं वह मेरी बाते जाकर बड़ी भाभीसे न कहे। तुम्हारे नैहरसे तीन चार वार आदमी तुम्हे लेने आये, तुम गयी नहीं; अब क्या कोई दूसरा रास्ता है ? सोचा कि मकान बेचकर लोगोका देना चुका दूं, शिवूके पैर तक पड़ा, पर उसने एक न सुनी। अदालतमे उसने मुझे जालसाज कहा। मनुष्यको भविष्यत्‌की आशा रहती है, इसी आशापर वह जीवित रहता है। मुझे तो वह आशा भी नहीं है। बड़ी

भाभीकी सम्पत्तिका अपना उत्तराधिकार मैं शिबू वकीलके नाम लिख आया हूं। सब रास्ते बन्द हो गये। अब बस यही एक रास्ता खुला है। मेरे साथ चलना चाहती हो तो चलो, नहीं तो मुझे बाधा मत दो।

नैपथ्यमें—शैलेन बाबू डरो मत, तकादा करने नहीं आया हू, दरवाजा खोलो—दो बातें करो।

शैलेन—तुम्हे शौक हो तो यह सब सुनो—मेरा हाथ छोड़ दो। सोचा था तुम्हे अकेली न छोड़ जाऊँगा—मँझधारमें छोड़ कर नहीं भागूँगा; इसीसे इतना कुछ समझा रहा था, पर तुम समझी नहीं। मेरा हाथ छोड़ दो। तुमपर कभी हाथ नही उठाया, साँपसे मत खेलो—कहता हूं, हाथ छोड़ दो—

सरो—तुम मारो, काटो, जो जीमें आवे सो करो, मैं तुम्हे यह महापाप नहीं करने दूंगी। तुम नरकमे डूबने जा रहे हो, मैं खडी देखा करूँ? फिर मैं तुम्हारी स्त्री कैसी?

नैपथ्यमें—दरवाजा तोड़कर घुस जाओ।

(दरवाजा तोड़कर शिबू वकील, अदालतके बेलिफ, चपरासी आदिका प्रवेश)

शिबू—सब कमरोमें ताले लगा दो—कोई चीज न ले जाने देना। इसी हालतमें निकाल बाहर करो। (सरोजिनीको देख-कर आपही आप) अहा! कैसा सुन्दर रूप है! कैसी गजबकी आँखें हैं!

(सरोजिनीका शैलेन्द्र के हाथसे अनजाने जहरकी पुड़िया लेकर अन्दर आना)

शैलेन्द्र—क्यों—कहाँ गयी? नरकसे डर रही थी न? यह देखो, सब नरकके दूत है! और वह देखो, साक्षात् नरकका राजा है!

शिवू—बेलिफ, जिस कमरेमे वह औरत घुसी है, पहले उसमे ताला लगाओ।

(सरोजिनीका बाहर आना और बेलिफका ताला लगाना)

शैलेन्द्र—अब समझी विष क्यों खाना चाहता था? चलो, अब गङ्गामे डूब मरें।

शिवू—क्यो शैलेन बाबू, विष क्यो खाइयेगा? गंगामे क्यो डूबियेगा? ऐसी स्त्रीके रहते तुम्हे चिन्ता किस बातकी है?

शैलेन्द्र—कमीना कहीका! (शिवू वकीलको लात मारना)

शिवू—पकड़ो सालेको। (चपरासियोका शैलेन्द्रको पकड़ना)

१ला चपरासी—मारपीट करेगा? (शैलेन्द्रको मारना)

सरो—अजी, मारो मत—मारो मत, तुम लोगोके पैरो पड़ती हूं। छोड़ दो—हम चले जाते हैं।

शिवू—क्यो, चली क्यो जाओगी? तुम्हारे हुक्मकी देर है, मै ही सब छोड़कर चला जाता हूं।

सरो—हे भगवान, क्यो नही स्वामीको बात मानकर मैंने उस समय विष खा लिया? परपुरुष मुझे बुरी नजरसे देख रहा है। धरती माता तू फट जा, मै तुझमे समा जाऊँ। प्रभु, तुम्हारे मनमें यही था!

शिवू—घर क्या चीज है सुन्दरी, तुम्हारे लिये मैं अपनी जान तक न्यौछावर कर सकता हूं।

शैलेन्द्र—छोड़ दो—छोड़ दो—ओह ! जान नहीं निकलती !

(चपरासियोंका शैलेन्द्रको मारना)

सरो—कोई है—मारे डालते है—मारे डालते हैं ! कुलस्त्रीपर अत्याचार—रक्षा करो—रक्षा करो—क्या कोई नही है ? हा भगवान !—

(विरजा और पीछे पीछे फूलीका प्रवेश)

विरजा—शैलेन—शैलेन ! तुमलोग कौन हो ? मेरे लालको क्यो पकड़ा है ? छोड़ दो—छोड़ दो—

१ला चपरासी—(शैलेन्द्रको छोड़कर) माई, छुड़वा लो—छुड़वा लो ! रुपये लाओ तब तो छोड़ेंगे।

विरजा—रुपये चाहिये, मेरा सर्वस्व ले लो—मेरा सर्वस्व ले लो। अजी, तुमलोग जानते नहीं हो—यह राजाका लड़का है, भाग्यके फेरसे इसकी यह दशा हुई ! अहः तुमलोगोंने इसे मारा है ! तुमलोगोंको क्या दयामाया नही है ? शैलेन—शैलेन, तू मुझसे रूठकर जान देने बैठा है ? कहो कितना रुपया चाहिये, मैं अपना सर्वस्व देती हूं।

शिवू—ये धन्नासेठकी नतनी आयी हैं।—निकाल बाहर करो इस बुढ़ियाको। (सरोजिनीको विरजाके पास जाती देखकर) सुन्दरी, तुम कहाँ जाती हो ? (आँचल पकड़ना चाहता है)

फूली—खबरदार नरकके कुत्ते ! अब अगर एक कदम

भी आगे बढ़ा तो बस यह छुरा ही तेरे कलेजेमें भोंक दूँगी। (छुरा दिखाना)

शिवू—अरे इस शैतानने तो छुरा निकाल लिया !

फूली—शिवू, तू क्या मुझे पहचानता नहीं है ? तुझसे खूंखार जानवरोंके पास जब जाना पड़ता है तब यही मेरा सहायक होता है।

(निताई वकीलका प्रवेश)

निताई—बड़ी भाभी—फूली—शिवू ! यह सब क्या मामला है ?

विरजा—निताई, तुम खूब मौकेपर आये—इनका जो कुछ पावना हो अभी चुका दो।

निताई—क्या शिवू ? बेलिफ, ये दस रुपये लो, तुमलोग जलपान करना। शिवू, इन्हें बाहर ले जाकर खड़े हो, मैं आता हूं। (बेलिफ और चपरासियोंका प्रस्थान)

शिवू—मैं मकान 'सीज' (Siege-कुर्क) करने आया हूं। बिना रुपये मिले मैं नहीं जावेका। ये सब यहाँ आकर मुझे बाधा दे रही है—इनका ऐसा करना कानूनके खिलाफ है। मैं इनपर नालिश करूंगा।

फूली—और यह पामर कुलस्त्रीपर अत्याचार करने चला था। आप इसे पुलिसके हवाले कीजिये।

शिवू—झूठ—बिलकुल झूठ, साक्षी कौन है ?

फूली—साक्षी धर्म है ! साक्षी तेरी अन्तरात्मा है ! साक्षी तेरे ये सब आदमी है !

१ला चपरासी—(प्रवेशकर) हाँ हाँ, उधर बढ़े तो थे उसकी इज्जत उतारने चले थे।

विरजा—निताई बाबू, इसे यों मत छोड़ो, गिरफ्तार कराओ। जैसे बने इसे इसकी करनीका फल चखाओ।

निताई—भाभी, तुम्हें कुछ कहना न होगा—जो करना है, मैं कर लूँगो। (शिवूसे) शिवू, तुमसे समझ लूँगा। अभी सामनेसे चले जाओ।

(शिवू वकील और पीछे पीछे चपरासियोंका प्रस्थान)

फूली—बड़ी माँ, मैं जाती हूं, मुझे काम है। (प्रस्थान)

विरजा—फूली, तूने सच कहा था—जहां मेरा शैलेन, जहाँ मेरी छोटी बहू है वह मेरे लिये तीर्थसे भी बढ़कर है।

निताई—भाभी, तुम इन लोगोंको लेकर घर जाओ, यहाँका जो कुछ करना है मै करता हूं। (प्रस्थान)

विरजा—बेटी चल। अपनी लक्ष्मीको घर ले जाऊँ।

सरो—जीजी, मै तो तुम्हारी दासी हूं, उनसे पूछो।

विरजा—शैलेनसे ? जब मै आयी हूं, कान पकड़कर उसे ले जाऊँगी। (शैलेन्द्रसे) नीरदको घर बेच दिया इससे तू ऐंठनके मारे गया नहीं। अब वह घर तो मैंने खरीद लिया है। मुझसे क्यो रूठा है? क्योंरे शैलेन, मैंने तेरा ऐसा क्या बिगाड़ा है जो तू मुझे इस तरह सता रहा है?

शैलेन्द्र—बड़ी भाभी, मुझे माफ करो।

वरजा—चल, घर चल। यहाँका तेरा जो कुछ देना है निताई वह सब चुका देगा।

शैलेन्द्र—पर बड़ी भाभी, तुम्हारा ऋण कैसे चुकेगा? माने जन्म दिया, तुमने अपना दूध पिलाकर इतना बड़ा किया। मैं कृतघ्न हूं, जो तुम्हें मैंने इतना क्लेश दिया। मुझे माफ करो। मेरी मति मारी गयी थी—मैं पामर हूं।

विरजा—आसीस देती हूं, तेरे बालबच्चे हो, तब तुझे उनके पालनेका कष्ट मालूम होगा।

(सबका प्रस्थान)

चौथा दृश्य

गंगातट

(नीरदका प्रवेश)

नीरद—दुनिया फिरंट हो गयी! सास हरामजादीके पैर पकड़कर रोयाधोया, मामला निपटानेके लिये उसने रुपये नहीं दिये। मैजिस्ट्रेटने दौरे सपुर्द कर दिया। अदालतमें कोई जामिन नही खड़ा हुआ! इन सब अनर्थोंकी जड मन्मथ है। उसीके जाल फरेबसे जाली हैण्डनोटोंकी सृष्टि हुई! पग पग पर वह मेरे लिये काँटा हुआ! अब जीना किस

लिये ? जेल जानेके लिये ? इस घरानेमें जो बात कभी नहीं हुई वही होगी ? कभी नहीं, कभी नहीं। जमानतपर छुड़ाया गया—इसमें भी शायद मन्मथकी कोई चाल होगी। जिधर देखो उधर ही मन्मथ ! उसीकी खोजमें हूं पर मिल नहीं रहा है। कल जाकर लौट आया—आज देखूँ वह मिलता है या नहीं। (प्रस्थान)

(फूलीका प्रवेश)

फूली—चल—कहाँ चलता है। छायाकी तरह मैं तेरा पीछा कर रही हूं। शेरकी तरह शिकारकी घातमे फिर रहा है। तेरे अन्दरकी तस्वीर तेरी आँखोमें दिखाई दे रही है। चल—कहाँ चलता है— (प्रस्थान)

(शरत् और हीरू घोषलका प्रवेश)

शरत्—कहाँ है तुम्हारी वह सोनेकी चिड़िया ?

हीरू—आवेगी—आवेगी। भले घरकी लड़की है, सन्ध्याके पहले क्या घरसे निकल सकती हैं ? जरा अँधियारा हो जाय तब तो आवेगी ! देखो, तुम यह मूँछें लगा लो। मै नाव ठीक कर आता हूं। उस पार ले जाकर उससे किसी तरह गहने-का बक्स हथिया हम लोग खसक जायँगे ! बाद लिलुएसे रेलपर सवार हो एकदम वर्द्धवान ! पर देखो, हिस्सा वही अद्धमअद्धा रहा ! गृहस्थकी लड़की है, कभी घरसे निकली नहीं, हमलोगोंका पता नही लगा सकेगी। सुनो, तुम्हारा नाम प्रेमचन्द और मेरा नाम शीतल रहा !

शरत्—देखो, मूँछमाछ लगानेकी जरूरत नहीं। बिन्दीके घरमें एक कमरा खाली है, चलो उसे वहीं ले चलकर टिका दें। मारा मारा फिर रहा हूं, एक अड्डा हो जायगा।

हीरू—क्या खूब! तुम तो उसे बिन्दीके घर ले जाकर टिका दोगे, जरूरत पड़नेपर एक एक कर उसके गहने बेचोगे, मौज उड़ाओगे, और मुझे क्या मिलेगा? नीरद और शैलेन जबसे खुक्ख हुए हैं तबसे मैंने एक पैसेका भी मुंह नहीं देखा! बेतरह देनदार हो गया हूं। रास्ता चलना मुश्किल हो गया है! हजार दो हजार बिना काम नहीं चलेगा!

शरत्—देखो, यह बडे झंझटका काम है।

हीरू—तुम्हें डर हो तो चल दो, मै दूसरेको ठीक कर लूंगा।

शरत् (आप ही आप) अच्छा बचाजी, वह आवे तो सही, फिर तुमसे समझ लूँगा। (प्रकाश) अच्छा यार, चार आने पैसे तो निकालो, गाँठमें एक पैसा भी नही है, झटसे दम लगा आऊँ! तुम नाव ठीक करो। पर यार, तुमने तो मूँछें लगायी नही?

हीरू—उसने मुझे इसी शकलमें देखा है, दोनोको नये आदमी देख वह कब जाने लगी? खैर, सब ठीक हो जायगा—सब ठीक हो जायगा, पर देखो हिस्सा वही अद्धमअद्धा रहा!

(दोनोंका दोनों ओर प्रस्थान)

(हाथमें बक्स लिये कुमुदिनीका प्रवेश)

कुमुद—मैंने न जाने कितनोंको रुलाया, कितनोको ठगा, कितनी

हीं सतियोंको कलपाया, माको घरसे निकाल दिया। वह रास्तेमें तड़प तड़पकर मर गयी। मैं इसका फल न भोगूंगी तो कौन भोगेगा? कैसी गन्दी बीमारी है, अपने आप पर ही घिन आती है, दूसरेका तो कहना ही क्या? सब बरदाश्त कर सकती हूं, पर शरत और हीरूका मुझे देखते ही दुरदुराना बरदाश्त नही कर सकती। जिस तरह सारा शरीर रात दिन जल रहा है उसी तरह जी भी जल रहा है। काली नागिन क्या अपने विषसे इसी तरह जला करती है? दोनो मिलकर मेरा मालमता चट कर गये, मुझे राहकी भिखारिन बना दिया, अब पास जानेपर नफरत करते है—दुरदुराते हैं। यह जलन नही सही जाती। जब दोनोसे बदला ले लूंगी तब यह जलन कुछ मिटेगी। हे पापियोको तारनेवाली! तेरे किनारे खड़ी होकर मै बदला लेनेकी सोच रही हूं, मैया !वर दे जिसमे मेरे मनकी पूरी हो। इन शैतानोको इनकी करनीका फल चखाकर तेरी गोदमे सोकर सारी जलन मिटाऊँगी। आशा क्या पूरी न होगी?—होगी, मन कहता है, होगी। एक साथ ही दोनोको फँसाऊँगी। यह बक्स ही मेरा जाल है। इसमे और एक दो पत्थर डाल दूं। पर अभी वैसा भारी नहीं हुआ है। गहनागाँठी तो तुम लोगोने छोड़ा नहीं, सब मूँस लिया। अब ये ईंटपत्थरके टुकड़े लो। मुझे आप ही हंसी आ रही है। गृहस्थकी लड़की हूं—

पतिकी निठुराईसे घरसे भाग रही हूं ! लो एक तो आ रहा है। मुँह ढांप कर बैठ जाती हूं ! पाजीने मूँछें लगायी है। (ओढ़नीसे मुँह ढाँककर कुलस्त्रियोंके समान बैठना)

(शरतका प्रवेश)

शरत्—(आप ही आप) नहीं, उसे उस पार नही ले जाने दूँगा। विन्दीके घर ले जाकर टिका दूँगा। हीरूने उसे फँसाया है, उसे कुछ दे दूँगा।

(दूसरी ओरसे हीरू घोषालका प्रवेश)

हीरू—लो, प्रेमचन्द बाबू तो आ गये। (पास जाकर) क्यों मेरी बात सच है न ? मैने तो कहा ही था कि वह बक्स लिये आवेगी। देखो, अद्धमअद्धा होना चाहिये। (कुमुदिनीसे) अजी, ये ही प्रेमचन्द बाबू है। ये बडे भलेमानस है। अब तुम्हारे दिन खूब चैनसे कटेंगे। इन्होंने तुम्हारे लिये उस-पार मकान ठीक किया है। वहाँ गृहस्थकी तरह रहना।

शरत्—(विकृत स्वरसे) शीतल बाबू, इनका नाम क्या है ?

कुमुद—(विकृत स्वरसे) मेरा नाम चरणदासी है। मुझे लौंडी बनाकर भी रखियेगा तो रहूंगी।

हीरू—क्या, प्रेमचन्दबाबू, ये कैसी तबियतदार हैं ? सचमुच तुम्हारा नाम चरणदासी है ?

कुमुद—(विकृत स्वरसे)—नहीं मेरा नाम तो लक्ष्मी है

शरत्—(विकृत स्वरसे)—शीतल बाबू, ये यह क्या कह रही है मै तो इन्हे आंखोमें रखूंगा।

हीरू—देखा ! तुम जैसे रसिक और प्रेमी जीव हो ये भी वैसी ही है। नावपर गहरी छनेगी। चलिये प्रेमचन्द बाबू, नाव पर चला जाय।

कुमुद—(विकृत स्वरसे) प्रेमचन्द बाबू, मैं भलेघरकी बहू हूं, यह रास्ता कैसा है, मुझे मालूम नहीं। बहुत सतायी जानेपर घरसे निकली हूं। मैं आपकी शरणमें हूं, देखिये, मुझ अबलाको मँझधारमे न छोड़ दीजियेगा।

(बक्स रखकर पैर पकड़ना)

हीरू—(आप ही आप) बस, यही मौका बक्स हथियानेका है। (बक्स उठाकर) अरे यह बक्स तो बड़ा भारी है।

शरत्—राम राम ! पैर छोड़ दीजिये। पैर तो मुझे पकड़ना चाहिये।

हीरू—चलो अच्छा हुआ, शुरूमें ही जोड़ी मिल गयी। चलिये, अब नावपर चले। हमलोगोको देखकर लोग जमा हो जायँगे।

शरत्—(विकृत स्वरसे) देखिये, शीतलबाबू, मैंने निश्चय किया है कि इन्हे उस पार न ले जाकर इसी पार रखूं। घर ठीक कर लिया है। दोनों जने रहेंगे। तुम्हारी क्या राय है ?

कुमुद—(विकृत स्वरसे) मेरी क्या राय है ? मुझे जहाँ रखियेग वहीं रहूंगी।

हीरू—भला ऐसा हो सकता है !—जो बात तय हो चुकी है यह उसके खिलाफ है। तुम चली आओ—

शरत्—अच्छा देखता हूं न तू कैसे ले जाता है ? छोड़ साले हाथ।

(एक हाथसे कुमुदिनीको पकड़ना और दूसरेसे हीरूको मारना'

हीरू—हाथ छोड़ दे—छोड़ेगा नहीं साले ? (शरत्को बक्ससे मारना)।

शरत्—चलोजी मेरे साथ—यह साला चोर है।

हीरू—मेरे साथ चलो—यह साला उचक्का है।

कुमुद—सिपाही, सिपाही, ये लोग मेरा बक्स छीन रहे है !

हीरू—मुझे बुत्ता देकर गहने लेगा ? ले बच्चू गहने।

(गंगामें सदूकका फेक देना और खीचतानमें कुमुदिनीका असली रूप प्रकट होना)

दोनो—है—यह क्या—यह तो कुमुद है।

कुमुद—हाँ हाँ—कुमुद हूं, पहचाना बेईमानो ! सिपाही, इन दोनोने मेरा बक्स छीन लिया है।

(दो ओरसे दो पुलिस सिपाहियोंका प्रवेश)

१ ला सिपाही—क्योरे गंगाजीमे क्या फेका है ?

कुमुद—सिपाही, इन निगोड़ोंने मुझसे मेरा सन्दूक छीनकर गंगाजीमे फेंक दिया है। यह देखो, इसने नकली मूंछें लगा रखी है ! (मूंछका खींच लेना)

शरत्—रामराम ! सालोंने कोढ़के पीबसे मुंह भर दिया !

हीरू—मेरी देहमे भी लग गया।

शरत्—(आप ही आप) अब क्या हुआ है साले ! इनसे छुटकारा हो लेता तुझे मजा चखाता हूं। सालेने मुझे फंसानेका मनसूबा गांठा है।

१ ला सिपाही—ये दोनों साले बदमाश है ! मूँछें लगाकर आया था । चलो थानेमे ।

कुमुद—सिपाही, ये लोग पुराने उचक्के हैं । भीख माँग-मूँगकर मैंने जो कुछ जमा किया था उसे लेकर मासीके घर जा थी, इन लोगोंने रास्तेमे बक्स छीन गंगाजीमे फेंक दिया । इसने अपना नाम शीतल बताया और इसने प्रेमचन्द ।

१ ला सिपाही—हाँ हाँ, शीतल और प्रेमचन्द दोनो पुराने बदमाश है (दूसरे सिपाहीसे) क्यो भाई ?

२ रा सिपाही । हाँ हां, दोनोका हुलिया है ।

हीरू—अरे कौन साला शीतल है—मेरा नाम तो हीरू घोषाल है ।

कुमुद—लो सुनो, अब यह अपना नाम हीरू घोषाल बताता है । तुम्हारे और भी नाम है ।

२ रा सिपाही—अरे इसके कितने ही नाम हैं—हीरू, पीरू, कालू लालू । यह साला पुराना बदमाश है ।

१ ला सिपाही—और इस प्रेमचन्द्र सालेने एक बार मेरी चपरास छीन ली थी ।

हीरू—अरे, ठहरो ठहरो बात तो सुनो—

२ रा सिपाही—(डंडा मारकर) चल साले थानेमे । वहां सब बात होगी ।

कुमुद—सलाम—सलाम ।

शरत्—क्योरी, तेरे मनमे यहाँ तक थी ? आखिर मुश्के बँधवायी ?

कुमुद—धोखेबाज—बेईमान—शैतान, तेरे मनमे यहाँ तक थी ?

एक अनाथ स्त्रीको कौड़ीका तीन कर दिया ! तुम लोगोंकी बदौलत कितने ही भलेमानसोंके लड़के दाने दानेको मुह-ताज हुए—कितने भले घर उजड़ गये,—कितनी ही अब-लाओंका सत्यानाश हुआ ! जो लोग नीच घृणित वेश्या-ओंको धोखा देते है, जेल क्या नरकमे भी उनके लिये जगह नही। तुम लोग नीच—महा नीच हो— वेश्याओंसे भी गये बीते हो। (सबका प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

मन्मथकी गंगातटस्थ नर्सरी

कुर्सीपर बैठा मन्मथ पढ़ रहा है

(नीरदका प्रवेश)

नीरद—आज बाबू साहब मिले तो सही। दो दिनसे आ आकर लौट जा रहा हूं। हाँ, अकेले कैसे ? गुप्त वृन्दाबनमे सन्नाटा कैसा ? तुम्हारी प्राणवल्लभा —फूली कहाँ है ?

मन्मथ—नीरद भैया तुम्हारा मन बड़ा पापी है। फूलीका नाम जबानपर मत लाओ•नही तो उसे कलङ्क लगेगा।

नीरद—और तुम ऐसे धर्मात्मा हो कि तुम्हारे स्पर्शसे वह सती

सावित्री हो जाती है। क्या कहने हैं! क्यों न हो? तुम साधु हो, परोपकार करते फिरते हो, रास्तेसे लोगोंको उठा लाकर उनकी सेवाटहल करते हो, दीन दरिद्रोंको अन्न देते हो! ठग! धूर्त्त! जालसाज कहींका!

मन्मथ—नीरद भैया, मैंने जालसाजी तो की पर अपने स्वार्थके लिये नहीं। तुम अपने स्वार्थके लिये घर बरबाद कर रहे थे, बड़ी माँ रोती हुई बोलीं—"मन्मथ क्या होगा?" उनकी वह व्याकुलता देख मै आपेमे नहीं रहा। मैंने सोचा था कि तुम्हे किसी तरह मुसीबतमे डालकर मुकद्दमेबाजीसे तुम्हारे घरको बचाऊँगा, इसीसे जाली हैण्ड-नोट बनाये गये थे। बुरे विचारोंको हृदयमे स्थान देना, बुरी सङ्गतमे फिरना कितना क्लेशदायक है यह तुम नहीं समझ सकते। जब कष्ट होता, बड़ी मांके रोनेकी याद आती तो मैं सब भूल जाता।

नीरद—कहे चलो—कहे चलो, मैं ध्यानसे सुन रहा हूं।

मन्मथ—मैंने सोचा था कि मुसीबतमे पड़नेपर तुम बँटवारेवाला मामला उठा लोगे—घर बरबाद होनेसे बच जायगा। पर तुम उस रास्ते गये ही नहीं। फिर भी मैंने शिबू वकीलसे मुहलत लेनेको कहा, पर जजने दी नहीं। मेरी मुराद पुरी नहीं हुई।

नीरद—पर मेरी तो पूरी होगी। तुमने सोचा था, बड़ी माकी जायदाद हाथमें आ गयी है; चाचाको खाना भर दे देनेसे ही

काम बन जायगा, और मेरा सत्यानाश कर सारी जायदादके मालिक बनकर फूलीके साथ मौज उड़ाओगे? निःस्वार्थ हो तो ऐसा हो! शैतान कहीका!

मन्मथ—नीरद भैया, मैंने निश्चय किया है कि अदालतमें जाकर कहूंगा कि मैंने ही तुम्हे ठीक करनेके लिये जाली नोट तुम्हें बेचे थे।

नीरद—क्या कहने है! तेरी ढिठाई देखकर आश्चर्य होता है! अब भी तू मेरे सामने खड़ा होकर बातें बना रहा है? तुझे लज्जा नही आती? तू क्या समझता है कि तेरी बातोंपर मै विश्वास करता हूं? तूने क्या समझा है कि इस तरह बाते बनाकर तू मेरे हाथसे बच जायगा? कहीं इस ख्यालमे न रहना।

मन्मथ—तुम्हे और कैसे विश्वास दिलाऊँ?

नीरद—तेरी बातपर कभी विश्वास नहीं करूंगा—सच होनेपर भी नही करूंगा। सुन, बहुत दिनोकी कसर निकालनी है, इसीसे आज आया हूं। क्या तूने बार बार मेरे मुँहका कौर नही छीना है? चाचाको जब खनके मामलेमे फँसाया तूने ही उनको बचाया। फिर जब उन्हें लाख रुपयेके फेरमें डाला तूने फूलीसे नोट जलवाकर उन्हे बचाया। फूलीको कही तुझसे छीन न लूं इसलिये तूने षड्यन्त्र रचकर मुझे कालेपानी भिजवानेका बन्दो-बस्त किया है। भूखे शेरके मुँहसे उसका शिकार छीनकर

तूने समझा था कि उसे पिञ्जरेमे बन्द कर देगा। आज तू मेरे हाथसे नही बच सकता। तूने क्या समझ रखा है कि तू तो फूलीके साथ रासलीला करेगा और मै कालेपानीमे बैठा उसकी मूर्त्ति का ध्यान करूंगा? उसके पहले ही मै तेरा खून करूंगा।

मन्मथ—खून करोगे? यह तो तुम परम मित्रका ही काम करोगे। मैने तुम्हारा सत्यानाश तो किया, पर, अब भी कहता हूं, अपने स्वार्थके लिये नहीं। मामला खड़ा होनेके पहले अगर तुम मेरी सुनते, मामला निपटा लेते तो न तो तुम्हें ही हवालात जाना पड़ता और न मुझे ही पश्चात्तापकी आगसे जलना पड़ता। नीरद भैया, मैने अपराध किया है, मुझे क्षमा करो। जो दण्ड देना चाहो दो, मै सहनेको तैयार हूं। अब बस मृत्यु ही मेरे लिये शान्ति है।

नीरद—फूली! फूली! अब मै तेरे प्यारे मन्मथ बाबूको जीता नहीं छोड़नेका। अगर तू यहां रहती तो देखती कि किस तरह मै उसका खून करता हूं।

(खून करनेको नीरदका बढ़ना और फूलीका उसका हाथ पकड़ना)

फूली—लो, फूली आ गयी! फूलीके दममे दम रहते तुम मन्मथ बाबूका बाल बाँका भी नहीं कर सकते।

नीरद—फूली, हट जा, मुझे बाधा मत दे।

फूली—आज दो दिनसे मै तुम्हारा पीछा कर रही हूं। तुम्हारी

आँखोंने तुम्हारे मनकी बात बता दी । मेरे रहते तुम्हारे मनकी पूरी नहीं होनेकी ।

नीरद—तो ले तू ही मर !

(फूलीको छूरा मारना और फूलीका गिरना)

मन्मथ—नीरद भैया, तुमने यह क्या किया ? तुमने जो दण्ड मुझे दिया है उसके आगे प्राणदण्ड कुछ भी नहीं है । फूली, मेरी प्राणरक्षाके लिये तूने अपना अनमोल जीवन दे दिया ! अहा ! कैसी दिव्य कुसुमकली थी ! नीरद भैया, तुम खड़े क्यों हो ? मेरी भी हत्या करो, बड़ी कृपा होगी । आत्मघात करना महा पाप है । नीरद भैया, मेरी हत्या करो—जीवनमें एक अच्छा काम भी करो । मेरा खून करोगे तो बड़ा पुण्य होगा । मार डालो—मार डालो—खड़े क्यों हो ?

नीरद—नहीं, अब मैं तुझे जानसे नहीं मारूँगा । तुझे मैंने जो सजा दी वही तेरे लिये ठीक है । अब जिन्दगी भर जला कर ।

मन्मथ—नीरद भैया, सुनो, यहाँसे भागो—जल्दी भागो । उस कमरेमें कपड़े हैं, इस खून लगे कुरतेको उतार कर भागो ।

नीरद—तेरा उद्देश चाहे जो हो, अभी मैं तेरी ही मानूँगा ।

(नीरदका कमरेकी ओर शीघ्रतासे प्रस्थान)

मन्मथ (नैपथ्यकी ओर) माली—माली, ज़ल्दी पुलिसको खबर दे—खून हो गया है । आहा ! आँखें अभी तक वैसे ही हैं ।—मानो महाध्यानमें मग्न है ! दूसरेके लिये आत्म-

त्याग! मुझे अच्छी शिक्षा दे गयी। मैंने तो इसे केवल उपदेश ही दिया था पर यह मुझे करके दिखा गयी!

(इन्सपेक्टर, जमादार और कानस्टेबलोंका प्रवेश)

इन्स—यह क्या?—किसने यह काम किया?

मन्मथ—मैंने।

इन्स—आपने फूलीकी हत्या की?

मन्मथ—हाँ।

इन्स—मन्मथ बाबू, यह क्या सम्भव है?

मन्मथ—सब सम्भव है। मेरा कहा नहीं मानती थी, इसीसे क्रोधमें आकर मैंने इसे मार डाला।

इन्स—यह क्या! यह तो हिल रही है—आँखे खोल रही है!

मन्मथ—फूली—फूली! ओह! मूर्च्छा आ गयी थी—समझ न सका था। दवा देता हूं—शायद लग जाय। (प्रस्थान)

(नकुलानन्द अवधूतका प्रवेश)

अव—आज बाबाका ब्याह है, अपने बगीचेसे नागेश्वरके दो चार फूल तो तोड़ कर दो। (फूलीको देखकर) अरे, यह यहाँ पड़ी है! इसने गुलाल मला है, शायद बाबाका ब्याह देखने जायगी! अरे यह तो सचमुच ही जायगी। वह देखो सब झमझम करती आ रही हैं!

फूली (चेत होने पर)—बाबा!

अव—अब चाहे बाबा कह चाहे बेटा—आज बेटी, तुझे कुछ न कहूंगा।

(दवा लेकर मन्मथका प्रवेश)

मन्मथ—फूली, दवा पी ले ।

फूली—मन्मथ बाबू, अब दवा न पीऊँगी, गंगा जल दो ।

अब—ले बेटी, बाबाका चरणामृत पी, मेरे कमण्डलुमे है ।

(कमंडलुसे चरणामृत देना)

फूली—मन्मथ बाबू, मुझे जरा उठाओ, गंगाजीके दर्शन करूँगी ।

अव—आज तो दर्शन करेगी ही !

(गंगाजीकी ओर मुँहकर लिटाना)

आज गंगाजी तुझे गोदमे लेंगी न ! आज मारे आनन्दके फूली नहीं समाती ! वह देख बेटी, तुझे लिवा ले जानेको आकाशसे सब उतरी आ रही हैं !

इन्स—लड़की, तुमसे एक बात पूछता हूं, सच सच कहना गंगाजी सामने हैं । तुम्हें छुरा किसने मारा ?

फूली—नीरद बाबूने ।

इन्स—अवधूत सुना ?—कहती है—नीरद बाबूने । (जमादारसे) जमादार, नीरद बाबूको पहचानते हो । घाट घाट, स्टेशन स्टेशनपर आदमी तैनात कर दो—अभियुक्त भागने न पावे, नहीं तो तुम जवावदेह होगे । किरायेकी गाड़ी कर लो झटपट बन्दोबस्त करो ।

(जमादारका प्रस्थान)

साफ कपड़े पहन झटपट नीरद बाबू मेरे पास पहुंचे और यह कहकर चलते बने कि "नर्सरीमे खून हो गया है ।"

तुममेसे एक आदमी इस मकानकी तलाशी लो और दो आदमी यहाँ पहरेपर रहो। मैं झटसे मैजिस्ट्रेटका हुक्म लिये आता हूं।

मन्मथ—(पास जाकर) इन्सपेक्टर साहब, ऐसा कीजिये जिसमें अंत्येष्टिक्रियामें विघ्न न हो।

इन्स—आप इसे गङ्गा किनारे ले जाकर रखिये, मै अभी आता हूं।

(प्रस्थान)

अब—अरी वह देख—तुझे लेनेके लिये विमान आ पहुचा। जा बेटी,—जाकर हरगौरीका मिलन देख। अप्सरा थी, जब बाबाके मन्दिरमे जाती नूपुरध्वनिसे मन्दिर गूंजा देती। शाप भ्रष्ट होकर वेश्याके घर जन्मी थी। इसकी मा हरिकीर्त्तन करती थी! यह जब बाबाके सामने रोती हुई गाती तब देखता कि बाबाका शरीर तर हो जाता। इसके गये विना क्या हरगौरी-मिलन हो सकता है! ले बेटी, ये फूल ले जा, इनसे गौरीशङ्करका सिंगार कीजियो।

(फूलीकी देहपर फूल बिखराना)

हरिनाम कीर्त्तन कर तेरी माने तुझसी लड़की पायी थी। हरिनाम सुन—(फूल बिखराते हुऐ) हरे कृष्ण! हरे कृष्ण!! हरे कृष्ण!!!

फूली—आत्मत्याग! मन्मथ बाबू, क्या मैं समझ सकी? (मृत्यु)

मन्मथ—फूली!

अब—चल—चल—गङ्गा मैया अधीर हो गयी हैं, चल तुझे उसकी

गोदमें डाल दूं। व्यर्थ भटक रहा था—तूने आज मेरी आँखें खोल दीं।

(फूलीको लेकर सबका प्रस्थान)

छठा दृश्य

उपेन्द्रके मकानका कमरा

विरजा, निताई और वैद्यनाथ

निताई—भाभी, शिवू वकीलपर मामला चलानेसे कोई कुछ कहेगा कोई कुछ! चर्चा होगी।

विरजा—तो क्या शिवूको क्षमा कर दूं? उसने कुलवधूका अपमान किया है।

निताई—वह क्या कहने आया है सुन लो, फिर जो कहोगी, करूंगा। (वैद्यनाथसे) वैद्यनाथ, शिवूको ले आओ।

(वैद्यनाथका प्रस्थान)

(शिवूको लेकर वैद्यनाथका पुनः प्रवेश)

(विरजाका ओटमें होना)

शिवू, भाभीजी दरवाजेके पास खड़ी है, जो कहना चाहते हो, कहो।

शिवू—माँजी, मुझे क्षमा कीजिये। मैं आप हो अपनी सजा करता

हूं। नालिश फरयाद क्या कीजियेगा। वैद्यनाथ बाबू हैण्डनोट मुझे दीजिये। माँजी, शैलेन बाबूके मामलेका खर्च मैने अपनी गांठसे किया। उसके लिये उन्होंने हैण्डनोट लिख दिये थे। अभी आपके सामने उन्हें फाड़ डालता हूं। (हैण्डनोटोंका फाड़ना) आपके बाद आपकी जायदादका जो आधा हिस्सा उन्हें मिलता वह उन्होने मेरे नाम लिख दिया था। मै उसे वापिस किये देता हूं, यह लीजिये उसको लिखापढ़ी। (कागजका देना) मांजी, अब मै कलकत्ते न रहूंगा, किसी दूसरे शहरमे जाकर वकालत करूंगा। दयाकर मुझे छोड़ दीजिये।

विरजा—निताई बाबू, तुम इन्हे क्षमा करनेको कह रहे थे न?

निताई—नही शिवूको किसी तरह क्षमा न की जायगी।

विरजा—नही निताई बाबू। (वैद्यनाथसे) तुम क्या कहते हो? शरणागतको दुःख देनेसे पाप होगा। राधावल्लभजी गुस्से होंगे। मेरे ससुरके यहाँसे कोई निराश होकर नहीं गया। तुम इनका असली पावना चुका दो।

निताई—शिवू, कल तुम मिलना।

शिवू—इस देवीको मैंने कड़ी बात कही थी! ।प्रस्थान

वैद्य—भाभी, उपेन कैसे हैं?

विरजा—क्या बताऊँ भाई, कैसे है—वे कुछके कुछ हो गये है! पागलसे हो गये है;—कभी अपनेको मरा समझ लेते है—कभी कुछ होशमें आ जाते है। कागजका एक टोप

हाथमें लिये घूमा करते है। न जाने भगवानके मनमें क्या है? उनका अब कुछ भरोसा नहीं है।

(उपेन्द्रका प्रवेश)

उपेन्द्र—तुम लोग कौन हो—भागो—भागो। मा बेटा फिर कोई मनसूबा बाँध रहे हैं। जब दोनोंमे कानाफूसी होती तभी आग धधक उठती है। बँटवारेका मामला होनेके पहले भी इसी तरह दोनोंमें कानाफूसी होती थी। पागल बताकर उपेनके बेड़ी डालनेके पहले भी इसी तरह कानाफूसी हुई थी। उपेन मर गया, इससे बच गया। कलसे फिर कानाफूसी हो रही है।

विरजा—बात तो ठीक ही है, पागलकी सी नही है। कल रातको नीरद घबराया हुआ आया। तबसे ही दोनोंमे बातें हो रही हैं। न जाने इतनी क्या बात है। जबसे वह हवालातसे लौटा है न किसीसे मिलताजुलता है न बोलता चालता है। सांझ होनेपर घरसे निकलता है न जाने कहाँ जाता है?

उपेन्द्र—भागो—भागो। वह कह रही है कि "नरवलि लूंगी—नरवलि लूंगी।" पूत कह रहा है—"दूंगा—दूंगा!" उपेन मर गया इससे बच गया। नहीं तो उसे पकड़ कर ही वलि देता।

निताई—उपेन, मरा मरा क्यों कह रहे हो? तुम तो मजेमें हमलोगोंके सामने खड़े हो। मुझे पहचानते नही? वताओ, मैं कौन हूं?

उपेन —तुम्हें पहचानता हूं—तुम निताई वकील हो। यह वैद्यनाथ है, यह उसकी बड़ी भाभी है !

निताई—तुम जो कहते हो—उपेन मर गया ?

उपेन्द्र—मर गया—मर गया—उपेन मर गया।

(शैलेनका प्रवेश)

शैलेन्द्र—जरा आँख लगी, त्योंही आप चले आये ? चलिये, मैं पंखा झलता हूँ, आप जरा सोइये। निताई भैया, मँझले भैयाने कागजका एक टोप बनाया है जैसा स्कूलमें लड़के पहरा देते हैं, उसे कभी कभी पहर लेते हैं। कहते है—मामला लड़कर मैंने यह इनाम पाया है। भाभी, क्या यह सब दिखानेको ही तुम मुझे घर लायी ? तुमने तो कहा था कि तुझे देखनेको तेरे भैया जीते है। मँझले भैया, मुझे पहचानते है ?

उपेन्द्र—पहचान लिया—पहचान लिया, तू शैलेन है। तूने ही लाठीसे उपेनको मार डाला था। चुड़ैलके बुलानेपर तू चला था, वह मेरा गला धर दबावेगी, इसलिये उपेन तुझे छोड़ना नहीं चाहता था पर तू उपेनको लाठी मारकर चलता बना। उपेन्द्र मर गया।

शैलेन्द्र—भैया, सचमुच ही उस समय मेरे पीछे चुड़ैल लगी थी। मेरी समझपर पत्थर पड़े थे—क्षमा कीजिये। मुझे भरपूर शिक्षा मिली।

उपेन्द्र—सचमुच ?

शैलेन्द्र—भैया, देना चुकाते चुकाते टॉटके बाल उड़ गये। बेईमान जालसाज कहलाया, लम्पटने स्त्रीका अपमान किया, इतनेपर भी शिक्षा नहीं मिलती?

उपेन्द्र—सचमुच?—यहाँ तक नौबत पहुंच गयी! लम्पटने तेरी स्त्रीका अपमान किया?—खूब हुआ—अच्छा हुआ। क्या कहा—लम्पटने तेरी स्त्रीका अपमान किया? तब तो तुझे खूब शिक्षा मिली!. जो हुआ अच्छा हुआ। तेरा भाई उपेन जीता रहता तो यहाँ तक नौबत न पहुंचती। पर तूने तो उसे लाठीसे मार ही डाला! अब रोनेसे क्या होगा? रो—रो; रोनेसे जीकी जलन मिटेगी। मेरी आँखोंमे आँसू नहीं है—सब सूख गये, इसीसे सारा शरीर जल रहा है।

शैलेन—निताई, मैं कैसा कुलांगार हुआ, युधिष्ठिरके समान भाई मेरे लिये पागल हो गये!

उपेन्द्र—चुप—भाईके लिये रो मत। अभी माबेटा पैरमें बेड़ी डालकर तुझे जेल भेज देंगे! उपेनको भेज रहे थे, वह मर गया, इसीलिये बच गया।

वैद्य—उपेन, तुम तो मरे नहीं, यह तो खड़े हो।

उपेन्द्र—नहीं नहीं—मर गया—मर गया—तुम लोग जानते नहीं हो। उसके सपूतने धूमधामसे श्राद्ध किया था। बापका इकलौता लड़का, धूमधामसे श्राद्ध न करता? बड़े घरानेका लड़का, बृषोत्सर्ग न करता? खूब धूमधाम हुई थी—

बड़े बड़े वकील बैरिस्टरोंका जमाव हुआ था—आइन कानूनकी बहस हुई। उसने दिल खोलकर काम किया। थाली, लोटा, गिलास, खाट, बिछावन, गाड़ी, घोड़ा, बागबगीचा, मकान सब दान कर दिया। भूमिदान करनेसे बड़ा पुण्य होता है, इससे तालुका तक दान कर डाला। सोना चांदी, अशर्फी रुपये दोनों हाथों उलीचे गये। इसके बाद भोज—केवल 'दीयतां भुज्यतां'—'दीयतां भुज्यतां"—अदालतके चपरासी तक खाली नहीं गये।

वैद्य—उपेन, श्राद्ध हुआ कहाँ ?

उपेन्द्र—क्यों हाइकोर्टमें। श्राद्ध करता नहीं—बापको स्वर्ग नहीं भेजना ? बापके नाम अन्नवस्त्र दान किया, उसके साथ ही यह मुकुट दिया। बाप ठहरा, देता नहीं ? यह देख—(कागजका टोप पहर कर) क्यों, कैसा मालूम होता हूं ?

विरजा—तुम्हारी यह दशा आँखो देखनी पड़ी !

उपेन्द्र—जीते रहनेसे बहुत कुछ देखना पड़ता है, इसीसे उपेन मर गया। नहीं तो उसे भाईको राहका भिखारी देखना पड़ता, लम्पटके हाथों कुलवधुका अपमान देखना पड़ता, लड़केको जालसाजी करते देखना पड़ता, इसीसे उपेन मर गया।

(मन्मथका प्रवेश)

मन्मथ—बड़ी माँ, फूली फूलकी तरह सूख गयी ?

सब—ऐं क्या हुआ !

मन्मथ—उसका खून हुआ।

सब—किसने खून किया ?—किसने खून किया ?

मन्मथ—माँ, छुरी तो मारी नीरद भैयाने, पर खून किया मैंने। मेरी ही नीच चालसे जाली मुकद्दमा रचा गया। उसके कारण नीरद भैया आग हो रहे थे, उसी आगमे फूली भस्म हो गयी।

उपेन्द्र—घरकी लक्ष्मीका अपमान! नारीहत्या! जीते रहनेसे बहुत कुछ देखना पड़ता है।

मन्मथ—माँ, मुझे अब विदा करो। मनुष्य समाजमे मै रहने योग्य नही हू। मैंने महापाप किया है, उसका प्रायश्चित्त नही है। सुना है, भगवान करुणामय है, उनके चरणोकी शरण लूगा—शायद शान्ति मिले।

विरजा—मन्मथ, सुन, तेरा मन साफ है। तूने भूल की थी कि बुरे उपायोका सहारा लिया था। बुरे उपायसे चाहो कि भला हो सो नहीं होता। भगवान मन देखते हैं—तुझे क्षमा करेंगे। तू अपना काम करते जा उसीमें तुझे शान्ति मिलेगी।

(नीरद, उसके पीछे तरङ्गिणी, उसके पीछे इन्सपेक्टर, जमादार, कानस्टेबलों आदिका प्रवेश।)

-अजी, बचाओ—बचाओ—पुलिस मेरे नीरदको पकड़ने आयी है।

इन्स—In name of the King, I arrest you for murder(बादशाहके नामपर मै तुम्हे खूनके लिये गिरफ्तार करता हूं) ।

नीरद—झूठ—बिलकुल झूंठ—प्रमाण क्या है? किसके हुक्मसे अन्दर घुस आये ?

इन्स—नीरद बाबू, बिना हर्वेहथियारके मैं शेरकी मांदमें नहीं घुसा हूं। यह देखिये—मैजिस्ट्रेटका वारंट ।

विरजा—अजी उन्हें देखो—उन्हे देखो ।

वैद्य और निताई—उपेन, उपेन—

उपेन्द्र—बहुत कुछ देखना पड़ता है—बहुत कुछ देखना पडता है। निष्कलंक कुलमे कुलस्त्रीका अपमान, जाल, नारी—हत्या, घरके अन्दर पुलिस, हाथमें हथकड़ी ! बहुत कुछ देखना पड़ता है। और भी देखनेका शौक है? अब क्यो? पूरा हो गया—अब क्यो? हृदय क्या पत्थरसे भी कठोर है! ओह! ओह! (गिरना)

सब—अनर्थ हो गया—अनर्थ हो गया—

विरजा—अजी, मुझे किसके भरोसे छोडे जा रहे हो। मन्मथ, तूने एक बार इन्हें बचाया था, इसबार भी बचा ले।

मन्मथ—(परीक्षाकर) ओह! कैसी दुःसह चिन्ता! रक्तनाली फट गयी, नाकसे खून बह रहा है, अब आशा नहीं है।

तर—क्या हुआ—एक साथही पति पुत्र दोनोको गँवाया! (गिरना

सब—हाय यह क्या हुआ—यह क्या हुआ !

वैद्य—उपेन, हमे छोड़कर चले गये। भाई मेरे—

विरजा—पुकारो मत—पुकारो मत, बहुत जले, अब जरा आरामसे सोने दो। जो होना था सो हुआ। निताई बाबू, तुम्हारे ये मित्र थे, अब मित्रका जो काम है वह करो। शैलेन, उठ, इस वंशकी मर्यादा अब तेरे हाथ है। मँझली बहू, उठ, जो होना था सो हो चुका, अब तो बहन कोई उपाय नही है। निताई बाबू, नीरद इस वंशका एकही लड़का है जिसमे उसे फांसी न हो ऐसी चेष्टा करो—पुरखोंको पानी मिलता रहेगा।

निताई—भाभी धन्य हो तुम, धन्य है तुम्हारा धीरज ! गृहस्थीमें कैसे रहना होता है यह तुमने सिखाया ! तुम्हारे समान स्त्री ही कुललक्ष्मी—आदर्श गृहिणी होती हैं। समाजके कल्याणके लिये तुम भारतके घर घर विराजो।

यवनिका